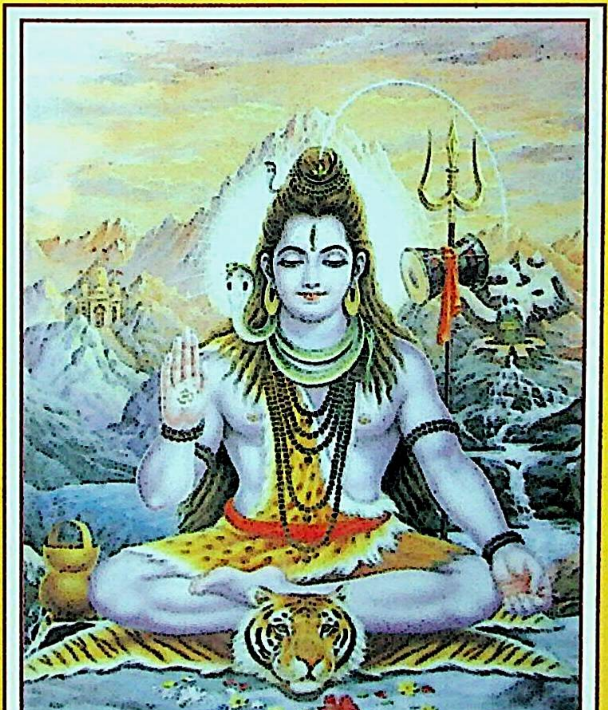
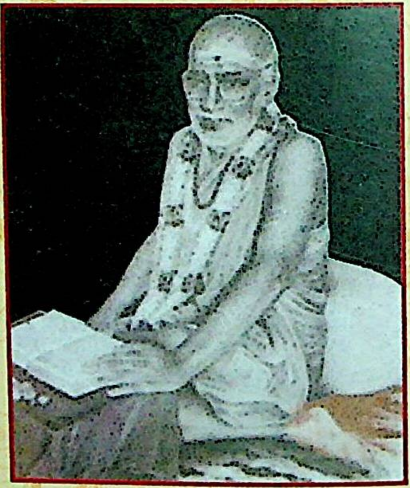
काशी की

वृहद चौरासी कोस परिक्रमा

दर्शन-पूजन, पैदल यात्रा



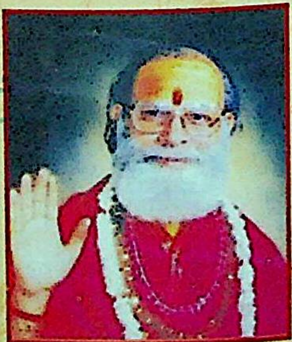
काशी विश्वनाथ जी



अनन्त श्री विभूषित धर्मसम्राट श्री स्वामी करपात्री जी महाराज



दण्डीस्वामी
श्री शिवानन्द सरस्वती जी



भागवत्भूषण
पूज्य स्वामी दीन दयालु जी महाराज

काशी की
वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा
दर्शन-पूजन, पैदल यात्रा

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती

अनुसंधानकर्त्ता

अभिनव ब्रह्मनिष्ठ ज्ञानयोगी सिद्धसन्त अनन्तश्रीविभूषित
धर्मसम्राट् दण्डी-स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के
कृपापात्र शिष्य ब्रह्मनिष्ठ काशीस्थ कर्मयोगी जीवन मुक्त सन्त
अनन्तश्रीविभूषित दण्डी स्वामी
शिवानन्द सरस्वती
काशी के तीर्थ, मठ, मंदिर, अन्न क्षेत्र के अध्यक्ष तथा
काशी प्रदक्षिणा, दर्शन यात्रा-समिति के संस्थापक
एवं जनकल्याण समिति के अध्यक्ष
धर्मसंघ दुर्गाकुण्ड, वाराणसी

(यह पुस्तक काशी की वृहद् चौरासी-कोस के मन्दिरों
की और यात्राओं की कुञ्जी है)

□ दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी की ३१वीं पुस्तक की ग्रंथमाला काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा, दर्शन-पूजन, पैदल यात्रा।

□ काशी-साहित्य-लेखक व अनुसंधानकर्त्ता एवं प्रकाशक :
दण्डी स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती

□ सहायतार्थ : ५० रुपये

□ प्रथम आवृत्ति १००० प्रतियाँ

□ प्रकाशक :
काशी प्रदक्षिणा दर्शन जनकल्याण-समिति

□ अक्षर संयोजन :
डिजाइन प्वाइंट
वाराणसी

□ मुद्रक :
काबरा ऑफसेट
रवीन्द्रपुरी, वाराणसी

शुभाशंसनम्

पूज्यपूज्यानां सनातनधर्मसंरक्षणबद्ध परिकराणां वर्णाश्रममर्यादा-व्यवस्थापकानां उत्तराम्नायज्योतिष्पीठाधीश्वराणाम् अथ च पश्चिमाम्नाय-द्वारकाशारदापीठाधीश्वराणाम् जगद्गुरुशङ्कराचार्याणाम् अनन्तश्रीमतां श्रीस्वरूपानन्दसरस्वती स्वामिपादानां शुभाशंसनम्–

अनन्तश्रीविभूषितानां ब्रह्मीभूतानां स्वामिश्रीशिवानन्दमहाभागः 'काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा, दर्शन-पूजन, पैदलयात्रा' इति पुस्तंकं विरचितवान्। पुस्तकं-विलोक्य मोमत्ति मे चेतः। सहजभाषायाम् एतादृश विषयेषु पुस्तकलेखनं सनातनधर्मप्रचाराय ब्रह्मलीन स्वामिनां आत्मनः प्रियाय चातीवावश्यकम्। बहुकालतः एतादृश ग्रन्थानामावश्यकता आसीदेव सातु श्रीशिवानन्दस्वामिभिः पूरिता। श्रीस्वामिनः पुस्तकमिदम् सामान्यजनानां कृतेऽपि उपकारकं, शास्त्रान्वितं, सत्य-सनातन-धर्मपथ-प्रदर्शकं विद्यते इत्यत्रशंकायाः नास्ति लेशोऽपि पुस्तकेऽस्मिन् विषयाणां प्रतिपादनं तर्केण बुद्धिप्रागल्भ्येन च कृतमस्ति।

अस्यायासस्य कृते श्री स्वामिवर्याः सर्वथा धन्यवादार्हाः। प्रयासेनानेन ज्ञानं मुक्तिश्च कामयन्तोजनाः बहुतोषमनुभविष्यन्तीति बहुमानं कामये।

–स्वामी स्वरूपानन्दः सरस्वती

कार्यालय आयुक्त

वाराणसी मण्डल, वाराणसी

एस.टी. - आयुक्त 2007 दिनांक 19.06.2007

शुभकामना संदेश

काशी क्षेत्र के प्राचीनतम महात्म्य के विभिन्न क्षेत्रों के पड़ाव आदि को मिलाकर ८४ कोस परिक्रमा का अपना ऐतिहासिक महत्व है। इस सम्बन्ध में स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी द्वारा कई वर्षों से अनुसंधान किया गया, जिसका आधार क्षेत्रीय ग्रन्थों, अभिलेखों एवं मार्ग में पड़ने वाले उल्लिखित प्राचीन मंदिरों के सम्बन्ध में खोज करके विलुप्त हो चुके ८४ कोस की यात्रा के पुनः प्रारम्भ करने का अवसर समस्त श्रद्धालुओं को मिल सकेगा। इस प्रयास एवं यात्रा की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएँ साथ हैं।

धन्यवाद!

(नितिन रमेश गोकर्ण)
आयुक्त
वाराणसी मण्डल, वाराणसी

ऊर्ध्वाम्नाय श्रीकाशीसुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य यति सम्राट
अनन्त श्रीविभूषित स्वामीनरेन्द्रानन्द सरस्वतीजी महाराज
बी. 1/128-ए-2, डुमराँव बाग कालोनी, अस्सी, वाराणसी (उ.प्र.)

शुभाशंषा

धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के कृपापात्र शिष्य स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज ने जीव की चौरासी लाख योनियों में परिभ्रमण की दुर्दशा से मुक्ति के लिए शास्त्रोक्त विधि से वेद, पुराणादि प्रमाणानुसार वर्तमान काल में एक सरल उपाय 'काशी की चौरासी कोस परिक्रमा-दर्शन-पूजन यात्रा नामक ग्रन्थ के माध्यम से प्रस्तुत कर एक सराहनीय प्रयास किया है, जो जिज्ञासु भक्त जनों एवं साधु-सन्तों, सद्गृहस्थों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। शास्त्रों ने काशी महात्म्य के विषय में यहाँ तक लिखा है कि काशी क्षेत्र में भगवान विश्वनाथ (शिव) और माता अन्नपूर्णा का स्मरण करते हुए प्रवेश करने वाले को भगवान शिव मोक्ष और भगवती अन्नपूर्णा अन्न (प्राण-शक्ति) प्रदान करने के लिए कृत संकल्प हैं। सर्वसुख, सम्पदा, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की अभिलाषा युक्त आज के मानव के लिए काशी की परिक्रमा यात्रा से सरल उपाय अन्य कोई नहीं है शास्त्र प्रमाण है कि काशी की चौरासी कोस की परिक्रमा दर्शन पूजन कर भक्त चौरासी लाख योनियों में भटकने से मुक्ति प्राप्त कर शिव का सायुज्य प्राप्त कर लेता है।

दण्डी स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती जी ने वर्षों के सत्प्रयास के बाद लुप्तप्राय 'चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग को सरल बना दिया है। इस ग्रंथ के माध्यम से आज सबके लिए यह यात्रा सुलभ बन गई है। शर्त इतनी है कि व्यक्ति में श्रद्धा और विश्वास का भाव प्रबल हो।

भगवान भूतभावन बाबा विश्वनाथ जी, भगवती पराम्बा अन्नपूर्णा जी तथा काशी के कोतवाल बाबा कालभैरव स्वामी जी को शक्ति और सामर्थ्यावान बनाए रखें ताकि भविष्य में अन्य शोधपरक आध्यात्मिक एवं धार्मिक ग्रन्थों के द्वारा धर्म एवं समाज का कल्याण करते रहें।

ग्रन्थ की लोकप्रियता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ–

अंत में नारायण स्मृतिः

(जगद्गुरुशंकराचार्य श्री स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती महाराज)

श्री काशी सुमेरूपीठाधीश्वर काशीपुरी।

प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

दिनांक २९-१२-२०१०

शुभाशंषा

अनन्तश्रीविभूषित धर्मसम्राट प्रातःस्मरणीय श्री करपात्री जी महाराज के कृपा-पात्र शिष्य **अनन्तश्रीविभूषित दण्डी स्वामी श्रीशिवानन्द जी द्वारा प्रस्तुत काशी की वृहद चौरासी कोस परिक्रमायात्रा** नामक ग्रन्थ के अवलोकन से स्पष्ट है कि यह पुस्तक चौरासी कोस के मन्दिरों और यात्राओं का यह वृहद दर्पण है। चौरासी कोस परिक्रमा में दर्शन-पूजन, पैदल यात्रा का अतिमहत्व है। वस्तुतः काशी प्राचीन काल से ही भारत की धर्म, संस्कृति एवं शिक्षा की लब्धप्रतिष्ठ नगरी है और संस्कृत वाङ्मय के विद्वान मनीषियों की यह महत्वपूर्ण अध्ययन-अध्यापन की स्थली है। ऋषि मुनियों एवं साधकों की पवित्र-स्थली होने के कारण यहाँ का महत्व आध्यात्मिक रूप से प्रतिस्थापित है। बाबा विश्वनाथ एवं माँ गंगा की पवित्र-स्थली होने के कारण काशी की परिक्रमा का विशेष विधान है।

आदरणीय स्वामी जी का धर्मप्राण जनता पर यह कृपा ही है कि उन्होंने अत्यन्त स्नेह से वशीभूत होकर **काशी की वृहद चौरासी कोस परिक्रमा** के महत्व एवं इसके शास्त्रीय पक्षों पर प्रकाश डाला है। जनसामान्य एवं धर्मनिष्ठ मनुष्य इसका अध्ययन-मनन कर अपने जीवन को सार्थक करेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

बाबा विश्वनाथ एवं माँ अन्नपूर्णा से कामना है कि हिन्दी टीका में प्रकाशित इस ग्रंथ का सफल एवं यशस्वी प्रकाशन हो, साथ ही धर्मप्राण जनता को दिये गये इस कृपा दान के लिए श्रद्धेय स्वामी जी के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

25.12.10.

(प्रो0 वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री)
कुलपति

सम्मति पत्रम्

अयं "काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा, दर्शन-पूजन, यात्रा" ग्रन्थो मयावलोकितः।

शास्त्रानुकूलं सामान्यजनहितार्थं कृतः ग्रन्थोऽयम् सर्वेभ्यः मार्गदर्शकः भविष्यति इति मे मतम्।

आचार्य राधेश्याम पाठकः
अपर मुख्य कार्यपालक आधिकारी
श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर, वाराणसी

दण्डी स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा अन्वेषित चौरासीकोस परिक्रमा यात्रा ग्रन्थ का अवलोकन किया गया। परिक्रमा-पथानुगामीजनों के लिए यह ग्रन्थ गुरु ग्रन्थ है। श्रुति अनुगामिनी स्मृतियों व पुराणों से प्रमाणित यह परिक्रमा ग्रन्थ विद्वद्जनों के लिए श्रेष्ठकर हो तथा इसका अध्ययन कर जन-सामान्य शास्त्रीय परम्परानुकूल परिक्रमा पथ के अनुगामी बनें।

विद्वच्चरण-चञ्चरीकः
पं० राधेश्याम पाठकः
प्रयागराज
सम्प्रति अपर मुख्य का.पा. अधिकारी
श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर, वाराणसी

सम्मति पत्रम्

नवसंवत्सर : चैत्र शुक्ला १ सं. २०६७ : १६ मार्च २०१०

जहाँ प्रकाशपुंज का सीमांकन बहुस्तरीय परिक्षेत्रों के स्तरीय क्रम में प्राचीन मनीषियों द्वारा स्थापित किया गया, वर्तमान स्वामी शिवानन्द सरस्वतीजी द्वारा पुनर्जागृत किया गया। उन्हीं परिक्षेत्रों का बाह्य प्रारूप प्राचीन काल से सतत् चला आ रहा है।

व्यक्तिगत सर्वेक्षण अनुभूतियों तथा पौराणिक-साहित्यिक आधार पर विरचित इस प्रमाणिक पुस्तक को धर्म सम्राट् करपात्री जी महाराज के शिष्य स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी ने पूर्ण कर सभी तीर्थ यात्रियों एवं जिज्ञासु भक्तगणों के कल्याणार्थ जो मानवीय एवं धार्मिक सेवा की है, वह स्तुत्य है। मैंने स्वयं ही व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं सांस्कृतिक मूल्यांकन के परिपेक्ष्य में अंग्रेजी भाषा में पञ्चक्रोशी यात्रा पर पुस्तक लिखी है। परन्तु वह सामान्य भक्तों के लिए अल्प ग्राह्य है।

स्वामी जी द्वारा विरचित यह पुस्तक "काशी की पञ्चक्रोशी परिक्रमा, दर्शन-पूजन, यात्रा" सभी भक्तों एवं सुधीजनों को प्रेरणा देगी तथा तीर्थयात्रा का मार्ग प्रशस्त करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

सहतीर्थयात्रीअनुभवोक्ति सहित

प्रो. राणा पी. सिंह
सांस्कृतिक भूगोल एवं धरोहर विज्ञान के आचार्य
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

शुभकामना संदेश

दिनांक २१ दिसम्बर २०१०

मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा- "काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा दर्शन-पूजन पैदल यात्रा" नामक पुस्तक अनुसंधान करके लिखी गई है। जिस प्रकार नैमिषारण्य की चौरासी कोस की यात्रा होती है, वृन्दावन मंडल की चौरासी कोस यात्रा की जाती है, उसी प्रकार काशी की वृहद चौरासी कोस की परिक्रमा यात्रा भी होती है। धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के शिष्य दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी वर्तमान में अस्सी वर्ष की अवस्था में भी वेद, पुराण और इतिहास से प्रमाण एकत्रित करके यह पुस्तक लिखे हैं। पुस्तक बाजार में उपलब्ध न होने के कारण काशी की चौरासी कोस की परिक्रमा यात्रा शिथिल पड़ गयी थी।

अतः कर्मयोगी जीवनमुक्त सन्त दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी यह पुस्तक लिखकर विश्वराष्ट्र से काशी में आने वाले पर्यटक यात्रियों, काशीवासियों तथा अपने देश के कोने-कोने से काशी में आये श्रद्धालु दर्शनार्थियों के लिए नमन और साधुवाद के पात्र हैं।

चौरासी कोस की परिक्रमा के अन्तर्गत आने वाले रास्ते, मन्दिरों और पड़ावों का जीर्णोद्धार होगा तथा इस रास्ते से सम्बद्ध क्षेत्रों का तथा वहाँ के ग्रामवासियों का आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास होगा।

भवदीय

श्री विश्वनाथ नारायण पालन्दे जी

दण्डी स्वामी शिवानन्द जी का परिचय

भारतवर्ष के सिरमौर तथा उत्तरी शिखर के सजग प्रहरी नगाधिराज हिमालय जैसे सुरम्य वातावरण में स्थित नेपाल, बद्रीनाथ, केदारनाथ तथा वैष्णोदेवी के सन्निधि में लगभग २९ वर्षों तक ब्रह्मगायत्री का पुरश्चरण करके परमपावन, पुनीत, तपस्वी जीवन व्यतीत करने के पश्चात् सन् १९७९ई० में परमपूज्य स्वामी शिवानन्द जी का काशी में आगमन हुआ। काशी में आने के पश्चात् माघ शुक्ल वसंत पञ्चमी के दिन कलियुग धर्म प्रवर्तक शंकरावतार धर्मसम्राट् करपात्री जी महाराज से संन्यास दीक्षा ग्रहण की। तत्पश्चात् आप काशीवासियों को भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, धन, सम्पत्ति सुख-शान्ति, निरोगता इत्यादि की प्राप्ति कराने के उद्देश्य से गुरुजी के आज्ञानुसार सन् १९७९ई० की महाशिवरात्रि के दिन केदारेश्वर के दर्शन करके आज्ञा लेकर केदार घाट से काशी की संपूर्ण यात्रा प्रारम्भ किये थे जो आज २५-१०-२०१० तक (काशी की यात्रा) सुखद चल रही है। स्वामी जी की काशी की पञ्चक्रोशी परिक्रमा, तीनों अंतर्गृही यात्राएँ, द्वादश ज्योतिर्लिंग सप्तपुरी यात्रा, चार धाम यात्रा, छप्पन विनायक यात्रा, द्वादश सूर्य परिक्रमा यात्रा प्रमुख हैं। आज ८० वर्षों की अवस्था में भी स्वामी जी रविवार को भक्तों के साथ स्वयं काशी की विभिन्न यात्राएँ करते और कराते हैं।

एक प्राचीन आख्यान के अनुसार– "परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर।" स्वामीजी के सान्निध्य में रहने वाले अनेक लोग यह स्वीकार करते हैं कि निवेदन की गई अनेक भक्तों की मनोकामना शीघ्र पूर्ण होती है।

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी द्वारा चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का वृत्तान्त

दण्डी स्वामी शिवानन्द जी महाराज इस पर काफी समय से चिन्तन कर रहे थे और इस सत्कार्य में उनके ऊपर विश्वनाथ भगवान की असीम अनुकम्पा हुई है। स्वामी जी को इस चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का अनुसन्धान करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा परन्तु अन्ततः भगवत्साक्षात्कार से इस कार्य में उन्हें मार्गदर्शन मिला।

प्रयास अभी चल ही रहे थे कि नगर मजिस्ट्रेट श्री सुशीलचन्द्र श्रीवास्तव जी को स्वामी जी के विषय में यह जानकारी हुई कि वे काशी की चौरासी कोश यात्रा पर पुस्तक लिख रहे हैं, इससे उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई एवं वे इनके संकल्प को देखकर नतमस्तक हो गये। दिनांक २५-०३-२००६ ई० को काशी की पंचक्रोशी परिक्रमा एवं द्वादश ज्योतिर्लिंग, काशी के महात्म्य और यहाँ के मन्दिरों के विषय में जानने के उद्देश्य से स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी की कुटिया में सायं ८ बजे आप स्वयं उपस्थित हो गये। इन सारे प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं को सुनने के उपरान्त स्वामी जी ने इन्हें उत्तर देकर संतुष्ट किया। स्वामी जी द्वारा रचित एवं प्रकाशित काशी गौरव, काशी महात्म्य, काशी दर्शन आदि पुस्तकें उन्हें भेंट स्वरूप प्रदान कीं। श्रीवास्तव जी ने स्वामी जी को मदद करने का वचन देते हुए अगले ही दिन स्वयं को इस कार्य के साथ जोड़ लिया। अगले दिन सुबह

९ बजे अपनी गाड़ी भेज दी और स्वामी जी को बंगले पर आने का निमंत्रण दिया। स्वामी जी वहाँ पहुँचे, श्रीवास्तव जी ने उन्हें काशी के जिलाधीश नितिन रमेश गोकर्ण जी से मिलाये। आप दोनों लोगों ने स्वामी की हर सम्भव मदद के लिए आश्वासन दिये। विचित्र विडम्बना है कि इस पुण्य कार्य में हाथ लगाते ही थोड़े ही दिनों में इन दोनों महानुभावों की पदोन्नति हो गयी और वे काशी से बाहर चले गये।

स्वामी जी ने निश्चय किया कि चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा के मार्ग के विषय में अपने शारीरिक बल का प्रयोग न करके साधना, आराधना और उपासना के बल प्रयोग किये जाय। इस प्रकार उन्होंने यात्रा की खोज करने के लिए अपने इष्टदेव की आराधना वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया से प्रारम्भ की।

तदनुसार वैशाख शुक्ल दशमी के दिन प्रातः ब्राह्ममुहूर्त्त में संध्या आदि से निवृत्त होकर अपने इष्टदेव जी का ध्यान करने के लिए बैठ गये। उसी समय में श्री इष्टदेवजी बोले, "स्वामी शिवानन्द! वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा की पुस्तक लिखो और परिक्रमा यात्रा का पुनः शुभारम्भ करो।" ऐसा आदेश देकर श्रीइष्टदेव अन्तर्ध्यान हो गए।

समर्पण

हे काशी विश्वनाथ जी! आप तो तीनों लोकों के स्वामी हैं, मैं आपको कुछ समर्पित करना चाहता हूँ किन्तु क्या समर्पित करूँ? आप तो तीनों लोकों के प्राणियों को मोक्ष देने वाले हैं। आप प्राणियों को मनचाहे संसार के सभी भोज्य पदार्थों को देकर सुख और शान्ति प्रदान करते हैं और अन्त में मोक्ष की भिक्षा भी देते हैं।

हे काशी विश्वनाथ जी! मैं यति हूँ। मेरे पास तो केवल मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार है, इसे मैं आपके कमलवत् श्रीचरणों में समर्पित करता हूँ।

हे काशी विश्वनाथ जी! आप तो अनाथों के नाथ हैं। मैं भारतीय सनातन, वैदिक धर्म और काशी की प्राचीन संस्कृति के प्रचार-प्रसारार्थ और काशीवासियों को सुख, संपत्ति, शान्ति तथा भुक्ति-मुक्ति दिलाने के लिए काशी खण्डोक्त "काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा दर्शन-पूजन, यात्रा" नामक पुस्तक आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती

आत्म-निवेदन

मेरे प्यारे काशीवासियों आपके हाथ में काशी की वृहद् चौरासी कोस यात्रा की पुस्तक है। पुस्तक लिखने में प्रेरणास्त्रोत काशी के वृहद् चौरासी कोस की परिक्रमा करके बड़े गुरु एवं शंकर गुरु और मोहन लाल दीक्षित महामृत्युञ्जय मंदिर के महन्त जी आकर बोले कि चौरासी कोस यात्रा का रास्ता जगह-जगह बन्द हो गया है और मन्दिर भी प्रायः लुप्त हो गये हैं। आप चौरासी कोस के मार्ग का मन्दिर, पड़ाव का जीर्णोद्धार कराइए और पुस्तक लिखिए।

मेरी काशी क्षेत्र-संन्यास के संकल्प की २२ वर्ष की अवधि पूरी हो गयी थी। अक्षय तृतीया के दिन काशी क्षेत्र-संन्यास का समापन करके काशी विश्वनाथ जी के दर्शन, पूजन कर चौरासी कोस की पुस्तक लिखने के लिए प्रार्थना करके गुरुजी का ध्यान कर अपने इष्टदेव का आराधना करने लगे। प्रातः ३ बजे स्नान करके पद्मासन में बैठकर इष्टदेव की आराधना कर रहे थे, उसी समय इष्टदेव बोले चौरासी कोस की यात्रा करो और पुस्तक लिखो। इष्टदेव की आज्ञा पाकर बैशाख शुक्ल पक्ष दशमी तिथि के दिन टाटा सूमो गाड़ी लेकर चौरासी कोस का रास्ता और मन्दिर पड़ाव के दर्शन करने के लिए गया। परन्तु नक्शे के आधार पर इस समय सड़क नहीं बनी है। पुराने रास्ते कहीं-कहीं एक किलोमीटर कहीं दो किलोमीटर आगे-पीछे और किसी जगह पर तीन किलोमीटर है। सड़क गाँव-गाँव से घुमाकर बनी है। मन्दिर एवं पड़ाव स्थल जीर्ण हो गये थे। मार्ग के मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया गया। जो मूर्ति लुप्त थे उनको स्थापित किया गया। चौरासी कोस की परिक्रमा अनादि काल से चल रही है और प्रलय

काल तक चलती रहेगी। पुस्तक बाजार में न मिलने के कारण और प्रचार न होने से चौरासी कोस की यात्रा शिथिल हो गयी थी। काशी की चौरासी कोस की परिक्रमा जैसी नैमिषारण्य में चौरासी कोस की यात्रा है वैसे ही काशी की चौरासी कोस की यात्रा है। पुस्तक के माध्यम से जानकारी प्राप्त करने के लिए काशी के तीनों विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय में गये और छोटे पुस्तकालय में एवं पुराने दुकान में चौरासी कोस के मन्दिर एवं पड़ाव का इतिहास मिला। उन्हीं पुस्तकों के आधार पर एवं स्कन्द पुराण, पद्म पुराण और विष्णुपुराण से वर्णित तथ्यों के आधार पर सम्पूर्ण पुस्तक लिखी गयी।

सूचना- चुनार घाट में हरिहरपुर में बरुआँ घाट में पक्का पुल बन रहा है जो ०१.-०२-२०१२ में बनकर तैयार हो जायेगा। उस दिन से काशी की चौरासी कोस की यात्रा बारहों महीना चलने लगेगी। वेद, पुराण एवं काशी के साहित्य से और वर्तमान में छपे हुए पुस्तक से काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का प्रमाण संकलन करके शिवप्रसाद पाण्डेय जी को पाण्डुलिपि प्रूफ जाँचकर शुद्ध करने के लिए दिया गया था। उनकी अकस्मात् गाँव में हार्टफेल से मृत्यु हो गयी एवं पाण्डुलिपि आज तक नहीं मिली। दूसरे संस्करण में जो शेष प्रमाण है वह वेद-पुराण, उपनिषद् आदि से संकलन करके प्रकाशित कराया जायेगा।

०१-०२-२००७ में चौरासी कोश यात्रा, मार्ग, पड़ाव मन्दिर, कुण्ड लिखकर पाँच हजार पर्चा छपवाकर काशी और चौरासी कोस मार्ग के पड़ाव में वितरण करके दीवाल में चिपकाया गया था और ०१-०२-२००८ में एक छोटी चौरासी कोस की पाँच हजार पुस्तक छपवाकर वितरण की गयी थी।

फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रतिवर्ष परिक्रमा यात्रा काशी विश्वनाथ जी आदि के दर्शन करके ज्ञानवापी में संकल्प लेकर के

प्रारम्भ होगी। विगत वर्ष १५ फरवरी २०१० को ज्ञानवापी से प्रातः ८ बजे यात्रा प्रारम्भ हुई। चौरासी कोस की यात्रा करने के लिए जिज्ञासु भक्त शामिल होकर मनोरथ पूर्ण किये। उस समय में यात्रा करने वालों को अनेक चमत्कार हो गये। काशी के चौरासी कोश की परिक्रमा, मार्ग, मन्दिर, पड़ाव आदि का जीर्णोद्धार करने व पुस्तक लिखने में हजारों भगवान के भक्तों ने तन-मन-धन से सहयोग दिये हैं उनका नाम सन् १६-०२-२००९ई० में छपी हुई चौरासी कोस परिक्रमा महात्म्य नामक पुस्तक में प्रकाशित किया गया है।

वर्तमान में स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी परिपूर्णानन्द सरस्वती, सच्चिदानन्द सरस्वती, स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती, धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, दीन दयालु व्यास, शंकर देव चैतन्य ब्रह्मचारी, बटुक देव चैतन्य ब्रह्मचारी, ज्ञानेश्वर चैतन्य ब्रह्मचारी, विश्वेश्वरानन्द ब्रह्मचारी, योगेश्वरानन्द ब्रह्मचारी, शास्त्रार्थ महारथी दिवाकर मिश्र 'शास्त्री', जीतन पाण्डेय, पं० जगदीश मिश्र एवं पवन ब्रह्मचारी आदि चौरासी कोस की परिक्रमा, दर्शन-पूजन यात्रा की सफलता के लिए अपना आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

पुस्तक प्रकाशित करने में, जो तन-मन-धन से सहयोग करना चाहते हैं, उन भक्तों का नाम श्री विश्वनाथ नारायन पालन्दे जी, नन्द किशोर सुलतानिया जी, चम्पालाल सरवरी, कृष्ण कुमार खेमका जी, पेपर स्टोर कर्णघण्टा, लक्ष्मी नरायन अवस्थी जी, आशीष सिंह पत्रकार, आशीष शुक्ला, पवन पाण्डे, इंजीनियर अनिल पाण्डे, रूंगटा जी, उमाशंकर गुप्ता, बलराम मिश्रा, डॉ० ए०के० देव (वरिष्ठ चिकित्सक), अशोक तिवारी (वकील), चन्द्रभूषणधर द्विवेदी (भू०पू० कमिश्नर), मोहनलाल दीक्षित, मदनकिशोर श्रीवास्तव (स०अधिकारी), चण्डी प्रसाद तिवारी, अभय तिवारी शास्त्री एवं श्री अग्रवाल आदि हैं।

डायरेक्टर श्री रेवती रमण पाण्डेय, जगदम्बा पाण्डेय, सुधाकर पाण्डे आदि ने मिलकर चलचित्र बनाने का असफल प्रयास किया है।

काशी की बृहद् चौरासी कोस की परिक्रमा के दौरान मन्दिर, पड़ाव, कुण्ड आदि की व्यवस्था करने में और चौरासी कोस की पुस्तक प्रकाशित करने में हजारों भगवान के भक्तों ने मन, वाणी, शरीर और धन से सहयोग दिये। इस कार्य में विशेष योगदान भू०पू० कमिश्नर नितिन रमेश गोकर्ण व सिटी मजिस्ट्रेट सुशील चन्द्र ने दिये। सब भक्तों के घर और परिवार में सुख-शान्ति एवं समृद्धि प्राप्त हो तथा साथ ही सभी भक्तों को अनन्य भक्ति प्राप्त हो, यही मेरा आशीर्वाद है।

–दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती

वृहद् चौरासी कोस की परिक्रमा यात्रा करने वाले यात्रियों को जो चमत्कार प्राप्त हुआ उनका वर्णन

काशी की वृहद् चौरासी कोस की परिक्रमा करने वाले नर–नारियों के साथ जो चमत्कार हुए उनका कुछ वर्णन किया जा रहा है। जो यात्री निःसन्तान थे, उन्हें पुत्र–रत्न की प्राप्ति हुई, जिनके पुत्र–पुत्रियों की शादी नहीं हो पा रही थी, वह निर्विघ्न सम्पन्न हो गयी। जो छात्र परीक्षा में फेल हो जाते थे या किसी प्रकार उत्तीर्ण होते थे वे छात्र अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुए। जो छात्र बारह दिन की चौरासी कोस की यात्रा को पूरा करके परीक्षा देने गये वे विशेष योग्यता के अंक पा कर उत्तीर्ण हुए। उसी समय आशीष शुक्ल जो मात्र हाईस्कूल उत्तीर्ण थे, वे पत्रकार बने।

चौरासी कोस की परिक्रमा यात्रा के प्रभाव से अनिल पाण्डेय जी को पचासी प्रतिशत अंक प्राप्त हुए। वे भारत सरकार के सहयोग से वित्तीय सहायता प्राप्त कर के दिल्ली में अध्ययन कर रहे हैं। सरकारी अधिकारी लक्ष्मी नारायण अवस्थी जी चौरासी कोस की परिक्रमा यात्रा सम्पन्न किये, उसी समय उनकी पदोन्नति हुई। पुजारी जी जिनको शूगर का मर्ज था, उनको इसी यात्रा से स्वास्थ्य लाभ हुआ। रमेश पाण्डे जी दमा व स्वाँस के रोगी थे। चौरासी कोस की यात्रा का संकल्प करके यात्रा आरम्भ करते ही लाभान्वित हुए। आशीष जिनके ऊपर किसी विपक्षी ने चार–चार मुकदमे कायम किये, उन्होंने चौरासी कोस की यात्रा सम्पन्न की और दो माह के अन्दर सभी मामलों का फैसला उनके पक्ष में हुआ और वे मुकदमों से वरी हो गये। संतोष मिश्रा जिनके लड़के की नौकरी नहीं लग रही थी, ज्ञानवापी से संकल्प लेकर चौरासी कोस की यात्रा करते ही उन्हें रोजगार लाभ हुआ। उमाशंकर गुप्त जी की समस्या थी कि उनका

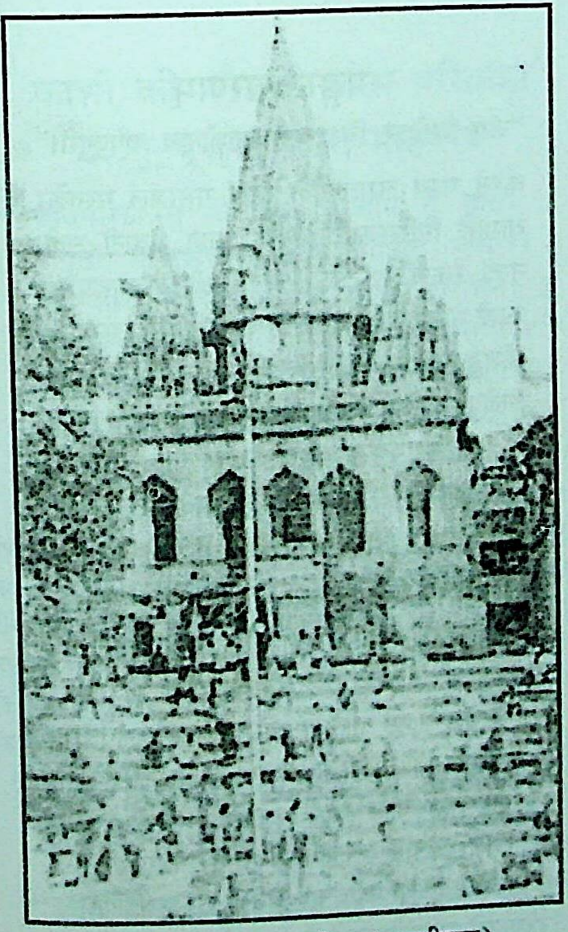
बेटा पढता नहीं तथा स्कूल जाने में भी आलस्य करता था वे इस परिक्रमा यात्रा को पूर्ण किये। विश्वनाथ जी के प्रसाद से उनका पुत्र पढ़ाई में कुशाग्र बुद्धि का हो गया।

मोहन लाल दीक्षित महन्त जी एवं मदन किशोर श्रीवास्तव तथा नन्दलाल इन तीनों के पास लड़कियों के विवाह की समस्या थी, वर्षों से परेशान थे। ये लोग संकल्प लेकर यात्रा करके आये। उसी सत्र में तीनों लोगों की लड़कियों के विवाह सम्पन्न हो गया। नन्दकिशोर सुल्तानियाँ जी का कारखाना ठीक से नहीं चल रहा था, चौरासी कोस की यात्रा में बरणी करके ब्राह्मण को संकल्प दिलाकर चौरासी कोस की यात्रा करने के लिए भेजें। यात्रा के प्रभाव स्वरूप उनका कारखाना अच्छी प्रकार चल पड़ा। सोमारू सरदार की दुकान ठीक ढंग से नहीं चल पा रही थी, संकल्प करके चौरासी कोस की यात्रा करने गये यात्रा पूर्ण होने के पश्चात् उनकी दुकान में भीड़ लगने लगी। रमेश तिवारी जी रोगग्रस्त थे, नाम से संकल्प लेकर प्रतिनिधि ब्राह्मण को चौरासी कोस की यात्रा को भेजा गया। शनैः शनैः यात्रा पूर्ण होते ही रोग में आराम हो गया। ब्राह्मण की यात्रा से तिवारी जी को स्वास्थ्य लाभ हुआ। लक्ष्मी अवस्थी के पेट में फोड़ा हो गया था। डॉक्टर ने उसके आपरेशन के लिए दि. २०.०२.१० को समय दिया था। काशी की चौरासी कोस की यात्रा में जाने के लिए ज्ञानवापी से संकल्प लेकर यात्रियों के साथ चलीं। मणिकर्णिका पहुँचते ही पेट के दर्द में आराम होने लगा और यात्रा पूर्ण करते ही वह रोग समाप्त हो गया।

रामकृष्ण पाण्डेजी को कैन्सर रोग लगा, पाण्डे जी ने ब्राह्मण को चौरासी कोस की यात्रा को ज्ञानवापी से संकल्प लेकर ब्राह्मण को वरण करके चौरासीक्रोशी यात्रा करने के लिए भेजे, यात्रा पूरा होते ही पाण्डेजी को कैन्सर रोग से आराम हो गया।

आशीष सिंह वरिष्ठ पत्रकार को चौरासी कोस की यात्रा संकल्प लेकर परिक्रमा पूरा करते ही पदोन्नति हो गई।

●



असी संगमेश्वर का मन्दिर (अस्सीघाट)

मङ्गालचरणम्

"जय विश्वेशर विश्वात्मन् काशीनाथ जगद्गुरो।"

कण्ठे यस्य लसत्कराल गरलं गङ्गाजलं मस्तके।
वामाङ्गे गिरिराज राजतनया जाया भवानी सती।।
नन्दी-स्कन्दगणाधिराज-सहिता श्री विश्वनाथप्रभुः।
काशी मन्दिरसंस्थतोऽखिलगुरुः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।
श्रीशङ्कराचार्यनवावतारं विद्वद्वरेण्यं च यतिन्द्रिमुख्यं।
कलौयुगे धर्मयुग प्रवर्तकं वन्दे सदा श्रीकरपात्रीणंगुरुम्।।
मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुडध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलाय तनो हरिः।।

काशीदर्शन मात्रेण निष्पापो जायते नरः।

पुण्यभारं पापनाशं कृत्वा विशति काशिकाम्।
एकेन रेणुना काश्याः शुद्धयन्ति मलिनो जनाः।।
भिक्षाणाऽपि यत्र भिक्षुभ्यो दत्तामलक संमिता।
समेरूणाऽपि तुलिता वाराणस्यां गुरूर्भवेत्।।
वर्षाशनं हियो दद्यात् काश्यां सीदत्कुटुम्बिने।
यावन्त्यवदानि तावत्ति युगानि स दिवीज्यते।।
यत्र कुत्रापि वा काश्यां मरणे स महेश्वरः।
जन्तोर्दक्षिणकणे तु मत्तारं समुपादिशेत्।।
रथ्यान्तरे मूत्रपुरीषमध्ये चाण्डालवेश्मन्यथवा श्मशाने।
कृतपयत्नोऽप्रयकृप्रयत्नो, देहावसाने लभतेऽत्र मोक्षम्।।

काशी की चौरासी कोस परिक्रमा दर्शन-पूजन, यात्रा माहात्म्य

जीवन्मुक्तौ तु तौ ज्ञेयौ कुत्रापि वै मृतौ।
प्राप्नुतो मोक्षश्चैव मयोक्तं निश्चितं वचः।।
अत्र तीर्थे विशेषोऽस्त्यविमुक्ताख्ये परोत्तते।
श्रूयतां तत्वयां देवि परशक्त सुचित्तया।।
सर्वे वर्णा आश्रमश्च बालयौवनवार्द्धकाः।
अस्यां पुर्यां मृताश्चेत्स्युर्मुक्ता एव न संशयः।।

–शिवपुराण, चतुर्थ संहिता, २३/१२/२४

अर्थ– वे जीवनमुक्त हैं जहां कहीं भी वे मरते हैं तत्काल ही मोक्ष को प्राप्त होते हैं, यह तुम मेरे इस वचन को निश्चय रूप से जानो। हे देवि! परमशक्ति! इस परम उत्तर अविमुक्त काशी नामक तीर्थ में विशेषता है सो चित्त देकर सुनो। सब वर्ण तथा आश्रम वाले बालक, युवा, वृद्ध कोई भी इस काशीपुरी में मृत्यु को प्राप्त हो तो निःसन्देह मुक्त हो जाता है। जिससे पिशाच योनि से भी मुक्ति मिल जाती है।

सर्वेभ्यः काशिसंस्थेभ्यो मोक्षभिक्षां प्रयच्छति।
त्रिपुरारिः पुरद्वारि कदास्यां मोक्षभिक्षुकः।।

(लिङ्ग पुराणे)

अर्थ– काशी में निवास करने वालों को मोक्ष-भिक्षा देने के लिए भगवान् त्रिपुरारी (विश्वनाथ जी) सदा प्रतीक्षा करते रहते हैं कि हमारे द्वार पर मोक्षभिक्षुक कब आयेगा और मैं कब मोक्ष की भिक्षा

दूँगा। भूतभावन भगवान शङ्कर की ऐसी काशी में अवश्य निवास करना चाहिए। काशी में-

पूजयित्वा महादेवं काशीनाथं जगद्गुरूम्।
चतुर्विधश्च ये जीवा ये च वेदादयः परे।।
वे सर्वे मुक्तिमायान्ति काश्यां स्थावरजंगमाः।

वाराह पुराण, तृतीय खण्ड, अध्याय ३५, श्लोक ४५

अर्थ- जगद्गुरु काशीनाथ महादेव की जो लोग पूजा करते हैं, वे चार प्रकार के जीवन, चार प्रकार के वेद, वे सब स्थावर, जङ्गम काशी को प्राप्त कर मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

दर्शनाद् देवदेवस्य ब्रह्महत्या प्रणश्यति।
प्रामानुत्सृज्य तत्रैव मोक्षं प्राप्नोति मानवः।।

गरुडपुराण, प्रथम खण्ड, अध्याय ११२, श्लोक ५१

अर्थ- पुलत्स्य जी श्री भीष्मजी से कहते हैं कि देवों के देव श्री महादेव जी का दर्शन करने से ब्रह्महत्या का नाश होता है, अर्थात् प्राणी ब्रह्महत्या के पाप से रहित हो जाता है।

वरमेते पक्षिमृगाः पशवः काशिवासिनः।
येषां न पुनरावृत्तिर्न देवा न पुनर्भवाः।।

तीर्थसुधा संहिता, अध्याय ५, श्लोक ४५

अर्थ- श्री पारासर ऋषि जी सूत जी से कहते हैं कि काशी में वास करने वाले लोग, पशु-पक्षी और मृगादि सभी श्रेष्ठ हैं, जिनका यहाँ काशी में मरने से पुनः जन्म नहीं होता, न ही वे देवता होते हैं, बल्कि सभी प्राणी मुक्त हो जाते हैं।

कीटाः पतङ्गा पशवश्च वृक्षाः
जले स्थले ये विचरन्ति जीवाः।

मण्डूकमत्स्याः कृमयोऽपि काश्यां
त्यक्त्या शरीरं शिवमाप्नुवन्ति।।

—काशी विश्वनाथ संहिता, अध्याय १६, श्लोक-४६

अर्थ– जल में या स्थल में रहने वाले सभी कीट, पतंग, पशु, मेढ़क, मछलियाँ यहाँ तक कि छोटे-छोटे कृमि काशी में शरीर-त्याग कर कैवल्य (मोक्ष-पद) की प्राप्ति कर सकेंगे।

न काशी सदृशी माता गर्भवासप्रणाशिनी।
गर्भ वासादिदुखानि पापनि च महान्त्यपि।।

—काशी रहस्य, अ.४ श्लोक ६६

अर्थ– काशी के समान कोई माता नहीं है, जो सबको गर्भवास से मुक्ति प्रदान करती है। यह काशी गर्भवास आदि दुःख और बड़े से बड़े पापों को नष्ट कर देती है।

तत्र साक्षान्महादेवो देहान्ते स्वयमीश्वरः।
व्याचष्टे तारकं ब्रह्म तथैवैकं विमुक्तिदम्।।

—कूर्म पुराण, ३१/६०

अर्थ– काशी में देहान्त पर साक्षात् विश्वनाथ जी मुक्तिप्रद तारक-ब्रह्म का उपदेश देते हैं।

पुण्यानि पापान्यखिलान्यशेषं,
सार्थं सबीजं च शरीरमार्ये।
इहैव संहृत्य ददामि बोधं,
यतः शिवानन्दमवाप्नुवन्ति।।

—सनत्कुमार संहिता

अर्थ– विश्वनाथ जी कहते हैं कि देवि! काशीवास करने वालों के सम्पूर्ण पुण्य एवं पापों को बीज (मूल) के साथ सशरीर यहीं पर नष्ट करके ज्ञान का उपदेश करता हूँ, जिससे काशी में मृतक प्राणी

को शिवानन्द की प्राप्ति होती हैं।

गर्भ-जन्म-जरा-मृत्यु-संसार भव-सागरात्।
तारयामि यतो भक्तं तस्मात्तारोऽहमीरितः।।

—शिवगीता, षष्ठ अध्याय

अर्थ– शंकर जी कहते हैं कि अपने भक्त को मैं गर्भवास, जन्म, जरा और मृत्यु तथा संसार सागर से तारता हूँ इसीलिए मुझे लोग तारक कहते हैं।

प्राणप्रयाणसमये प्राप्य ज्ञानं महेश्वरात्।
मुच्यतेन्त जन्तवः सर्वे बद्धाः स्वाभाव्यविद्यया।।

--वामन पुराण, द्वितीय खण्ड, अध्याय २५२, श्लोक ४५

अर्थ– प्राण छूटने की बेला में भगवान शिव से ज्ञान प्राप्त कर स्वाभाव्य अविद्या से जो बद्ध हैं वे सब प्राणी मुक्त हो जाते हैं।

एकेन जन्मना काश्यां निर्वाणं समवाप्यते।
अतः परं कः उपायः साधनैर्विना।।

—त्रिस्थली सेतु

अर्थ– मनुष्य काशी में एक जन्म में ही निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त कर लेता है। किसी भी साधन के बिना मोक्ष प्राप्ति के लिए काशी से बढ़कर सरल उपाय और दूसरा क्या हो सकता है?

अपिपातकिनो ये च कालेन निधने गताः।
तेऽपि स्वार्गादिहागत्य काश्यां मोक्षमवाप्नुयुः।।

—जाबालोपनिषद् पृ.

संप्राप्य तारकं न स भूयोऽभिजायते।
यो मामिह समभ्यर्च्य म्रियतेऽन्यत्र, कुत्रचित्।।
जन्मान्तरेऽपि मां प्राप्य स विमुक्तो भविष्यति।।

–का.ख.अ. ६४/११८

अर्थ– विश्वनाथजी कहते हैं कि काशी में जीव तारकमन्त्र का उपदेश पा जाता है जिससे वह पुनर्जन्म नहीं लेता। जो भक्त इस काशी में मेरी सविधि पूजा करता हो, किन्तु मरण समय में यदि वह कहीं अन्यत्र जाकर शरीर त्याग करता है, तो ऐसा मनुष्य दूसरे जन्म में पुनः मुझे प्राप्त करके मुक्त हो जाता है।

तावत् पापानि जृम्भन्त नानाजन्मार्जितान्यपि।
यावत् काशीन हृत्संस्था पुनर्भवविघातिनी।।

–(काशीखण्ड, अ. ५० श्लोक १२७)

अर्थ– अनेक जन्मों अर्जित पाप तब तक गरजते हैं जब तक भवविनाशिनी काशी का दर्शन नहीं होता, काशी के दर्शन होते ही सभी पाप शान्त हो जाते हैं।

कुत्रचिच्च शुभं वर्धेत् कुत्रचित्पापसंक्षयः।
सर्वेषां कर्मणां नाशो नास्ति काशीपुरीं बिना।।

–ज्ञानसंहिता, अ. ५१, श्लोक ७२

अर्थ– कितने तीर्थ पुण्य को बढ़ाते हैं तथा कितने तीर्थ पापों का नाश करते हैं, परन्तु समग्र कर्मों का नाश करने वाली काशीपुरी है। यह समस्त पापों का नाश करती है, इसलिए सदा काशी का सेवन करना चाहिए। काशीवास मुक्ति, भुक्ति और सुख को देने वाला है।

यदि महापापी भी कालवशात् काशी में प्राणत्याग करता है, तो वह मुक्त हो जाता है। इसलिए यहाँ (काशी में) देवता भी स्वर्ग से आकर मोक्ष प्राप्त करते हैं।

मोक्षार्थिम्मोक्षा नामधेया
धर्मार्थिनां धर्मदा चिन्तनाद्या।
अर्थार्थिनामर्थदायाचपद्या

कामार्थिना कामदा रूपवल्ली।।

अर्थ– विष्णु भगवान कहते हैं कि काशी के चार नाम हैं। मोक्ष देने के कारण मोक्षदा, धर्म देने के कारण धर्मदा, अर्थ चाहने वालों के लिए अर्थदा और कामर्थिनों के लिए क़ामकल्पवल्ली है अर्थात् काशी कल्पवृक्ष है।

अमोघभोगदा चात्र स्वल्पधर्मकृतामपि।
केवलं धर्महृस्वत्वात् कलौ काशीगतिनृणाम्।।

(काशीमूलरहस्य, केदार महात्म्य)

अर्थ– काशी में देह छोड़ने वाले समस्त जन्तुओं को मुक्ति देने वाली और अमोघ भोग देने वाली काशी में थोड़ा भी धर्म करने वाले तथा केवल धर्म-बुद्धि रखने वाले के लिए कलियुग में एकमात्र भुक्ति-मुक्ति देने वाली काशी है।

योगक्षमं सदा कुर्याद् भवानी काशीवासिनाम्।
गृहमध्येऽत्र विश्वेशो भवानी उत्कुटम्बिना
सर्वेभ्यः काशिसंस्थेभ्यो मोक्षभिक्षां प्रयच्छति।।

(काशीखण्ड, स्कन्दपुराण ६१/१०३)

अर्थ– अप्राप्य वस्तु की प्राप्ति का नाम योग है। प्राप्त वस्तु की रक्षा का नाम क्षेम है। भगवती भवानी काशीवासियों को उपर्युक्त दोनों की पूर्ति करती है। इस पुरी के मध्य में भगवान् विश्वनाथ जी हैं। उनकी पत्नी भवानी हैं, जो सभी काशीवासियों के लिए मोक्ष की भी भिक्षा प्रदान करती हैं।

ब्रह्महत्यादि पापानि यस्या नाम्नोऽपि कीर्तनात्।
त्यजन्ति पापिनं काशी सा केनेहोपमीयते।।

(का.ख.अ. ३१/१)

अर्थ– जिसका केवल नाम ले लेने से ही ब्रह्म हत्यादिक पातक पापीजन छोड़ भागते हैं, इस संसार में उस काशी की उपमा किससे

दी जाये।

यदन्यत्रार्जितं पापं ततकाशी दर्शनाद् व्राजेत्।
दृशौ कृतार्थे कृतकाशी दर्शने।
काशी दर्शनजं पुण्यं प्राप्नोति नियतं नरः।।

(का.ख.अ.) ४४/४२

अर्थ- अन्यत्र का अर्जित पाप काशी के दर्शन मात्र से ही क्षीण हो जाता है। काशी के दर्शन से नेत्र कृतार्थ हो जाते हैं। काशी के दर्शन का पुण्य मनुष्य अवश्य प्राप्त करता है।

काशी क्षेत्रे विश्वेश्वरस्य शिवां प्रति प्रतिज्ञाद्वयम्।
जीवितोऽन्नं ददासि त्वं मृते मुक्तिं ददाम्यहम्।।

अर्थ- काशी क्षेत्र में विश्वेश्वर की दो प्रतिज्ञाएँ हैं- शिवे! जीवित प्राणियों को तुम अन्न प्रदान करोगी और मृत्यु होने पर मैं मोक्ष प्रदान करूगाँ।

काशी क्षेत्र होकर थोड़े ही प्रयास से शिवालयों में सभी देवताओं का दर्शन कर सकते हैं। देवताओं, मुनियों और ब्रह्मणों के द्वारा जिस पवित्र और सैकड़ों शास्त्रों में वर्णित ब्रह्म को सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है वहा 'काशी' ही है। जो सबसे लिए सुलभ हो सकता है। भगवती अन्नपूर्णा के साथ विश्वनाथ और लक्ष्मी सहित विष्णु यहाँ वास करते हैं।

काश्यां विश्वेश्वरो देवः संसार भय नाशनम्।
अनेक जन्म कृतं पापं दर्शनेन विनश्यति।।

-विश्वेश्वर संहिता अ. श्लोक

अर्थ- काशी में विश्वेश्वर देवता है जो जन्म, मरण रूप संसार के भयनाशक हैं। जिनके दर्शन से अनेक जन्मों का किया हुआ पाप

विनष्ट हो जाता है।

वाराणस्यां वर्षभोज्यं यो दद्यान्निरूपायिने।
स कदाचिन्न क्षुध् तद् दुःखं भुङ्क्ते नरर्षभः।।

का.ख.अ. ३१/११६/११८

अर्थ- काशी में आँवले के फल के समान भी भिक्षा भिक्षुकों को देने से वह सुमेरु पर्वत से भी भारी होकर देने वाले के द्वारा पुत्र-पौत्र परपौत्र एवं उसके खानदान में लोग सदा धनी बने रहते हैं।

श्रद्धापूर्वमिमा यात्राः कर्तव्याः क्षेत्रवासिभिः।
पर्वस्वपि विशेषेण कार्या यात्राश्च सर्वतः।।

(काशी खण्ड, अध्याय-१००, श्लोक १००)

अर्थ- काशीवासियों को श्रद्धापूर्वक यात्रा करनी चाहिए। पर्वों में जरूर काशी की परिक्रमा करनी चाहिए। अर्थात् काशी की यात्रा करना अनिवार्य है। क्योंकि काशी की यात्रा करने वाले भक्तों को काशी विश्वनाथ भक्ति एवं मुक्ति देते हैं।

विश्वेशानुगृहीतानां विच्छिन्नाखिलकर्मणाम्।
भवेत्काशीं प्रति मतिर्नेतरेषां कदाचन।।
काशीं प्रति मनो येषां निःशेषक्षलितैनसाम्।
त एव मानवा लोके सत्यं नृपशवो परे।।

(काशी खण्ड, अ०-५०, श्लोक-१३०, १३१)

अर्थ- काशी की दर्शन यात्रा की ओर उन्हीं की बुद्धि आसक्त होती है जिन पर विश्वनाथ भगवान् की पूरी कृपा होती है और जो मनुष्य अपने समस्त कर्म बन्धनों को काट चुके हैं तथा काटने की इच्छा रखते हैं। जो लोग काशी की दर्शन, यात्रा करना चाहते हैं वह

लोग अपने समस्त पापों को धो डालते हैं। अर्थात् काशी की यात्रा करने वाले नर-नारियों के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

काशी में जो कोई दरिद्र कुटुम्बी को वर्ष भर भोजन वस्तु दान करता है, वह जितने वर्ष के लिए देता है, उतने युग परिमाण से स्वर्ग में देवताओं से पूजित होता रहता है।

जो मनुष्य वाराणसी क्षेत्र में निरुपायजन को वर्ष भोज्य दान करता है उसे किसी जन्म में कभी भी क्षुधा एवं तृष्णा का दुःख भोगना नहीं पड़ता है।

लिङ्गष्वेको हि विश्वेशस्तीर्थेषु मणिकर्णिका।
इतिसंव्याहरन्व्यासस्तद् द्वयम्बहु मन्यते।।
(काशी खण्ड, अध्याय-१६, श्लोक ६)

अर्थ- काशी में लिङ्गो में प्रधान विश्वेश्वर तथा तीर्थों में मुख्य मणिकर्णिका है। वेदव्यास जी इन दोनों को नाम ग्रहणपूर्वक बहुत विशिष्ट मानते हैं।

तत्रत्क्रमणकाले तु साक्षात् विश्वेश्वरः स्वयम्।
व्याचष्टे तारकं ब्रह्म येनासौ तन्मयो भवेत्।।
(काशीखण्ड अ. २५)

अर्थ- प्राणियों के प्राण निकलते समय साक्षात् श्री विश्वनाथ जी स्वयं तारक मंत्र का उपदेश देते हैं। उपदेश पाते ही उस जीव का ब्रह्म से साक्षात्कार हो जाता है। जिससे वह प्राणी ब्रह्ममय हो जाता है।

ॐ नमः शिवाय

पुराणों में चौरासी कोस की परिक्रमा

सर्वे यात्रिणः रूद्रसरोवरस्य एवं गंगायाः संगमे स्नात्वा गंगाजलं पूजनसामग्रीश्चादाय "हर हर महादेव शंभो, काशी विश्वनाथ गङ्गे" इत्युच्चारयतः शनैः शनैः दशाश्वमेधघट्टात् बृहस्पतिश्वर-साक्षीविनायक,लोमशेश्वर-गणेश-बालात्रिपुरसुन्दरी-भवानी-देवीनां, विश्वेश्वरस्य च दर्शनं, पूजनं च कृत्वा काश्याः वृहद् चौरासी क्रोश-परिक्रमा यात्रा निर्विघ्नतया पूर्णाभवतु इति कामनानन्तरम् स्व-स्व गृहम् गच्छेयुः। गृहं गत्वा तैः सर्वैः हविष्यान्नं भक्षणीयम् अपि च, उक्त परिक्रमायात्राम् गन्तुम् पूजनस्य सर्वाः सामग्र्यः सञ्चनीयाः।

अन्येद्युः प्रातः सन्ध्यास्नानं विधाय गणपतिं ध्यात्वा ज्ञानवापी गत्वा, विश्वेश्वरस्य दर्शनम् पूजनं च कृत्वा पुनः संकल्पं आदाय, काश्याः वृहद् चौरासी क्रोशस्य परिक्रमायात्रायाः शुभारंभं कुर्वन्तु सर्वे यात्रिणः। यस्मिन् दिवसे नराणां नारीणां च मनसि चौरासी क्रोशपरिक्रमायात्राम् कर्तुम् जिज्ञासा उत्पन्नाभवतु तस्मिन्नेवदिवसे श्रद्धया भक्त्याच परिपूर्णाः सन्तः उक्तयात्राम् साधयेयुः (गच्छेयुः)।

फाल्गुनशुक्लपक्षस्य प्रतिपदितिथौ प्रातः गंगा तटे स्नानं, संध्यां एवं शिवदेवालयानाम् दर्शनम् पूजनञ्च कृत्वा 'चौराशीक्रोश' परिक्रमाणं गन्तुम् अर्चना, भोजनादि सामग्र्यः आदाय "ज्ञानवापी इति स्थलम् गत्वा चौराशीक्रोशेश्वर-विश्वेश्वरस्य, भवानी गणेशादीनां अवलोकनम् कृत्वा संकल्प आदाय ब्राह्मणेभ्यः दक्षिणां समर्प्य सर्वे गन्तारः युगपद "हर हर महादेव शम्भो, काशीविश्वनाथ गङ्गे" इत्युचारयन्तः ज्ञानवापीतः मणिकर्णिकास्थितपुष्करणीतीर्थजलम् गंगायाश्च संगमे मार्जनं विधाय गुप्तेश्वराय नमः "इति मन्त्रेण भगवन्तम् गुप्तेश्वरं प्रणम्य मणिकर्णिकाघट्टतः पञ्चगंगाघट्टम् यान्तु। ततश्च नौकाभिः; गङ्गाम् उत्तीर्ण भगवतः व्यासेश्वरस्य

दर्शनम् कुर्युः। काश्याः वृहद् चौरासीक्रोश परिक्रमायात्रायाः गङ्गायाः पूर्व भागे स्थितस्य व्यासेश्वरस्यसमीपे प्रथमो विरामस्थलो (पड़ाव) अस्ति। तत्रैव गणेश, सरस्वती, भैरव, हनुमान, गोपालादयः देवाः विराजमानाः सन्ति। रात्रौ कीर्त्तनसत्सङ्गानि च विधाय चौराशीक्रोशेश्वरम् स्मरन्तः शेरताम् (शयनम् कुर्वन्तु) सर्वे। इदं प्रथमविरामस्थलम्।

अन्येद्युः प्रातःकालीनम् संध्यावन्दनादिकं कृत्यम् सम्पाद्य सर्वे यात्रिणः मिलित्वा क्रोशेश्वरदेवस्य नामोच्चारयतः चौरासी क्रोश परिक्रमायात्राम् प्रारब्धन्ताम्।

काश्याः वृहद् चौराशी क्रोशस्य परिक्रमा यात्रायाः द्वितीयम् विरामस्थलम्। इदं स्थलम् गङ्गायाः पूर्वभागे वैकुण्ठेश्वरस्य समीपे स्थितमस्ति। अत्र भगवती दुर्गा, भवानीपुत्रगणेश, भैरव सूर्यादयः देवाः विद्यमानाः सन्ति। बैकुण्ठेश्वरतीर्थे स्नानं, संध्यापूजनम् कृत्वा एवम् मध्याह्नस्य भोजनात् पश्चात् विश्रामम् कुर्वन्तु। आगामिन् दिवसे प्रातःकालीनां क्रियाम् सम्पाद्य पुनःयात्राम् कर्तुम् प्रस्थानं कुर्वन्तु।

काश्याः वृहद् चौरासीक्रोशस्य परिक्रमायात्रायाः तृतीयाविश्रामभूमिः-

भागीरथ्याः पूर्वभागे एवम् बावनभगवतः चरणचिन्हस्य उत्तरभागे अगस्तेश्वर निकटे तृतीयम् विश्रामस्थलम् वर्त्तते। अत्र उषीत्वा, स्नानं, ध्यानं अर्चनं-पूजनम् दर्शनञ्च सम्पाद्य हरिकीर्त्तनम् कुर्वन्तः विश्रामम् लभन्ताम्। अत्र कुक्कुटेश्वरलिङ्गम्, विनायकः एवं गौरीदेवीविराजमानाः सन्ति। अत्र शायं कालीनम् सन्ध्यादि कृत्यम् कृत्वा हरिकीर्त्तनम् कुर्वन्तः रात्रिशयनम् कुर्वन्तु अन्येद्युः प्रातःकालीनाम् क्रियाम् सम्पाद्य प्रस्थानं कुर्वन्तु।

काश्याः वृहद् चौराशीक्रोश परिक्रमा यात्रायाः चतुर्थविश्रामस्थलम्। गङ्गानद्याः उत्तरभागे ब्रह्मर्षिकश्यपऋषेः तपोभूमिरस्ति। उत्तरस्याम् दिशि दक्षिणाभिमुखहनुमतः मंदिरमस्ति। अत्र अञ्जनीदेवी, विनायकः सूर्यश्च देवाः सन्ति। अत्र प्रगम्य दर्शनं पूजनं च कुर्वन्तु। शायंकालीनां

क्रियाम् सम्पाद्य रात्रौ विश्रामम् कुर्वन्तु। प्रातः स्नान-सन्ध्यापूजनादि कर्मणः निवृत्ताः सन्तः यात्राम् कुर्वन्तु।

काश्याः वृहद्चौरासीक्रोश-परिक्रमायात्रायाः पञ्चमम् विश्रामस्थलम् भगवतः रामेश्वरस्य पश्चिम भागे महाकाली देवी विद्यमानास्ति। अत्र मङ्गलविनायकः अरुणादित्यः, चण्डभैरवश्च इति देवाः स्थिताः सन्ति। अत्रैव कालिकातीर्थे शौचादीनि समस्तानि कृत्यानि समाप्य दर्शनपूजनोपरान्तम् भोजनं गृहीत्वा मध्याह्नविश्रामम् कुर्वन्तु। शायं कथा श्रवणं सत्संगं च साधयन्तु। स्नान, संध्यावन्दनादिकृत्य पश्चात् शायं हृदयेन भगवतम् विम्बम् ध्यायतः रात्रिशयनं कुर्वन्तु। अन्येद्युः प्रातःकालीनाम् क्रियाम् संसाध्य यात्राम् प्रारम्भताम्।

काश्याः वृहद् चौरासीक्रोश परिक्रमायात्रायाः षष्ठमम् विरामस्थलम्-

भगवतः त्रिलोचनस्य दक्षिणदिशि भवान्याः सिद्धपीठस्थलमस्ति। अत्र भवान्याः निकटे गणेशादित्य भैरव हनुमदादयश्च देवाः विराजमानाः सन्ति। विख्यातभवानीतीर्थे स्नात्वा सर्वे यात्रिणः पूजनम् भजनम कीर्त्तनञ्च सम्पादयन्ताम्। भोजनोपरान्ते अपराह्ने कथा-प्रवचनानि कुर्वन्तु। शायं स्नान, संध्यार्चनम् समाप्य ईश्वरंस्मरन्तः रात्रौ विश्रामम् लभन्ताम्। प्रातः प्रातःकालीन क्रियाम् सम्पाद्य यात्राम् प्रारभन्ताम्।

काश्याः वृहद् चौरासीक्रोश यात्रायाः सप्तमी-विश्रामभूमिः-

गोमत्याः दक्षिणभागे नर्वदेश्वर मंदिरम् वर्त्तते। अत्र पशुपतीश्वर, यक्षविनायक वागीश्वरी देवी हनुमदादयः देवाः शोभमानाः सन्ति। यात्रिणः (गन्तारः) विश्रामप्राङ्गणम् प्रगम्य, स्नानं, संध्याञ्च सम्पाद्य मंदिरेषु दर्शनं-पूजनं च कुर्वन्तु। सकृदेव दिवसे हविष्यान्नम् भक्षयन्तु। कीर्त्तनम्, सत्संगं, कथाश्रवणं च कृत्वा शिव-शिव इति वदन्तः विश्रामम् कुर्वन्तु। अन्येस्मिन दिने (आगामिदिवसे) प्रातः कृत्यम् सम्पाद्य अग्रिमाम् यात्राम् यान्तु।

काश्याः वृहद् चौराशीक्रोशपरीक्रमाभ्रमणस्य अष्टमम् निवास्थलम्-

हरिहरपुर नाम्निग्रामे गोमतीनद्याः दक्षिण भागे हरिहरेश्वरस्य निकटे हरिहरेश्वरलिङ्गम्, विनायकः सूर्यः भुवनेश्वरी देवी च विराजमानाः सन्ति। अत्र स्नानं, ध्यानं च विधाय भोजनम् विश्रामम् च कुर्वन्तु। सायं अपराह्णवेलायाम् कीर्त्तन-भजन-सत्सङ्गानि च कुर्वन्तु। सायं भगवत् चर्चानन्तरम् रात्रिविश्रामम् कुर्वन्तु। आगामिदिवसे, प्रातः क्रियाम् संसाध्यअग्रिमामयात्राम् प्रारम्भन्ताम्।

काश्याः वृहदचौरासीक्रोश यात्रायाः नवमम् विरामस्थलम्–

गोमती-गङ्गासङ्गमे श्रीमार्कण्डेय महादेवः विद्यमानोस्ति। श्री मार्कण्डेश्वरस्य निकटे सुमन्तेश्वर-दण्डपाण्यादित्य-भैरवगणेशाः, आदिशक्तिः, एवम् हनुमान् च देवाः सन्ति। परिक्रमाकर्तारः अत्र आगत्य स्नान, ध्यानादि कर्म सम्पाद्य भोजनम् विश्रामम् च कुर्वन्तु। अपराह्ने भगवतकथाम्, सत्संग महिमानम् शृण्वन्तु।

सायं, सायंकृत्यानि सम्पाद्य रात्रौ जागरणम् भगवत् स्मरणम् च साधयन्तु अथवा 'हरहर महादेव शम्भो, काशीविश्वनाथगङ्गे' इति मंत्रम् गायन्तु। आगामिदिवसे अत्रत्यः प्रातः क्रियाम् संसाध्य यात्राम् कुर्वन्तु।

काश्याः वृहद् चौरासीक्रोशपरिक्रमा यात्रायाः दशमो निवासः।

वृद्धकालेश्वरस्य पश्चिम दिशि महेश्वरस्य निकटे महेश्वरम् नाम् तीर्थम् अस्ति। तत्र माहेश्वरी देवी आदित्य, गणेश, भैरवादयश्च देवाः विराजन्ते। यात्रिणः अत्रैव स्नान, संध्या, पूजनादीनि कृत्यानि सम्पाद्य ईश्वरम् ध्यायन्तः कीर्त्तनम् कथासत्सङ्गञ्च सुसाधयतु भोजनम् विश्रामम् च लभन्ताम्। प्रातःकालीनम् कर्म समाप्य अग्रिमयात्रायै प्रस्थानम् कुर्वन्तु।

काश्याः वृहद् चौरासीक्रोश-परिक्रमायात्रायाः एकादशः विश्रामः-

भागीरथी गङ्गायाः पूर्वभागे नागेश्वरलिङ्गम् स्थितमस्ति। अत्र नागेश्वर, सूर्ये, गणेश, भैरवादयः देवाः विराजन्ते। नागेश्वरतीर्थे स्नात्वा सन्ध्यादर्शन पूजनादीनि कर्माणि कुर्वन्तु। तत्पश्चात् भोजनम् विश्रामम्

च कुर्वन्तु। आगामि दिवसे प्रातरुत्थाय स्नान संध्यापूजनान्तरम् यात्राम् आरभन्ताम्।

काश्याः वृहद् चौरासीक्रोशपरिक्रमायात्रायाः द्वादशतमम् विश्रामस्थलम्-

अस्याः यात्रायाः द्वादशः निवासः काश्याम् एवास्ति। यात्रा प्रारम्भे तथा यात्रान्ते च सर्वैः परावर्त्तनसमये बालात्रिपुरसुन्दरी देव्याः दर्शनम् करणीयम्। बालात्रिपुरसुन्दरी देव्याः मंदिरं यात्रायाः केन्द्रविन्दुरस्ति। ततः एकादश-विश्रामस्थलतः शिवकीर्त्तनम् कुर्वन्तः दशाश्वमेध घट्टे रुद्रसरोवरस्य एवं गङ्गायाः संगमे, स्नानं विधाय वृहस्पतिश्वर, साक्षी विनायक ढुंढिराज दण्डपाणि पार्वतीविश्वेश्वरादि देवानाम् देवीनाञ्च दर्शनम् पूजनञ्च सम्पाद्य ज्ञानवाप्याम् संकल्पानि त्यक्त्वा यथाशक्ति ब्राह्मणेभ्यो दानम् च प्रदाय दर्शनार्थिनः स्व-स्व निवासस्थलानि गच्छन्तु तथा अन्येद्युः यथाशक्ति हवनम्, कीर्त्तनम् कृत्वा एकम् वा द्वौ साधू ब्राह्मणौ भोजनम् कारयित्वा सपरिवारः भोजनम् गृह्णन्तु। इत्थं वृहद् चौरासीक्रोश परिक्रमा यात्रा पूर्णा जायते।

बृजमण्डल की चौरासी कोस की परिक्रमा, दर्शन, पूजन, यात्रा वृन्दावन की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा कृष्ण भगवान के जन्म भूमि एवं लीला स्थल और सिद्ध प्रसिद्ध सन्त महात्माओं के आश्रम वृन्दावन के सिद्ध और प्रसिद्ध मन्दिरों के बाहर से बृजमण्डल की चौरासी कोस की यात्रा का मार्ग बना है। मैंने भी बृजमण्डल की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा सन् १९७२ई० में वृन्दावन के श्रीनाथ व्यास जी के साथ किया था। नैमिषारण्य (सीतापुर जिला) के चौरासी कोस परिक्रमा, दर्शन, पूजन यात्रा मैंने नैमिषारण्य के जगतगुरु नारदानन्द सरस्वती जी के साथ सन् १९७२ई० को किया था। जैसी नैमिषारण्य सीतापुर की चौरासी कोस की परिक्रमा यात्रा है, उसी प्रकार काशी की वृहद चौरासी कोस की यात्रा है, जो आपके हाथ में है।

काशी की चौरासी कोस परिक्रमा

दर्शन, पूजन, यात्रा का प्रमाण निम्न है-

काशी की पंचक्रोसी परिक्रमा की सीमा- पूर्व में मणिकर्णिका घाट, दक्षिण में कर्दमेश्वर (कन्दवा), पश्चिम में रामेश्वर, उत्तर में शिवपुर, यह पंचक्रोसी परिक्रमा की सीमा है।

काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का प्रमाण ऋग्वेद, अथर्ववेद एवं सामवेद पुराणों में और पद्मपुराण में से उद्धृत है। "काशी रहस्य" में इस यात्रा का वर्णन है। पंचक्रोसी यात्रा के परिधि मार्ग से एक योजन अर्थात् १२ किलोमीटर बाहर से काशी के चारों ओर चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का मार्ग है ऐसा वेदव्यास जी ब्रह्मवैवर्त पुराण के तीसरे खण्ड काशी रहस्य में लिखते हैं। ऋग्वेद, ब्रह्माण्डपुराण, पद्मपुराण, लिंगपुराण, नन्दी पुराण, स्कन्दपुराण आदि में इसका वर्णन मिलता है, अतः प्रामाणिक यही है कि पंचक्रोशी पड़ावों के १२ किलोमीटर बाहर से काशी की वृहद् चौरासी कोस यात्रा करनी चाहिए। काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा की सीमा का वर्णन करते हुए स्वामीजी ने कहा- १. विश्वेश्वर से पूर्व में महाकालेश्वर एवं महेश्वर सकलडीहा पोखरा जगन्नाथ पुरी में है। २. विश्वनाथ जी से दक्षिण पूर्व की सीमा में अगस्तीश्वर मन्दिर चुनार घाट हरिद्वार धाम में है। ३. विश्वनाथ जी से पश्चिम में कालिका धाम कालिका बाड़ा में है। ४. विश्वनाथ जी से उत्तर में गोमती-गंगा संगम के पास मारकण्डेय महादेव कैंथी में है। प्राचीन मार्ग, मन्दिर तीर्थ-कुण्ड पड़ाव आदि कहीं-कहीं लुप्त हो गये हैं। शासन को इससे अवगत कराया गया है तथा सुझाव दिये गये हैं कि प्राचीन मार्गों का

जीर्णोद्धार कराया जाये। गंगा जी में पुल और प्राचीन रास्ता बनने के पश्चात् परिक्रमा यात्रा बारहों महीने चलेगी। इस हेतु स्वामी जी शासन को पत्र लिखे हैं। बलुआ घाट एवं चुनार घाट हरिहरपुर में पुल बन जाने से चौरासी कोस यात्रा के यात्रियों का सामान ढोने वाली गाड़ी की और गाड़ी से यात्रा करने वाले यात्रियों की सुविधा हो जायेगी। और चौरासी कोस यात्रा के मार्ग में छोटी बस चल सकेंगी।

सूचना

काशी वासियों को सूचित किया जाता है कि जैसे पंचक्रोसी यात्रा के मार्ग में काशी विश्वनाथ मंदिर से सबसे नजदीक दशाश्वमेघ घाट केन्द्र बिन्दु है, उसी प्रकार काशी विश्वनाथ जी से दक्षिण पूर्व में रतन बाग में बालात्रिपुरसुन्दरी मंदिर काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का केन्द्र बिन्दु है। परिक्रमा दर्शन, पूजन यात्रा करने जाते और आते समय इनका दर्शन करना अनिवार्य है। काशी रहस्य के १०वें अध्याय में इसके प्रमाण निम्न प्रकार हैं–

देव संघेश्वरे किंचिद् दत्वा स्थित्वा ततो व्रजेत।
पाशपाणिं गणेशं च क्षेत्रमध्ये व्यवस्थितं।।
पूजयित्वा बहिश्चैव पृथ्वीश्वरमथो यजेत्।
एकोश्वरमेधः पृथुना कृतः क्षेत्रद्बहिः पुरा।।
स्वर्गभूमिस्तु साज्ञेया मोक्षभूमिस्तु मध्यतः।
काश्यां चतुर्दिशं देविः योजनं स्वर्गभूमिका।।
तस्मात् यत्रस्तु गच्छन्ति स्वर्गः सुकृतनापदम्।
ततः सुपूज्यं हि सरः स्पृष्ट्वां गच्छेत् शनैः शनैः।।

काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा में कुल ११ पड़ाव सुनिश्चित हैं एवं १२वाँ समापन पड़ाव काशी विश्वनाथ जी में है। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है–

पंचक्रोशी यात्रा के मार्ग से चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का मार्ग के बीच (१२ किलोमीटर तक) का विस्तार से वर्णन निम्न है–

पञ्चक्रोशी परिक्रमा के मार्ग कर्दमेश्वर महादेव कंदवागाँव से दक्षिण खानपुर १२ किलोमीटर है। पंचक्रोसी के रामेश्वर गाँव से पश्चिम भवानी मंदिर १२ किलोमीटर है। पंचक्रोसी यात्रा के कपिलधारा गाँव के उत्तर से मार्कण्डेय महादेव १२ किलोमीटर है। पंचक्रोसी मार्ग के वरुणा गंगा-संगम आदिकेशव के पूर्व मुगलसराय-अलीनगर मार्ग १२ किलोमीटर है। इस प्रकार माँ अन्नपूर्णा एवं बाबा विश्वनाथ की असीम कृपा से वृहद् चौरासी कोस यात्रा इष्टदेव को समर्पित करता हूँ। जनकल्याण हेतु जिसका वर्णन विस्तार से आगे के अध्याय में दिया जा रहा है।

मेरे प्राण प्रिय काशीवासियों! काशी की वृहद् चौरासी कोश की परिक्रमा यात्रा सृष्टि के प्रारम्भ से चल रही है और प्रलय काल तक चलती रहेगी। क्योंकि सृष्टि जब से हुई, तब से अब तक कई कल्प व्यतीत हो चुके हैं।

मेरे इष्टदेव एवं पूज्य गुरुवर की कृपा से प्रथम वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा को तत्कालीन माननीय मण्डलायुक्त श्री नितिन रमेश गोकर्ण जी ने हार्दिक साधुवाद के साथ सहयोग दिया।

नित्य-दर्शन-पूजन यात्रा करें

पद्मपुराण के अनुसार चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा में जाने के दो दिन पूर्व यात्रियों को विश्वेश्वर की नित्य यात्रा अवश्य करनी चाहिए। विश्वेश्वरनिष्ठ यात्रा लोहटिया मुहल्ले में यात्री 'हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे' कीर्तन करते हुए बड़े गणेश जी के दर्शन-पूजन करने के पश्चात् प्रारम्भ होगी। यतीश्वर ईश्वरगंगी में

है जो 'जागेश्वर' प्रगट नाम से प्रसिद्ध है। "मध्यमेश्वराय नमः', 'महामृत्युञ्जयश्वराय नमः', 'कालभैरवाय नमः' का स्मरण करते हुए दर्शन करेंगे। सभी यात्री मणिकर्णिका घाट पुष्करणी नदी एवं गंगाजी के संगमस्थल पर स्नान-मार्जन कर गंगाजल एवं पूजन की सामग्री लेकर मणिकर्णिका घाट से लाहौरी टोला होते हुए बावन पीठों में से एक पीठ की अधिष्ठात्री विशालाक्षी देवी के मंदिर में देवी का दर्शन-पूजन करेंगे।

१. विशालाक्षी गौरीदेव्यै नमः - मीरघाट में स्थित है।
२. धर्मेश्वराय नमः - धर्मकूप, मीरघाट।
३. विश्वेश्वराय नमः - व्यक्तिगत मंदिर, मीरघाट।
४. कालरात्रिदेव्यै नमः - कालिका गली।
५. साक्षी विनायकाय नमः - विश्वनाथ गली।
६. दण्डपाणिभ्यो नमः - ढुंढिराज गली।
७. शुभ्रम, विभ्रम देवगणाय नमः - दण्डपाणीजी के मंदिर में है।
८. विश्वेश्वराय नमः - बाँसफाटक शृंगार गौरी मंदिर में है।

यात्रा, दर्शन, पूजन करके सम्पन्न होता है।

काशी की चौरासी कोस यात्रा निर्विघ्न पूर्ण करने के लिए आप जहाँ रहें वहीं प्रथम श्रीगणेश जी का स्मरण और विधिवत् पूजनार्चन करें। परिक्रमा करने वाले यात्री अपने-अपने निवास स्थान घर में जाकर चौरासी कोस की यात्रा में ले जाने के लिए पूजा की निम्न सामग्री आदि आवश्यक वस्तुएँ संचित करके रखें।

गंगाजल, पाठ-पूजा की सामग्री, भोजन बनाने के लिए बर्तन, थाली, गिलास, कटोरा, जल के लिए डेढ़ किलो का एक कमण्डलु, डण्डा अगरबत्ती सलाई, चाकू, टॉर्च, बिस्तर, पैसा आदि सामग्री ले

जाना चाहिए। इसके साथ ही त्रिकूट, (सोंठ, पीपल, काली मिर्च पिसा हुआ) अपने साथ ले जाएँ।

वेद की आज्ञानुसार विद्वान् यात्री को परिक्रमा यात्रा में जाने से एक दिन पहले 'नान्दी श्राद्ध' अवश्य करना चाहिए। श्राद्ध करने वाले यात्री के सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण होते हैं, असाध्य रोग ठीक हो जाते हैं और पितर प्रसन्न होते हैं।

पंचोपचार पूजा की सामग्री– गंगाजल, अक्षत, रोली, बेलपत्र, ऋतुफल, भस्म, वस्त्र दूब, धूप, दीप, नैवेद्य, अगरबत्ती, कपूर, दियासलाई, रेजकारी पैसे आदि साथ में लेकर चलें।

यात्रा में ले जाने के लिए जलपान का नुस्खा– सुखद् यात्रा के लिए यात्रा के दौरान एक बार हल्का हविष्य अन्न का भोजन होता है, अतः चावल के आटा को घी में भूनकर गरम मसाला, चीनी, त्रिकूट, हल्दी आदि मिलाकर लड्डू एवं पंजीरी बना लें और इसके अलावा जलपान की जो व्यवस्था करनी हो तो उसे अपने साथ लेकर चलें।

विश्वेश्वर दर्शन-पूजन यात्रा

काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा दर्शन-पूजन यात्रा में जाने के एक दिन पहले फाल्गुन अमावस्या तिथि के दिन प्रातः १० बजे दशाश्वमेध घाट गंगा में स्नान कर चितरंजन पार्क में उपस्थित होंगे। इसी दिन यात्रा का शुभारम्भ विशिष्ट अतिथि करेंगे। हर हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गंगे कीर्तन करते हुए विश्वेश्वर दर्शन कर अपने घर जायेंगे। दूसरे दिन फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रातः ८ बजे सामान लेकर सत्यनारायण मन्दिर ज्ञानवापी में दर्शन

करें।

गच्छता तिष्ठता वापि स्वपता जाग्रथवा।
काशीत्येष महामन्त्रों ये जप्तः सनिर्भयमः।।

—काशीखण्ड अ. ६४.३६ श्लोक

जो प्राणी चलते, स्थित रहते, सोते जागते हुए हर समय 'काशी' इन दो अक्षरों के महामंत्र को जपते रहते हैं, वे इस कराल संसार में निर्भय रहते हैं अर्थात् इस असार संसार से मुक्त हो जाते हैं

काशी प्रदक्षिणा येन कृता त्रैलोक्य पावनी।
सप्तद्वीपा साब्धिशैला भूः परिक्रमिताऽमुना।।

—नारद पुराणे अ. ६

हे भवानी जिसने काशी की प्रदक्षिणा यात्रा की है। उसने त्रैलोक्य पावनी सातद्वीप, सात समुद्र, सम्पूर्ण पर्वतों के सहित समस्त पृथ्वी की प्रदक्षिणा सम्पन्न कर ली। वह पुरुष निष्पाप, पुण्यवान एवं कृतार्थ होकर चौरासी लाख योनि से छूटकर शिव सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है।

इमां यात्रां नरः कृत्वा क्षेत्रेस्मिन्मुक्तिजन्मनि।
न दुःखैरभिभूयेत इहामुत्रापि कुत्रिचित्।।७२।।

(का.खं.अ. १००)

अर्थ- मुक्ति के जन्म स्थान काशी क्षेत्र में यात्रा करने से इहलोक तथा परलोक में मनुष्य दुःखों से पीड़ित नहीं होता।

पूर्वस्मिन्दिवसेढुण्ढिम्पूजयित्वा हविष्यमुक्।
प्रातरुत्तरवाहिन्यां स्नात्वा विश्वेशरमर्चयेत्।।
पुनर्यात्रार्थमपि च शिवयोः पूजनम्भवेत्।

—काशी रहस्य

इसके पश्चात् सर्वप्रथम दण्डपाणि जी का पूजन करके यात्रा आरम्भ करें- १. दण्डपाणिभ्यो नमः-म.नं. सीके. ३६/११, मु. ढुण्ढिराज गली। ढुण्ढिराजाय नमः- म.नं. सीके. ३५/२७, सावित्री फाटक-दर्शन-पूजन कर प्रार्थना करें।

यथा प्रदक्षिणा कार्या मनुजैर्विधिपूर्वकम्।।

काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा दर्शन-पूजन यात्रा

२. विश्वेश्वराय नमः आदि के दर्शन करके ज्ञान कूप एवं नदी के मध्य में बैठकर संकल्प लेकर चन्द्रदेव व्यास तीर्थ पुरोहित जी को दक्षिणा देकर यात्री ज्ञानवापी से कीर्तन करते हुए फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा तिथि के दिन प्रातः ८ बजे आदिविश्वेश्वर के दर्शन करके, चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा ज्ञानवापी से साधु-संतों एवं महात्माओं को साथ में लेकर चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा हेतु दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती अपने शिष्यों एवं भक्तों के साथ यात्रा प्रति वर्ष प्रारम्भ करेंगे।

श्रीगंगणपये नमः (कहते हुए चलते हैं)।

गणेशजी का स्मरण करते हुए अपना अत्यावश्यक सामान साथ में लेकर चलें। यात्रा में सुविधा हेतु बाँसफाटक के फूलमण्डी के पास ट्रक एवं किसान ट्राली, गाड़ियाँ रहेंगी उसी में सामान रखकर दर्शन-पूजन करते हुए चलें।

(नोट- यात्रियों से निवेदन है कि सभी यात्री धीरे-धीरे एक रफ्तार से कीर्तन करते हुए लाइन से चलें। एक साथ चलने से शरीर में थकावट नहीं आती है। यात्रा करने वाले को काशी विश्वनाथ जी का यह वरदान है। "हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे"

कीर्तन करते हुए शनैः शनैः पैदल चलें।

'काशी विश्वनाथः शरणं मम' कहते हुए सब 'हर हर महादेव शम्भो काशीविश्वनाथ गंगे' कीर्तन करते हुए ज्ञानवापी से मणिकर्णिका तीर्थ में जाँय।

नोट– किसी कारणवश काशी विश्वनाथ के दर्शन करने और ज्ञानवापी में संकल्प लेने में असमर्थता हो तो आदिविश्वेश्वर जी के मंदिर में दर्शन कर काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा में जाने के लिए संकल्प लेना चाहिए।

काशी की बृहद चौरासी कोस परिक्रमा करने के लिए मैं दीन दुःखी असहाय, गरीब, व समस्त श्रद्धालु भक्तों का आवाह्न करता हूँ। प्रत्येक पड़ाव के आस-पास के श्रद्धालु भक्त, पुजारी, प्रधान एवं ब्लाक प्रमुख और विधायक सब मिलकर यात्रा करने वाले यात्रियों को रहने व भोजन, जलपान की सुन्दर व्यवस्था करें।

पौराणिक मणिकर्णिका घाट के श्मशान स्थल का इतिहास

काशी के मर्णिकर्णिका घाट के श्मशान स्थल का सूक्ष्म रूप से वर्णन करते हैं। सत्ययुग में काशी विश्वनाथ जिस दिन काशी आये उसी दिन मणिकर्णिका घाट में जाकर (स्वयं विश्वनाथ जी ने) त्रिशूल से एक मीटर लम्बा चौड़ा और एक मीटर गहरा कुण्ड खोद कर मंत्र द्वारा अग्नि प्रज्ज्वलित करके श्मशान भूमि को बरदान देते हुए बोले यह मेरा धूनी स्थान है यहाँ पर अखण्ड अनादि काल तक अखण्ड अग्नि जलती रहेगी, यहाँ मरे हुए शवों (मुर्दा) का दाह संस्कार होगा विश्वराष्ट्र से काशी के श्मशान घाट पर जलाए गये शवों का पुनर्जन्म नहीं होगा। इसी मुक्ति भवन में मैं भी प्रतिदिन आऊँगा और रहूँगा,

कहकर विश्वनाथ जी अन्तर्ध्यान हो गये।

समस्त प्राणियों के पितरों के तर्पण का वर्णन

आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं जगत्तृप्यत्वितिऽब्रुवन।
क्षिपेत् पयो अंजलींस्त्रींस्तु कुर्यात् संक्षिप्त तर्पणम्।।

अर्थ– जो मनुष्य काशी में मंदिर, तालाब कुएँ और तड़ाग आदि में स्नान करने के पश्चात् गंगाजी आदि नदियों में या घर में जहाँ कही भी स्नान किया, उसी जगह तीन बार सूर्य नारायण को अर्घ्य देने के बाद तीन बार तर्पण करें।

आयुः प्रजां विद्यां स्वर्ग मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्य पितरः श्राद्ध तर्पिता।।

(वृहत् सनातन धर्म मार्तण्ड से)

अर्थ– श्राद्ध करने से तृप्त पितृ (पितर) श्राद्ध करने वाले व्यक्ति को अपने सन्तान को दीर्घायु, सन्तान, धन और विद्या, सुख राज्य, स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करते हैं।

काशी में गया तीर्थ का वर्णन

काशी में पितरों को मुक्ति देने वाली काशी की गया तीर्थ मणिकर्णिका घाट एवं मणिकर्णिका पुष्करणी कुण्ड के बगल में गुप्तेश्वर मन्दिर के उत्तर बगल फल्गु नदी पहले बहती थी। घाट बनाने वालों ने वह श्रोत दबा दिये हैं। गर्मी के दिनों में आज भी सिढ़ी के नीचे से गंगा जी में फल्गु नदी मिलती है। अतः फल्गु नदी और गंगा जी का संगम है।

गंगा फल्गु तीर्थाय नमः

काशी में गया तीर्थ मणिकर्णिका घाट में स्थित है। और गया तीर्थेश्वर घाट के उपर है।

माता-पिता एवं गुरूजी की सेवा और श्राद्ध करना अनिवार्य है

जीवतो वाक्य करणत् मृतायै भूरि भोजनात्।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता।।

अर्थ- माता, पिता गुरुजनों की वृद्धावस्था में उनकी सेवा और आज्ञा का पालन करने वाले नर-नारी मुक्त हो जाते है माता-पिता के मर जाने पर दैहिक संस्कार करे, ब्राह्मण भोजन कराने से तथा काशी में और गया तीर्थ में जाकर पिण्डदान करने से पुत्र का पुत्रत्व पूर्ण सिद्ध होता हैं अर्थात उक्त तीनों कार्यों का सम्पादन ही पुत्रत्व का द्योतक है। उपर्युक्त-तीनों कार्यों को जो करता है, वही पुत्र है। शास्त्र का वचन है कि इन तीनों कार्यों को जो व्यक्ति श्रद्धा एवं विश्वास पूर्वक करता है उसके दैहिक-दैविक एवं भौतिक तीनों कष्ट दूर हो जाते हैं। दूसरे पञ्चक्रोशी मार्ग में कपिल धारा में प्रत्येक अमावस्या और सोमवती अमावस्या के दिन स्नान तर्पण पिण्ड दान करने वालों का मेला लगता है।

प्रश्न- भागीरथी गङ्गा जी के काशी में आने से पहले काशी में कौन सी नदी बहती थी।

उत्तर- पद्म पुराण में लिखा है कि विद्या नाम की नदी पहले से ही बहती थी।

मणिकर्णिका घाट में पुष्करणी कुण्ड के स्रोत और गंगा जी के संगम पर मार्जन आचमन करके सिन्धिया घाट से पञ्चगंगाघाट नौका में बैठकर जयकारा एवं कीर्तन करते हुए गंगा पार करके काशी और गंगा जी का फोटो खींचकर और डुमरी गाँव में हनुमान जी के दर्शन, पूजन करके मन्दिर के पूर्व बगल से उत्तर जाने वाली सड़क से आगे से पूर्व जी.टी. रोड पार करके साहूपुरी कारखाना में जाने वाली सड़क

से बखरा गाँव होते हुए चाँदीतारा गाँव में व्यासेश्वर में व्यास आश्रम में जाकर चौरासी कोस की यात्रा करने वाले धर्मशाला, पेड़ के नीचे एवं विद्यालय में झाड़ू लगाकर सफाई करा दें। दर्शनार्थी के मन्दिर में पहुँचते ही आश्रम के महन्त पुजारी विद्यालय के अध्यापक और प्रधान आदि मंदिर के भक्त सब मिलकर यात्रियों का स्वागत करें और दर्शनार्थियों को रात्रि विश्राम करने एवं जलपान आदि की व्यवस्था करें। चौरासी कोस की यात्रा करते हुए पड़ाव में पहुँचते ही मन्दिर के पास पेड़ के नीचे और मैदान में धर्मशाला एवं विद्यालय में जहाँ जगह पायें वहीं पर मन्दिर के पास में ही सामान रखकर के स्नान एवं संध्या करने के पश्चात् पूजा की सामग्री, गंगाजल, फूल-अक्षत आदि साथ में लेकर व्यासेश्वराय नमः बोलते हुए मन्दिर में दर्शन करने जाना चाहिए।

व्यासेश्वर मन्दिर, चाँदी तारा गाँव, जिला- चन्दौली, थाना-अलीनगर के अन्तर्गत है।

६. व्यासकुण्डकूप तीर्थाय नमः।

७. व्यासेश्वराय नमः।

८. सरस्वतीदेव्यै नमः।

९. व्यासगणेशाय नमः

विद्वान् यहाँ पर अभिषेक तथा शिव महिम्न व शिव ताण्डव-स्तोत्र का पाठ करते हैं और यात्री पंचोपचार पूर्वक श्रद्धा-भक्ति से युक्त होकर पूजन करें जिससे आपके मनोरथ पूर्ण होंगे।

व्यासेश्वर का प्रमाण लिंगपुराण, पद्मपुराण और स्कन्द आदि पुराणों में वर्णित है। व्यासेश्ववर जी का यह पौराणिक मन्दिर है और सिद्धपीठ है। काशी की परंपरा के अनुसार काशी के विशिष्ट नागरिकों की व्यासेश्वर के प्रति श्रद्धा के चलते एक परंपरा बनी हुई है। इसके अनुसार माघ महीने में काशी के तमाम श्रद्धालु भक्त स्नान, मार्जन

करके पोखरा के किनारे भोजन बनाकर व्यासेश्वरजी को अर्पण करने के पश्चात् प्रसाद पाते थे, जिसके अभी भी दर्शन होते हैं।

नोट- व्यासेश्वर का इतिहास शिव प्रसाद पाण्डेय जी ने अपने स्तर से चाँदी तारा गाँव के व्यासेश्वर मन्दिर के विशाल दर्शन मेला का वर्णन करते हुए सन् १९१५ ई० में "काशी के मन्दिर महात्म्य" नाम की पुस्तक में ५५ पृष्ठों में विस्तार से वर्णन है। व्यासेश्वर मन्दिर के पूर्व बगल में जब साहूपुरी का कारखाना लगा, तो कारखाने के मालिक ने ४ बीघा जमीन और व्यासेश्वर तीर्थ के पोखरा कुण्ड को दीवार खड़ा करके अपने घेरे में ले लिया। इसके बहुत पूर्व रानी भवानी ट्रस्ट ने कुण्ड और पोखरे का जीर्णोद्धार कराया था। जिसे वर्तमान में मिट्टी डालकर पाट दिया गया है।

व्यासेश्वर मंदिर के विकास के लिए इस स्थान को सम्यक् विकासोन्मुख बनाने के लिए हर संभव प्रयास किये जाएँ। दो बिस्वा का धर्मशाला बनायें और धर्मशाला के बाहर एक बिस्वा जमीन गाड़ी खड़ी करने के लिए छोड़कर धर्मशाला बने। जो यात्रा के समय यात्रियों एवं अन्य समयों में क्षेत्रीय लोगों को पूजा-पाठ, अनुष्ठान, विवाह आदि उत्सवों में आवासीय सुविधा प्रदान करता रहेगा। इस कार्य के लिए सरकारी एवं सांसद कोष से राशि मिलनी चाहिए। व्यासेश्वर मंदिर के विस्तार हेतु विजय शंकर पुजारी एवं स्थानीय जनता तथा विधायक, प्रधान और लेखपाल अरुण कुमार साह इत्यादि सभी को मिलकर व्यवस्था करनी चाहिए।

चौरासी कोस की यात्रा में किसी प्रकार की कोई कठिनाई का सामना यात्रियों को न करना पड़े। साथ-ही-साथ काशी की चौरासी कोस यात्रा का प्रचार एवं प्रसार करने एवं करवाने की व्यवस्था करें।

यात्रा के दौरान एक अद्भुत घटना के अनुसार आषाढ़ शुक्ल पंचमी तिथि दिनांक ३० जून सन् २००६ ई० दिन में १ बजे व्यासेश्वर

जी के मंदिर का विधिवत् पूजन करके मंदिर के पूर्व बगल में बरगद के पेड़ के नीचे चबूतरे पर दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज पद्मासन में बैठे थे। व्यासेश्वर जी के मन्दिर की तरफ देख रहे थे। उसी समय व्यासेश्वर मंदिर से पूर्वाभिमुख होकर एक महात्मा चलते हुए मंदिर के बरामदे में स्वामी जी को दर्शन दिये। ललाट में त्रिपुण्ड, गौरांग शरीर, सफेद बाल, मोटा यज्ञोपवीत एवं सफेद कटिवस्त्र पहने हुए स्वामीजी को व्यासजी दर्शन देकर मंदिर में चले गये। स्वामी जी तुरन्त उठकर मंदिर में गये परंतु पुनः महात्मा जी के दर्शन नहीं हुए। स्वामी जी व्यासेश्वर जी की स्तुति करने लगे।

नोट–दूसरे दिन प्रातः स्नान, संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर दूसरे पड़ाव में जाने के लिए कीर्तन करते हुए व्यासपुर, नाथूपुर गाँव से होते हुए दुर्गा मन्दिर जायँ, वहाँ स्थित दुर्गाजी का तीर्थ दुर्गा सरोवर है, उस स्थान पर दुर्गाजी का बड़ा विशाल मंदिर है। मंदिर में दर्शन करके आगे बढ़ना चाहिए।

१०. दुर्गातीर्थाय नमः।

११. श्री दुर्गेश्वराय नमः।

१२. सिद्धिविनायकाय नमः।

१३. दुर्गादेव्यै नमः।

१४. छिन्नमस्तादेव्यै नमः।

दुर्गाजी के दर्शन, पूजन करने वाले नर-नारी के दुःख दरिद्रता, संकट आदि दूर हो जाते हैं और सुख-शान्ति, धन-सम्पत्ति प्राप्त होती है।

दुर्गा जी का प्राचीन मन्दिर है। रामनगर की विश्वप्रसिद्ध काशी के रामनगर की रामलीला दुर्गाजी के मंदिर से भाद्र शुक्लपक्ष अनन्त चतुर्दशी के दिन से प्रारम्भ होती है तथा आश्विन शुक्ल शरद पूर्णिमा

के दिन रामलीला समाप्त होती है। प्रति वर्ष प्रतिदिन लगभग ५० हजार लोग रामलीला के दर्शन करने आते हैं। दुर्गाजी से पंचवटी मधुवनेश्वर रामसरोवर पोखरा के दर्शन करें। यहाँ के इष्टदेव–

१५. रामेश्वर हैं। (दर्शन करके आगे चलें)।

अशोक वाटिका और लंका के बीच से दक्षिण विश्वसुन्दरी सड़क जी.टी.रोड को पार करके "ढुण्ढि पुल" शंकर कॉलोनी होते हुए रतनबाग बिन्दु सरोवर विशाल तीर्थ-पोखरा है।

बालात्रिपुरसुन्दरी देवीजी का मंदिर काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का केन्द्र बिन्दु है। परिक्रमा में जाते तथा आते समय श्री देवीजी का दर्शन करना अनिवार्य है।

काशी सर्वाऽपि विश्वेशरूपिणी नात्र संशयः।
आश्चर्यकारिपरमं काशी भक्ति प्रवर्धनम्।।

–का०ख०

अर्थ– समस्त काशी शिवरूपा है इसमें संशय नहीं है। महान-आश्चर्य कारिणी काशी भक्ति की वृद्धि करती है और भुक्ति-मुक्ति भी प्रदान करती है।

बाला त्रिपुर सुन्दरेश्वराय नमः।

बाला त्रिपुर सुन्दरी दुर्गा देव्यै नमः।

दुःखहरण गणेशाय नमः। (रतनबाग)

दुर्गा धाम में दर्शन करने वाले भक्त के प्रत्यक्ष फल का वर्णन :– श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर पूजा की सामग्री साथ में लेकर देवीजी के स्मरण करते हुए जाकर दर्शन, पूजन करने वाले नर-नारियों को आपत्ति, दुःख, संकट एवं रोग को भक्तों से दूर करती हैं। दर्शन करते ही दुःखी सुखी हो जाते हैं, रोगी निरोगी होते हैं, गरीब

को दुर्गाजी धनी कर देती हैं। ज्ञान के इच्छुक जिज्ञासा वाले भक्तों को भक्ति एवं ज्ञान देती हैं।

एक महात्मा जी का दर्शन :- दिनांक २५-०१-२००६ ई० को दण्डीस्वामी शिवानन्द सरस्वती जी बाला त्रिपुर सुन्दरी दुर्गाधाम में दर्शन करने के लिए जा रहे थे बिन्दु सरोवर पोखरा कुण्ड से एक विशाल शरीरधारी और सफेद कटी वस्त्र पहिने साधु ऊपर आ रहे थे, स्वामीजी को उनका दर्शन होते ही अचानक स्वामीजी की वृत्ति दृश्य बदल गया। पाँच मिनट के पश्चात् वह महात्मा अदृश्य हो गये। स्वामी जी वहीं पर बैठकर अपने इष्टदेव जी से प्रार्थना करने लगे। १५ मिनट के पश्चात् स्वामी जी मन्दिर में दर्शन करने चले गये।

बाला त्रिपुर सुन्दरी दुर्गाजी के मन्दिर का इतिहास

काशी सोऽयम यात्रा नामक पुस्तक के २५ पृष्ठ में राम प्रसाद गौतम जी ने काशी का इतिहास लिखते समय पुरानी हिन्दी भाषा में लिखा है। गौतम जी लिखते हैं कि सोलह शताब्दी के नब्बे में आषाढ़ शुक्ल पक्ष में प्लेग रोग आया जिससे कि ग्रामवासी गाँव छोड़कर भाग गये। उस गाँव का नाम दुर्गावती था। वहाँ पर दुर्गाजी का मन्दिर मिट्टी की दीवार और खर-पतवार से छाया हुआ था। गाँव के बस्ती न होने से देवालय गिरकर मिट्टी में दब गया।

काशी के राजा प्रभु नारायण सिंह को स्वप्न हुआ। रात्रि के एक बजे दुर्गाजी ने स्वप्न में आकर कही कि मैं बरगद के नीचे दबी हुई हूँ। मुझे निकाल कर मेरी स्थापना कर दो। महाराज प्रभुनारायण सिंह ने दुर्गा प्रसाद पाण्डे ओझा जी को बताया कि वहाँ पर उनकी (दुर्गाजी की) मूर्ति है।

काशीराज जी पाण्डेजी और सैनिकों को लेकर स्वयं गये और गाय चराने वाले चरवाहों को साथ में लेकर जंगल में बरगद का पेड़

देखते हुए खोज करते हुए आज जो मन्दिर है वहाँ पहुँचे पाण्डे जी ने खोदकर मिट्टी को निकालकर और राजा को अपने हाथ पर मूर्ति का दर्शन कराये। उस दिन निशान लगाकर पाण्डे जी आदि सब वापस चले गये। आश्विन शुक्ल महाष्टमी के दिन पुनः जाकर तीन दिन तक पूजा करके संकल्प काशी नरेश जी ने किया कि विशाल मंदिर बनायेंगे। मनौती मानकर मूर्ति को गंगा किनारे के मन्दिर में रखा गया महाशिवरात्रि के दिन मन्दिर बनना प्रारम्भ हुआ उसी मन्दिर के जमीन पर बालात्रिपुरसुन्दरी दुर्गा मन्दिर बना है, पोखरा भी प्राचीन जगह पर विशाल बिन्दु सरोवर तीर्थ क जीर्णोधार हुआ जो आज भी है। यह बालात्रिपुर सुन्दरी जी का इतिहास रतनबाग में दुर्गाधाम है।

नोट : बालात्रिपुरसुन्दरी देवीजी का मन्दिर काशी की वृहत् चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा में केन्द्र बिन्दु है। परिक्रमा में जाते तथा आते समय श्रीदेवी का दर्शन करना अनिवार्य है। रतनबाग से उत्तर बगल से पूर्व हमीदपुर एवं पटनवाँ गोपालपुर गाँव में शंकर जी का मन्दिर है, दर्शन करते हुए चलें।

११. भुवनेश्वराय नमः

बरईपुर नारायणपुर होते हुए बैकुण्ठपुर में स्थित विष्णु धाम मिर्जापुर में जायें। विष्णुधाम का विष्णुपुराण में विस्तार से वर्णन आया है।

१२. वैकुण्ठतीर्थ कुण्डकूप तीर्थाय नमः।

१३. वैकुण्ठेश्वराय नमः। वैकुण्ठपुर

१४. विकटा दुर्गादेव्यै नमः।

तत्रैव विकटा देवी सर्वदःखौद्यमोचनी।
पञ्चमुद्रं महापीठं तज्ज्ञेयं सर्वसिद्धिदम्।।

अर्थ- वहीं पर समस्त दुःखमोचनी विकटा देवी भी हैं, वह

स्थान सर्वसिद्धि दायक पञ्चमुद्र नामक महापीठ है।

१५. शालटंक विनायकाय नमः।

वैकुण्ठेश्वर के दर्शन करने वाले नर-नारियों के दुःख, संकट, रोग आदि का नाश हो जाता है और सम्पत्ति भक्ति सुख प्राप्त होता है।

विभिन्न यात्रा के दौरान यात्राकर्ता सज्जनों को भौतिक एवं पराभौतिक विचित्र अनुभव हुए हैं। स्वामी जी मंदिर में दर्शन करने जा रहे थे तो दो विशाल सांपों का दर्शन मन्दिर के बरामदे में हुए। सर्प मन्दिर में गये। स्वामी जी भी मन्दिर में गये। सांप लुप्त हो गये। स्वामी जी कहते हैं कि इस स्थान पर पत्थर का नाग बनाकर मंदिर में मूर्तिरूप में नाग देवता की प्रतिमा स्थापित करना चाहिये।

यात्री पड़ाव में पहुँचते ही दर्शनार्थियों से निवेदन है कि पेड़ के नीचे मन्दिर में और विद्यालय में जाकर सफाई करके जलछीट करके समान रखकर स्नान संध्या करके दर्शन पूजन करने के पश्चात् अपने-अपने सामान को रखकर जलपान और भोजन करके तीन बजे से कीर्तन कथा और सतसंग करके (सूचना- कोई-कोई दर्शनार्थी यात्री रात को कथा, सत-संग और प्रवचन करते हैं।) सत्संग के पश्चात् मार्जन, स्नान, संध्या करके मन्दिर का दर्शनकर जलपान करने के पश्चात् आपस में सतसंग कर चौरासी कोस यात्रा के देवी देवताओं का स्मरण करते हुए रात्रि में विश्राम करें।

यहाँ पौराणिक ऐतिहासिक विष्णुधाम होने के कारण श्रीदण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी इस स्थान पर किसी विशिष्ट भक्त के साथ भ्रमण हेतु चले। एक अन्य घटना के अनुसार आषाढ़ शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि तदनुसार ३० जून २००६ ई० को दिन में एक बजे सड़क

से मन्दिर जा रहे थे उसी समय एक महात्मा का उन्हें दर्शन हुए।

मन्दिर के दलान में उत्तराभिमुख होकर श्रीवैष्णव साधु ललाट में ऊर्ध्वपुण्ड्र लगाये, बीच में श्रीचिन्ह लगाये, सिर में सफेद जटा और सफेद वस्त्र पहने हुए खड़े थे। वे संत भी मन्दिर में गये। स्वामी जी साधु का दर्शन करने के लिये मंदिर में गये। परंतु उन्हें सन्त के दर्शन नहीं हुए।

नोट-स्वामी जी का वैकुण्ठेश्वर के भक्तों से निवेदन है कि मन्दिर में किसी विष्णुभक्त साधु को रखने से गाँव और मंदिर का विकास होगा।)

बैकुण्ठ धाम का इतिहास

सन् १९३० ई. में छपी हुई 'काशी यात्रा' नामक पुस्तक के ४५वें पृष्ठ में पुस्तक के लेखक हरिशंकर तिवारी जी ने लिखा है कि उस काल के मंदिर के महन्त हरिदास 'रामानन्द संप्रदाय' के साधु थे, उन्होंने मंदिर के नाम से दस बीघा जमीन संयोजित की थी। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी की शिष्य परम्परा में विश्व राष्ट्र के मठ, मंदिर, आश्रम में रहकर सनातन धर्म का प्रचार करते हैं विष्णुधाम वैकुण्ठपुर के भक्त आदि सभी मिलकर मंदिर, पोखरा आदि का जीर्णोद्धार करा दें और मंदिर के उत्तर पीपल के बगल में दो बिस्वा भूमि में धर्मशाला बना दें। हनुमानदास पुजारीजी व्यवस्थापक जी, ज्ञानदास प्रधान एवं विधायक जी सब मिलकर धर्मशाला बनाने की व्यवस्था करें। दूसरे दिन प्रातः स्नान, संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर "हर-हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गंगे" कीर्तन कहते हुए पुनः यात्रा प्रारम्भ करें। सभी दर्शनार्थी वैकुण्ठपुर से पुरुषोत्तमपुर परसोधा रेलवे फाटक पार करते ही पश्चिम बगल में शिव शंकरी धाम दीक्षितपुर देवी हैं। देश-विदेश से यात्री

शिवशंकरी गौरी देवी के दर्शन करने आते है। यह एक रमणीय स्थल है। इसका प्रमाण स्कन्दपुराण में वेद व्यास जी लिखते है। चैत्र शुक्ल पक्ष में विशाल दर्शन, पूजन मेला लगता है।

१६. शिवशंकरेश्वराय नमः।

१७. सेना विनायकाय नमः।

१८. शिवशंकरीगौरीदेव्यै नमः।

१९. विमलादित्याय नमः।

शिवशंकरी देवी के दर्शन करने वाले भक्तों को धन-सम्पत्ति, सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है और रोग एवं संकट से छुटकारा मिलता है।

सूचना - कुछ अवांछनीय तत्त्वों ने शिवशंकरी देवी के मन्दिर की जमीन पर अपना कब्जा कर लिया है और अपने नाम से मंदिर की जमीन खतौनी में दर्ज करा लिया है। अतः जज साहब आपसे प्रार्थना है कि इसका कब्जा समाप्त कराके मुक्त कराकर जमीन को शिव शंकरी मंदिर के नाम से करा दें। यह एक सिद्ध पीठ है।

कैलहट बाजार में राजकीय इण्टर कॉलेज है। कमलेश्वर का दर्शन कर चलें। कैलहट बाजार होते हुए जमुई में २१. जमुनेश्वराय नमः पावर हाउस इण्टर कालेज।

यह बल्लभाचार्य जी की तपोभूमि है। गोस्वामी विट्ठलदास जी की जन्मभूमि है और बावन भगवान का चरणार्द नाम से प्रसिद्ध है। यह सुन्दर रमणीय स्थान है तथा सिद्धपीठ है। देश और विदेश से लोग मन्दिर में दर्शन करने जाते हैं।

२१. गोपालकुण्ड-तीर्थाय नमः।

सूचना-बल्लभाचार्यजी का इतिहास

बल्लभाचार्य जी ने भारत शास्त्रार्थ दिग्विजय करते हुए भारत के कोने-कोने में जाकर सनातन धर्म का प्रचार करते हुए तथा विद्वानों से शास्त्रार्थ करते हुए उन्हें पराजित करते हुए इसके पश्चात् भारत दिग्विजय करते हुए काशी की दक्षिण सीमा पर जाकर चुनार किला के पूर्व बगल में गोपाल महामंत्र का पुरश्चरण पूर्ण किये, फिर उसी स्थल पर रहने लगे। बालकृष्ण गोपाल जी का प्रमाण ब्रह्मवैवर्तपुराण में विस्तार से वर्णित है। यहाँ पर बल्लभाचार्यजी का दिव्य आश्रम है। बल्लभाचार्य धाम में बिट्ठल गोस्वामी जी प्रकट हुए थे अतः यहाँ बल्लभाचार्य जी की तपोभूमि है। यह बिट्ठल गोस्वामी जी की जन्मभूमि है और यह स्थान "चरणार्दस्थल" के नाम से प्रसिद्ध है।

२२. गोपालेश्वराय नमः। -बल्लभाचार्य धाम

बल्लभाचार्य जी के आश्रम में दर्शन करके। प्राचीन बालूघाट के ऊपर अगस्तीश्वर के मंदिर के पास चौरासी कोस परिक्रमा का पड़ाव थाना चुनार, जिला मीरजापुर है।

चुनार घाट पर स्थित किले का इतिहास

चुनार घाट पर स्थित किले का इतिहास भारत के इतिहास में वर्णित है। उज्जैन में विक्रमादित्य नामक एक चक्रवर्ती धर्मात्मा राजा थे। उनके भाई भर्तृहरि जी ने काशी के दक्षिण सीमा चुनार किले में तपस्या की थी। उसी समय से चुनार घाट का किला विश्व प्रसिद्ध हुआ।

बालूघाट पर गंगाजी के किनारे हरिद्वार धाम है और मनसा देवी जी की मन्दिर है।

अगस्तीश्वर मंदिर का इतिहास

बालूघाट के ऊपर अगस्तीश्वर जी की प्राचीन एवं सार्वजनिक मंदिर है। किसी व्यक्ति के अधिकार में होने के कारण मंदिर बन्द रहता है। मंदिर में अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं। सबका मंदिर के पुजारी, व्यवस्थापक, सभासद एवं प्रधान और चुनार घाट के व्यापार मंडल तथा सांसद, विधायक सभी लोग मिलकर मंदिर का जीर्णोद्धार और मंदिर के जमीन में धर्मशाला बनवा दें। यह ऐतिहासिक एवं पौराणिक प्राचीन मंदिर है। मंदिर जीर्ण हो गया है। पहले इसी अगस्तीश्वर मन्दिर में काशी की चौरासी कोस यात्रा का तीसरा पड़ाव होता था और हजारों नर-नारी मन्दिर के पास में विश्राम करते थे।

विन्ध्याचल पर्वत का इतिहास

एक बार विन्ध्याचल पर्वत बढ़ते-बढ़ते इतना ऊँचा हो गया कि उसने सूर्यनारायण का मार्ग अवरुद्ध कर दिया। पृथ्वी पर अन्धेरा छा गया। विन्ध्याचल पर्वत के गुरु अगस्त्य ऋषि (जो वाराणसी के अगस्तकुण्डा में काशीवास कर रहे थे) उनसे देवताओं ने प्रार्थना की। काशी (वाराणसी) के अगस्त कुण्डा से विन्ध्याचल जाते समय काशी की दक्षिण सीमा पर चुनार घाट में अगस्त्य ऋषि ने अपने कर-कमलों से शिवलिंग को स्थापित किया था, चौरासी कोस परिक्रमा में अगस्तीश्वर मंदिर का वर्णन है। अगस्तीश्वर मंदिर का वर्णन स्कन्दपुराण एवं पद्मपुराण में मिलता है।

२३. अगस्तीश्वराय नमः।

यहाँ पर अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं। कहा जाता है कि इनका दर्शन करने वाले भक्तों के दुःख, संकट, आपत्ति, रोग एवं गरीबी दूर हो जाती है। अगस्तीश्वर मंदिर के पास में पूजा-पाट, जप, यज्ञ और विवाह आदि उत्सव होते हैं। मंदिर से उत्तर बगल में

चौमुहानी से दाहिने तरफ कुक्कुटेश्वर एवं सिद्धेश्वर जी का मन्दिर है।

२४. कुकुटेश्वराय नमः।

चुनार घाट में स्थित कुक्कुटेश्वर का यह मंदिर है। इनके स्मरण करने मात्र से अशुभ स्वप्न का दोष नाश होता है और दर्शन करने से मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं तथा मनुष्य को वांछित फल प्राप्त कराते हैं। इस प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार कराना आवश्यक है। अतः प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, चुनार सब मिलकर मन्दिर का जीर्णोद्धार करें।

गंगा जी का इतिहास

स्कन्दपुराण के गंगा अवतरण खण्ड में माँ गंगा के पृथ्वी पर अवतरण का इतिहास है। चुनार के बगल में पर्वतमाला से एक छोटी विन्ध्याचल नदी निकलती है। इसी स्थान पर गंगाजी का और विन्ध्याचल नदी का संगम है। गंगा जी गंगासागर जाते समय काशी जी के दक्षिण चुनार किला के पास पहुँची थीं। उसी समय काशी से भैरव, गणेश, दण्डपाणि एवं नन्दी, काशी विश्वनाथ जी के गणों ने वहाँ पहुँचकर गंगाजी का स्वागत किये। गंगा जी ने नन्दी जी से कहा कि मैं काशी में जाकर शिवलिंग की स्थापना करूँगी। काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करूँगी और काशी के नीचले तल में उत्तरवाहिनी गहरी होकर बहूँगी तथा सबसे गहरी होकर काशीवास करूँगी। माँ गंगा जी की यह प्रतिज्ञा सुनकर भैरव, दण्डपाणि आदि गण गंगाजी के आगे-आगे चल पड़े। गंगा जी दशाश्वमेध के पास शिवलिंग स्थापित करके काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करने चली गयीं।

नोट : काशी में गंगा जी द्वारा स्थापित श्री गंगेश्वर का मंदिर प्रयागराज घाट में स्थित सबसे बड़ा मंदिर है। पुतिया स्टेट की महारानी गंगाजी द्वारा स्थापित मन्दिर का जीर्णोद्धार करायी थी। अतः

सभी को दर्शन करना चाहिए। प्रत्येक मन्दिर निर्धारित समय से खुला एवं बन्द रहना चाहिए।

तीसरा पड़ाव से प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर सामान गाड़ी में रखकर मन्दिर का दर्शन करके हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे कीर्तन करते हुए आगे बढ़े।

चुनार घाट से हनुमानधाम कछवाँ बाजार जाने का मार्ग– पुल से गंगा जी पार करके मुन्दीपुर तिराहा से सड़क के दक्षिण बगल में दक्षिणेश्वर का प्राचीन मंदिर है। यात्रीगण यहाँ भी दर्शन, पूजन करके आगे चलें।

२५. वाणेश्वराय नमः। (खानपुर में)

वाणेश्वर का दर्शन नमन करते हुए आगे बढ़ें। खानपुर गाँव में हनुमान् जी का प्राचीन मंदिर है। (खानपुर में वाणेश्वरजी का दर्शन करने के पश्चात् आगे की यात्रा के लिए बढ़ें)।

मन्दिर के भक्त, प्रधान आदि मिलकर मन्दिर का जीर्णोद्धार करायें।

२६. चौरा देव्यै नमः।

२७. अमृतेश्वराय नमः। (खैरा गाँव)

खैरा गाँव में शंकर जी का प्राचीन मन्दिर स्थित है।

२८. शंकटहरेश्वराय नमः। (खैरा गाँव)

२९. पारेश्वराय नमः। (पाहो गाँव)

उक्त देवताओं का दर्शन करते हुए यात्रा करें। पाहो गाँव तुलापुर होते हुए कछवाँ में पहुँचते ही दाहिनी तरफ विशाल कुण्ड-पोखरा है। दक्षिणेश्वर हनुमान मंदिर में जाने का रास्ता दुकानों के बीच से होते हुए दूसरे चौराहे से उत्तर बगल से पूर्व सरस्वती गली में है। यह

हनुमानजी का सिद्धपीठ है।

यात्रा का चौथा पड़ाव-हनुमान धाम, हनुमान मन्दिर, कछवाँ बाजार में है। यह स्थान जिला-मिर्जापुर, थाना-कछवाँ में स्थित है।

चुनारघाट से हनुमानधाम तक की दूरी लगभग २२ किलोमीटर है।

३०. महावीर हनुमते नमः। (कछवाँ बाजार)

३१. पम्पासरोवर तीर्थाय नमः।

३२. हनुमतेश्वराय नमः। (कछवाँ बाजार)

३३. अंजनी दुर्गा देव्यै नमः। (कछवाँ बाजार)

३४. गणेशाय नमः। (कछवाँ बाजार)

यहाँ पर हनुमान चालीसा, सुन्दरकाण्ड, रामायण आदि का पाठ होता है। हनुमानजी के दर्शन का प्रत्यक्ष फल यहाँ प्राप्त होता है। दर्शन-पूजन करने वाले नर-नारियों के दुःख, संकट, रोग एवं दरिद्रता दर्शन करने मात्र से दूर हो जाती है और धन, ऐश्वर्य तथा सुख शान्ति की प्राप्ति होती है। मंदिर के पूर्व बगल में एक पोखरा स्थित है। जिसका नाम पम्पासरोवर हनुमान तीर्थ है। यहाँ प्रत्येक वर्ष रामलीला का आयोजन स्थानीय लोगों द्वारा होता है तथा विजयादशमी को पाँच दिनों का विशाल दर्शन मेला लगता है। हनुमान मन्दिर के पुजारी के पद पर साधु, रामभक्त एवं हनुमान भक्त को रखने से गाँव का भी विकास होगा।

काशी की चौरासी कोस परिक्रमा करने वाले भक्त पड़ाव में पहुँचते ही स्नान, संध्या करके मंदिर में दर्शन करने के पश्चात् पड़ाव की व्यवस्था के अनुसार यात्रियों को वहीं मंदिर के पास पेड़ के नीचे धर्मशाला या विद्यालय में जहाँ स्थान मिल जाय वहीं आसन लगाकर

पूर्ववत् दैनिक कार्य कर लें। ३ बजे से कीर्तन-कथा का श्रवण करके सायं मार्जन स्नान, संध्या करें और जो यात्री जनेऊ नहीं पहिने हैं वह नर-नारी "नमः शिवाय" महामन्त्र का जप करें दर्शन करके "काशी का प्रकाश" स्वरूप पंचक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग के विषय में आपस में बैठकर सत्संग करके मंदिरों का स्मरण करते हुए शयन करें।

हनुमान धाम नाम का प्रमाण-आषाढ़ शुक्ल पक्ष दशमी तिथि के दिन ६ जुलाई २००६ ई० दण्डीस्वामी शिवानन्द सरस्वती जी हनुमान जी के मन्दिर में एक बजे दिन में दर्शन करने पहुँचे। उस समय मंदिर बन्द था। मंदिर के बरामदे में एक तख्त पर पद्मासन में बैठकर वे हनुमान जी की स्तुति कर रहे थे तभी एक विशालकाया वाला वानर स्वामी जी के दाहिने तरफ तख्त पर आकर बैठ गया। लगभग १० मिनट के पश्चात् वानर पूर्व की ओर चला गया। उसी रात्रि में पुनः वहीं हनुमान जी स्वामी जी को दर्शन दिये।

सिद्ध हनुमान मंदिर के विकास के लिए कछवाँ बाजार के व्यापार मण्डल एवं गाँव के गणमान्य, धनी वर्ग अवधेश चौबे, विनय कुमार दूबे रामायणी और दक्षिणेश्वर हनुमान जी के व्यवस्थापक सतेन्द्र कुमार सिंह उर्फ बाबा सिंह, प्रधान, ब्लाक प्रमुख, सांसद, विधायक आदि मिलकर जहाँ पर रामलीला होती थी उसी स्थान पर भरत-मिलाप को लीलारूप में प्रति वर्ष आयोजन कराये जायँ। हनुमान मंदिर के पूर्व एवं मंदिर के नीचे दो बिस्वा में धर्मशाला बनवाया जाय। विधायक जी के कोटे से रुपया प्राप्त होगा। मन्दिर तथा पोखरा के चारों तरफ फल, सुगन्धित फूल, वृक्ष लगाया जाय। दशहरा के समय मंदिर एवं हनुमान जी के मंदिर में पाँच दिन का दर्शन मेला लगता है।

३५. केदारेश्वराय नमः। कछवा बूढ़े महादेव हैं।

केदारंगन्तुकामस्यबुद्धिर्देयानरैरियम् ।
काश्यां स्पृशंस्त्वं केदारं कृतकृत्यो भविष्यसि।।
केदारेशं सकृद् दृष्ट्वा देविमेंऽनुचरोभवेत्।
तस्मात्काश्यां प्रयत्नेन केदारेशंविलोकयेत्।
(काशी खण्ड-अध्याय ७७, श्लोक ६०)

भावार्थ- केदारेश्वर का दर्शन करने की इच्छा प्रगट करने वाले को यह सुझाव देना चाहिए कि तुम काशी में केदारेश्वर के दर्शन, स्पर्श और पूजा करके कृत-कृत्य हो जाओगे। विश्वनाथ जी कहते हैं, हे देवि! केदारेश्वर के दर्शन करने वाले नर, नारी मेरे अनुचर हो जाते हैं, इसलिए काशी में प्रयत्नपूर्वक केदारेश्वर का दर्शन करना चाहिए और दर्शन करके जन्म, मृत्यु रूप चक्कर से छूटकर तथा जीवन पर्यन्त पापों को त्याग कर मेरे कैलाश को प्राप्त करते हैं।

सड़क के पश्चिम बगल में शंकर जी के मन्दिर में दर्शन करें। चौरासी कोस की यात्रा करने वाले यात्रियों और धार्मिक उत्सवों के लिए धर्मशाला बनवाना आवश्यक है।

दूसरे दिन हनुमान धाम से प्रातः स्नान, संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर "हर-हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गंगे" कीर्तन कहते हुए पुनः यात्रा प्रारम्भ करें। हनुमान धाम से कालिका धाम जाने का मार्ग-

कछवाँ बाजार से पश्चिम से बड़ापुर, रामापुर होते हुए रेलवे लाइन पार करके भूतनाथेश्वर का दर्शन करें।

ग्राम में रहने वाले भक्तगण मन्दिर का जीर्णोद्धार करायें।

३६. भूतनाथेश्वराय नमः। (भैशागाँव)

भूतनाथेश्वर का मंदिर भैसागाँव में स्थित है। कछवाँ रोड,

जी.टी. रोड चौराहा से पार करके कपसेठी मार्ग होते हुए उत्तर ठठरा गाँव बैजनाथेश्वर जी के मन्दिर में दर्शन करके अंगिसलापुर, ग्राम पुरुषोत्तम गाँव के चौराहा के पास में शंकर जी का मंदिर है, वहाँ दर्शन करके चलें।

३७. चन्द्रेश्वराय नमः।

पुरुषोत्तमपुर से उत्तर गाँव में हनुमतेश्वर जी का मन्दिर है, वहाँ दर्शन करें। जलपान कर लेवें और दस मिनट विश्राम करके आगे बढ़ें।

३८. पुरुषोत्तमेश्वराय नमः।

शंकर जी का यह मंदिर डोमैला गाँव में स्थित है। दर्शन करके चलें।

३९. शंकरेश्वराय नमः। डोमैला गाँव

सकलपुर गाँव में पोखरा के पास शंकर जी का मंदिर है। यह कपसेठी चौराहा के पास में है। चौराहे से उत्तर बाराडीह होते हुए ब्रह्मेश्वर का दर्शन करके कालिका बाड़ा (कालिका धाम) चलें।

'काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का पाँचवाँ पड़ाव महाचण्डी कालिकाधाम (कालिका बाड़ा) जिला : वाराणसी, थाना : कपसेठी में है। कछवाँ से कालिकाधाम की दूरी लगभग २२ किलोमीटर है।

४०. महाचण्डी कालिका तीर्थाय नमः।

यहाँ कुआँ एवं कुण्ड नलकूप विद्यमान हैं।

४१. महाचण्डी कालिका देव्यै नमः।

४२. कालरात्रेश्वराय नमः। (कालिका बाड़ा)

४३. मंगलाविनायकाय नमः। (कालिका बाड़ा)

४४. अरुणादित्याय नमः। (कालिका बाड़ा)

४५. चण्डभैरवाय नमः। (कालिका बाड़ा)

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां रविभूमिजवासरे।
यात्रां च भैरवी कृत्वा कृतै पापैः प्रमुच्यते।।
कालराज न यः काश्या प्रतिभूताष्टमीकुजम्।।

(काशी खण्ड, अ०-३१, श्लोक ४७)

अर्थ- भैरव जी का और सभी भैरवों का दर्शन करने का विशेष दिन मंगलवार, रविवार, अष्टमी और चतुर्दशी है। इसी दिन दुर्गाजी, महाकाली एवं गौरी आदि देवी के मन्दिर में श्रद्धा-भक्ति से दर्शन करने से पाप-ताप, भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी का भय नहीं होता और शारीरिक, मानसिक चिन्ता दूर होती है। अनेक प्रकार के रोग शान्त होते हैं और मनोकामना की पूर्ति होती है।

श्रद्धा-भक्ति से युक्त होकर जो नर-नारी कालिका देवी का दर्शन-पूजन करते हैं, उनके दुःख, संकट, गरीबी और रोग आदि का नाश हो जाता है और सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है।

कालिकाधाम में शिवप्रसाद गिरी जी महंत हैं एवं मंदिर के भक्त आदि के सहयोग से मन्दिर का जीर्णोद्धार करा रहे हैं और संस्कृत विद्यालय एवं धर्मशाला बना रहे हैं।

नोट- परिक्रमा यात्रा करने वाले यात्री को धाम में पहुँचते ही पूर्ववत् स्नान, संध्या से निवृत्त होकर मन्दिर में दर्शन करने के पश्चात् दुर्गा सप्तशती, दुर्गा चालीसा आदि का पाठ करना चाहिए। जलपान, भोजन करके तीन बजे से कीर्तन एवं प्रवचन श्रवण करके सायं ५ बजे स्नान, मार्जन, संध्या, गायत्री मंत्र जप करें जो नर-नारी जनेऊ नहीं पहनते हैं वे केवल शिव पंचाक्षरी मंत्र का ही जाप करें। पुनः मंदिर में दर्शन करते हैं। इसके पश्चात् यात्री अपने-अपने आसन पर बैठ कर काशी की चौरासी कोस परिक्रमा माहात्म्य की

चर्चा एवं सत्संग करें हुए आराम करें।

इतिहास : इस पड़ाव में दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी को एक महापुरुष के दर्शन हुए। आश्विन शुक्ल चतुर्थी तिथि तदनुसार दिनांक २६ सितम्बर सन् २००६ को १२ बजे कालिकाधाम में दक्षिण फाटक पर पहुँचे। वहाँ वे चापाकल से स्नान करके मन्दिर के गेट की तरफ चले। उसी क्षण सामने एक महापुरुष का दर्शन उन्हें हुआ। जैसे वाराणसी के केदार घाट मुहल्ले में एक हाथ में मोर के पुच्छ तथा दूसरे हाथ में कपूर जलता हुआ आरती लेकर भैरव के दिव्य वेश में सायं चार बजे भैरव जी चलते हैं। वहीं उसी वेश में लगभग ५ वर्ष की अवस्था के एक बालक स्वामी जी के आगे चलकर कालिका देवी के मन्दिर में गये। शिवानन्द सरस्वती जी महाराज मन्दिर में जाकर भैरव जी को खोजने लगे। फिर स्वामी जी को भैरव जी का दर्शन नहीं मिला। उसी दिन रात्रि को उन्हें स्वप्न में उसी बालक रूप में भैरव जी का दर्शन हुआ।

कालिकाधाम मन्दिर के विकास के लिए हर संभव कार्य करें एवं चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का प्रचार और प्रसार करें। यहाँ पर पूजा-पाठ, जप यज्ञ और विवाह आदि धार्मिक अनुष्ठान होते हैं। कुआँ मन्दिर आदि का जीर्णोद्धार करा दें। मन्दिर के पश्चिम एवं दक्षिण में बाजार एवं घनी बस्ती होने के कारण कालिकाधाम मंदिर के दक्षिण, जहाँ कालिकाधाम गेट लगा है, उससे दक्षिण बगल में पूर्व से और मन्दिर के पूर्व बगल से एक सड़क बनवाना अति आवश्यक है। गाड़ी से आने वाले तथा काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा करने वाले तथा नित्य आने वाले भक्तों को सुविधा होगी। परिक्रमा करने वाले यात्रियों को ठहरने एवं गाँव के विविध शुभ कार्यों के लिए यह धर्मशाला बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

मन्दिर के पूर्व बगल में दिनांक १२-०३-२००८ ई. को दण्डीस्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज आसन बिछाकर रात्रि ११ बजे श्री काशी विश्वनाथ जी का ध्यान कर रहे थे। स्वामी जी पद्मासन में बैठे थे, विशाल काला नाग स्वामी जी का परिक्रम करके कुआँ और मन्दिर के बीच से जंगल में चला गया। अजय शर्मा जी पास से देख रहे थे।

कालिकाधाम से भवानी जाने का मार्ग : दूसरे दिन प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर ट्राली में सामान रख करके मन्दिर में दर्शन के पश्चात् सब एक साथ मिलकर "हर हर महादेव शंभो, काशी विश्वनाथ गंगे" कीर्तन करते हुए पुनः यात्रा प्रारम्भ करें। कीर्तन करते हुए चलने से थकावट नहीं आती है।

कालिकाधाम से उत्तर वरुणापुल पार करते ही कुरु चौराहे से उत्तर और कटूक गाँव का यह मन्दिर जो वरुणेश्वर मन्दिर के नाम से जाना जाता है।

४६. वरुणेश्वराय नमः।

हसनपुर गाँव सांईपुर में चौराहे के पास मन्दिर स्थित है। दर्शन करके चलें। शंकरजी का मंदिर, कुँआ ढेलारी गाँव में स्थित है। इस मंदिर का दर्शन करके आगे बढ़ें।

अनेई बाजार में बस अड्डा से पश्चिम बगल में भद्रकाली एवं भद्रेश्वर का मन्दिर स्थित है।

४७. भद्रकाली दुर्गा देव्यै नमः। (अनेई गाँव)

४८. उपशान्तेश्वराय नमः। (अनेई)

तस्य लिङ्गस्य संस्पर्शात्परां शान्ति समृच्छति।
उपशान्त शिवं लिङ्गं दृष्ट्वा जन्मशतार्जितम्।।

त्यजेद् श्रेयसो राशिं श्रेयो राशिं विन्दति।

अर्थ–उस लिंग के स्पर्श करते ही परम शान्ति आ जाती है एवं उस उपशान्त नामक शिवलिङ्ग के दर्शन करने से सैकड़ों जन्मों के बटोरे हुए पाप पुंज को त्याग कर मंगल राशि को प्राप्त करता है।

दर्शन करके जलपान करने के पश्चात् बस अड्डा से पूर्व बगल में पोखरा है और शंकर जी का मंदिर है।

४९. शिवेश्वराय नमः।

शंकर जी का दर्शन कर आगे चलें। अनेई से उत्तर में इण्टर कॉलेज के पश्चिम बगल से उत्तर भवानी जाने वाली सड़क से असवारी मसहूरगंज चौराहा से सीधे नथईपुर चौराहे से पश्चिम ओर होते हुए भागीरथी महाराज इण्टर कॉलेज नसुपुर यज्ञेश्वर के दर्शन करके चलें, यज्ञशाला नकटी सिद्धेश्वरी भवानी का दर्शन करें।

काशी की चौरासी कोस परिक्रमा का छठवाँ पड़ाव भवानी मन्दिर, थाना फूलपुर जिला–वाराणसी में पड़ता है।

यह एक सिद्धपीठ और पौराणिक मंदिर है। स्कन्दपुराण, पद्मपुराण एवं लिंगपुराण में इस मंदिर का उल्लेख मिलता है।

५०. भवानी तीर्थाय नमः।

५१. भवानीश्वराय नमः।

५२. भवानी देव्यै नमः।

५३. सिद्धिविनायकाय नमः।

५४. सीतांग भैरवाय नमः।

त्रिलोचनस्य नामापि यैः श्रुतं शुद्धबुद्धिभिः।
सप्तजन्मार्जितात्पापात्ते पूता नाऽत्र संशयः।।

(का०खं०, अ. ९८, श्लोक १५, १६)

५५. त्रिलोचनेश्वराय नमः।

भवानी जी की पूजा जो नर-नारी श्रद्धापूर्वक करते हैं, उनके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं तथा दुःख-संकट-दरिद्रता से मुक्ति मिल जाती है।

नोट : सिद्धपीठ में विशेष पूजा करने वाले नर-नारियों के सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण होते हैं। प्रातः घर में स्नान करके शुद्ध धोया हुआ वस्त्र धारण कर, निराहार रहते हुए भक्तिपूर्वक "भवानी देव्यै नमः" मन्त्र का जप करते हुए घर से पूजन की सामग्री, फल, फूल, लाल कपड़ा, धूप, कपूर, अगरबत्ती, मिष्ठान्न और गंगाजल, दीप आदि पूजा के सामान लाल कपड़े की डोली बनाकर दो व्यक्ति कंधे पर लेकर विल्वपत्र और फूल आदि डोली में रख दें लेकर चलें। स्थानीय दर्शनार्थी देशी पञ्चबाजा बजाते हुए दर्शन करने जाते हैं। मनोरथ की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। यदि दिन में निराहार रहकर बिना कुछ खायेपिये श्रद्धा-भक्तिपूर्वक दर्शन एवं पूजन किया जाय तो कार्य अवश्य सिद्ध होगा। सभी भक्त जोड़े सहित अर्थात् पति-पत्नी के साथ में दर्शन, पूजन करें। प्रत्येक मंदिर के सिद्धपीठ में इसी विधान से दर्शन व पूजन करने से असाध्य कार्य भी सिद्ध होते हैं।

यात्री छठे पड़ाव में पहुँचते ही पेड़ के नीचे, धर्मशाला में, विद्यालय में पड़ाव के व्यवस्था के अनुसार जहाँ स्थान मिले वहीं जल छिड़ककर पवित्र करके आसन लगाकर मध्याह्न-स्नान संध्या करके मन्दिर में पूजन करने के पश्चात् जलपान कर दुर्गा अर्चना नाम की दुर्गा सप्तशती का पाठ करें। पूर्ववत् भोजन करके तीन बजे से कीर्तन, प्रवचन श्रवण करें। पुनः सायं स्नान, संध्या और दर्शन करके अपने-अपने आसन पर बैठकर सत्संग करें। चौरासी कोस की मार्ग के देवी-देवताओं का स्मरण करते हुए विश्राम करें।

नोट : मंदिर के विकास के लिए आश्रम से सटे पश्चिम भाग में सिन्धु सरोवर तीर्थ पोखरा है। पोखरे के बगल में २ बिस्वा भूमि की धर्मशाला बना दें एवं गाड़ी खड़ा करने के लिए दो बिस्वा जमीन धर्मशाले के हवाले छोड़ दें और मन्दिर की जमीन के चारों तरफ दीवार उठाकर वहाँ की जमीन को घेर करके गेट लगा दें। प्राचीन काल में नकटीश्वरी जी के मन्दिर के आस-पास का इलाका जंगल था सीपाराम (संत) महंत जी ने बहुत परिश्रम से मन्दिर एवं जमीन को व्यवस्थित एवं सुरक्षित किया। उन्होंने संस्कृत विद्यालय एवं प्राइमरी हाईस्कूल आदि अनेक विद्यालयों का निर्माण कराया तथा मन्दिर एवं आश्रम बनवाये और मंदिर में जप, यज्ञ, व्रतबंध एवं विवाह आदि भी होते हैं। हजारों व्यक्तियों को रोजगार दिलाया है। यहाँ पर धार्मिक अनुष्ठान होते हैं, विवाह दिन में होते हैं।

नोट : किसी भी मंदिर में रात्रि में विवाह करना मना है। अनिल तिवारी प्रधान जी, व्यासदास पुजारी और विधायक जी एवं मंदिर के भक्तगण सब मिलकर विशाल मंदिर बना रहे हैं।

नकटी गाँव भवानी देवी का प्राचीन इतिहास

"काशी-यात्रा" नामक पुस्तक के एक सौ पैतालिसवें पृष्ठ में नकटी गाँव का इतिहास सन् १८३०ई० महाशिवरात्रि को शिवप्रकाश पाण्डे जी अपनी प्रकाशित काशी यात्रा पुस्तक में भवानी देवी के विषय में लिखते हैं कि सन् अट्ठारह सौ पच्चीस में प्लेग (चूहों द्वारा पैदा होने वाला रोग) आया। बहुत से मानव ब्रह्मलीन हो गये। जो बचे थे वे गाँव छोड़कर चले गये। भवानीश्वरी मंदिर की दीवार मिट्टी की थी। छत घास-पतवार से छा गयी थी। वह मंदिर भी वर्षा ऋतु में गिर गया। भवानी के मंदिर के आस-पास ही जमीन के अंदर दब गयी है। खुदाई करते समय ध्यान दें; मूर्ति खण्डित न हो। कालान्तर में देवी जो वर्तमान में हैं, प्राचीन मंदिर के पास ही पीपल के पेड़ के नीचे प्रकट हुई हैं।

नकटी गाँव का नाम होने के कारण यहाँ के लोगों की ईष्ट देवी का नाम "नकटेश्वरी देवी" पड़ा है। नकटीश्वरी के आस-पास का स्थान सिद्धपीठ ही है। प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में यहाँ पर एक विशाल पीपल का पेड़ था, जो बहुत प्राचीन है। इसकी विशेषता यह है कि वृक्ष की शाखाओं से देवी जी का पूरा मंदिर घिरा हुआ है, मानो ऐसा लगता है कि देवी जी स्वयं अपनी भुजाओं को फैलाकर आशीर्वाद दे रही हैं। पेड़ इतना हरा-भरा है कि इस स्थान को और भी रमणीक एवं भक्तिमय बना देता है। यहां का दर्शन करने से मनुष्य असत् कर्म छोड़कर सत्कर्म में लग जाता है। यह वृक्ष एक बीघे में फैला हुआ था। दिनांक २५-०६-सन् २००४ ई० को आँधी, वर्षा के द्वारा वृक्ष की शाखाएँ टूटकर मंदिर के चारों तरफ इस ढंग से गिर गयी हैं कि पूरा ढाँचा मंदिर का कवच-सा बन गया है और सभी शाखाओं की जड़ जमीन के अन्दर पकड़ बना चुकी हैं। (सूचना- आश्चर्य है पीपल का पेड़ कहीं भी गिरा हुआ पेड़ जमते दिखाई नहीं देता है) यात्रा

के दौरान एक बार की घटना है कि स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती जी आषाढ़-शुक्ल की नवमी तिथि ५ जुलाई सन् २००६ई० में भवानी के मन्दिर का दर्शन करने के पश्चात् वहाँ स्थित कुएँ एवं नलकूप के पास ही पीपल के पेड़ वाले चबूतरे पर पद्मासन में बैठकर मन्दिर की तरफ देख रहे थे। उसी क्षण करीब पाँच वर्ष की एक कन्या मंदिर से टहलती हुई आकर स्वामीजी के दाहिने तरफ बैठ गयी फिर पाँच मिनट के बाद वह कन्या मंदिर में चली गयी। आशीष सिंह पत्रकार जी ने स्वामीजी से प्रशन किया स्वामी जी बोले यह भवानी देवी हैं। उसी रात्रि को स्वामी जी को स्वप्न में पुनः भवानीश्वरी देवी के दर्शन हुए।

भवानी से सिन्धौरा के रामबाबा आश्रम पशुपतिधाम जाने का मार्ग– दूसरे दिन नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूर्ववत् कीर्तन करते हुए यात्रा प्रारम्भ करें।

भवानी मंदिर के उत्तर फाटक से भवानी गाँव, देवथूवा मलहट होते हुए तिराहा पर दाहिनी तरफ बद्री नारायण धाम है नर-नारायणेश्वर का मंदिर है। यहाँ पर एक कुण्ड एवं पोखरा भी है। यहाँ मलहट गाँव के मंदिर के बद्री नारायण जी का दर्शन करके आगे चलें।

सूचना : चौरासी कोस यात्रा बद्रीनारायण धाम का विकास गाँव के प्रधान श्री रमेश चन्द्र मिश्र वकील और मंदिर के भक्तगण सब मिलकर जीर्णोद्धार करा रहे हैं।

५६. नर-नारायणेश्वराय नमः। (मलहट गाँव)

५७. बद्रीनारायणेश्वराय नमः।

मलहट गाँव से उत्तर जौनपुर जाने वाली सड़क पर आगे से पूर्व करमाईपुर गाँव से सीधे पूर्व चौवे ब्रह्मबावा के मंदिर में बेसिरा एवं हिबरनपुर गांव चेहरा बिन्दा के आगे सूरही गाँव में प्राथमिक विद्यालय

से जी.टी. रोड में पहुँचते ही पूर्व खालिसपुर रेलवे फाटक जाने वाली सड़क से मानीगाँव होते हुए खालिसपुर रेलवे फाटक पार करके बजरंग नगर में शंकर जी के मंदिर में दर्शन करें।

५८. बजरंगीश्वराय नमः।

हिरामनपुर गाँव चारा फैक्ट्री के दक्षिण बगल से कटौना गाँव में कष्टहरेश्वर का मंदिर बन रहा है। यहाँ गाँव के विद्यालय में विश्राम व जलपान करके चलें। गाँव-गाँव होते हुए सिन्धौरा बाजार के पूर्व बगल में सड़क के बाँयें तरफ रत्नेश्वर का प्राचीन मंदिर एवं पोखरा-कुण्ड है। सब मिलकर मन्दिर का जीर्णोद्धार करायें।

५९. रत्नेश्वराय नमः। (सिन्धौरा गाँव)

त्रैलोक्ये यानि वस्तूनि रत्न भूतानि तानि तु।
रत्नेश्वरं समभ्यर्च्य सकृत्प्राप्नोति मानवः।।

—काशी खण्ड

अर्थ– मनुष्य एक बार भी रत्नेश्वर की अर्चना करने से त्रिभुवन भर के सभी रत्नोपम वस्तुओं को पाने का अधिकारी हो जाता है।

पूजयिष्यन्ति ये लिङ्गं रत्नेशं कामवर्जिताः।
ते सर्वे मद्गणा भूत्वा प्रान्ते द्रक्ष्यन्ति मामिह।।

—काशी खण्ड

अर्थ– जो लोग कामना रहित होकर रत्नेश्वर की पूजा करते हैं, वे सब मेरे गण होकर अन्त में यहाँ मेरा दर्शन पाते हैं।

रुद्राणां कोटि जप्येन यत्फलं परिकीर्तितम्।
तत्फलं लभ्यते रत्नेशस्य समर्चनात्।।

—काशी खण्ड

अर्थ– कोटिशः रुद्री जपने में (कोटि रुद्रीय पाठ से जो फल होता , हे देवि! रत्नेश्वर के पूजन करने से भी वही फल प्राप्त होता

है।

सिद्ध हनुमान मन्दिर में राम बाबा इण्टर कॉलेज के पास में रामबाबा आश्रम में "काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का सातवाँ पड़ाव है।" यह सिन्धोरा बाजार थाना फूलपुर, जिला वाराणसी में पशुपति धाम स्थित है। भवानी से पशुपतिधाम तक का मार्ग लगभग २३ किलोमीटर है।

६०. संकटमोचन हनुमते नमः। (सिन्धौरा बाजार)

पशुपाश विमोक्षाय नित्यं काश्यां प्रकाशते।
कार्यात्रा प्रयत्नेन रात्रौ जागरणं तथा।।
पूजयित्वा पशुपतिमुपोषणपरायणाः।
पशुपाशैर्नबध्यन्त दर्शे विहितपारणाः।।

काशीखण्ड - अध्याय ६१, श्लोक १०)

६१. पशुपतीश्वराय नमः। (सिन्धौरा)

६२. नर्मदेश्वराय नमः। (सिन्धौरा)

६३. यक्षविनायकाय नमः। (सिन्धौरा बाजार)

श्री हनुमान जी नर्मदेश्वर मंगल विनायक एवं वरुणादित्य का दर्शन, पूजन करने वाले नर-नारियों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं, असाध्य रोगों से मुक्ति मिलती है, कार्य सिद्ध हो जाते हैं तथा संकट एवं दरिद्रता का नाश होता है।

काशी की चौरासी कोस की यात्रा करने वाले दर्शनार्थी पड़ाव में पहुँचते ही मंदिर की व्यवस्था के अनुसार ही पोखरा के किनारे, पेड़ के नीचे और जहाँ आपको स्थान मिले- विद्यालय में, धर्मशाला में आप वहीं सामान रखकर सभी कार्य पूर्ववत् करें। स्नान, संध्या कर मंदिर में दर्शन करने के पश्चात् हनुमान चालीसा, शिव चालीसा

एवं सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं अभिषेक करें। जलपान, भोजन करके तीन बजे से कीर्तन एवं कथा श्रवण करके सायं संध्या कर अपने-अपने आसन में बैठकर सत्संग करें। चौरासी कोस यात्रा के देवी-देवताओं का स्मरण करते हुए विस्राम करें।

रामबाबा आश्रम के विकास के लिए नर्मदेश्वर के नाम से एक बीघा जमीन मंदिर में फुलवारी के लिए पुजारी शारदाप्रसाद, लक्ष्मीनारायण जी व्यवस्थापक, लेखपाल सभी मिल करके शंकर जी के मंदिर के नाम से करा दें तो यह महापुण्य आप लोगों को प्राप्त होगा।

नोट : इस मन्दिर का प्रमाण स्कन्दपुराण के पशुपतिखण्ड में वर्णित है। आश्रम के विकास के लिए शंकर जी के मंदिर के दक्षिण-पश्चिम बगल में २ विस्वा जमीन में धर्मशाला बना देना चाहिए और दो बिस्वा जमीन धर्मशाला के फाटक के पास गाड़ी रखने के लिए रखें। मन्दिर के जमीन पर दीवार उठाकर इसे सुरक्षित कर देना होगा तथा सुन्दरीकरण के लिए पोखरे के चारों तरफ सुगन्धित फूल और फलों का वृक्ष लगाना चाहिए। यहाँ पर जप, यज्ञ एवं पूजा-पाठ विवाह आदि धार्मिक कार्य होते रहते हैं।

पशुपतिधाम से करपात्री नगर हरिहरेश्वर मंदिर हरिहरपुर जाने का मार्ग– दूसरे दिन प्रातः स्नान संध्या करके भगवान् सूर्यनारायण को अर्घ्य देकर दर्शन करके अपना सामान लेकर कीर्तन करते हुए यात्रा प्रारम्भ करें। यहाँ पशुपतिधाम से पूर्व भरतपुर गाँव में भगवान शंकरजी का मन्दिर है, यहाँ दर्शन करके आगे बढ़ें।

६४. भरतेश्वराय नमः। (भरतपुर में)

६५. दुर्गेश्वरी देव्यै नमः। (दुर्गानगर में)

दुर्गानगर में दुर्गा जी का मंदिर है। दुर्गा जी का दर्शन करके

चलें। जगदीशपुर गाँव में प्राथमिक विद्यालय, शंकर जी का मंदिर है, यहाँ पर पोखरा एवं कुआँ भी है।

निवासेश्वरलिङ्गस्य सेवनात्सर्वसम्पदः।
निवसन्ति गृहे नित्यं नित्यं प्रतिपदंपुनः।।
(का०खंड अ-६३,श्लोक १७)

अर्थ- निवासेश्वर शिवलिङ्ग की सेवा करने से उस भक्त के घर में सम्पत्तियाँ निवास करने लगती हैं तथा प्रतिक्षण उस भक्त के घर में सुख समृद्धि प्राप्त होती है।

६६. निवासेश्वराय नमः --धरसौना गाँव में।

बेला जी.टी. रोड पार करके पूर्व धर्मपुर गाँव में धमेश्वर एवं दुर्गा जी का मंदिर है। यहाँ दर्शन करके चलें।

६७. शाकम्भरी दुर्गा देव्यै नमः।

पिपरी गाँव होते हुए हरिहरपुर गाँव पशुपतिधाम से करपात्री नगर लगभग २२ किलोमीटर पर स्थित है।

काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का आठवाँ पड़ाव करपात्री नगर हरिहरपुर (धरहरा), थाना- चौबेपुर, जिला वाराणसी में पड़ता है।

६८. हरिहरेश्वराय नमः। (हरिहरपुर)

६९. द्विमुख विनायकाय नमः। (हरिहरपुर)

७०. भुवनेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः। भपूखादित्य

भैरव हनुमानजी हैं, दर्शन करें। हरिहरेश्वर मंदिर का श्रद्धा-भक्ति से दर्शन करने वाले नर-नारियों के संकट, विघ्न एवं दरिद्रता दूर हो जाती है तथा जीवन सुखमय होता है। इनका श्रद्धापूर्वक पूजन करने से धन-संपत्ति की प्राप्ति होती है।

हरिहरपुर ग्राम में तीर्थयात्री पहुँचते ही पड़ाव की व्यवस्था के अनुसार पूर्ववत् सामान रखकर मध्याह्न स्नान, संध्या करके मंदिर में जाकर दर्शन करें। इसके बाद भोजन करके एक घंटा विश्राम करने के उपरान्त तीन बजे से कीर्तन-प्रवचन सुनकर सायं स्नान, संध्या करके जलपान करें तत्पश्चात् आपस में बैठकर चौरासी कोस यात्रा के माहात्म्य की आपस में चर्चा करें एवं यात्रा से प्राप्त होने वाले प्रत्यक्ष लाभों की भी चर्चा करें। सत्संग के पश्चात् चौरासी कोस के देवी-देवताओं का स्मरण करते हुए विश्राम करें।

हरिहरपुर गाँव के विकास के लिए : हरिहरेश्वर मंदिर के दक्षिण बगल में फल-फूल के वृक्ष लगाकर उसे बगीचे जैसा रूप देना चाहिए। इसके पश्चात् हरिहरेश्वर मंदिर से सटे हुए बगल में २ बिस्वा जमीन पर क्षेत्रीय निवासियों को भी इसका लाभ मिल सकेगा जैसे विवाह एवं कोई उत्सव यज्ञ आदि के लिए यह धर्मशाला लाभदायक होगा।

मंदिर के व्यवस्थापक ओमप्रकाश सिंह जी, सीताराम पाण्डेय, अरविन्द सिंह, वरिष्ठ पत्रकार और शिवप्रसाद पुजारी सब मिलकर हरिहरेश्वर मन्दिर के नाम से एक बीघा की जमीन आवंटित करें।

शास्त्रों में ऐसा कहा गया है कि मंदिर से सम्बन्धित कोई भी कार्य करने से महापुण्य होता है तथा ऐसा करने वाले मनुष्यों के जन्म-जन्मान्तर के सभी पाप धुल जाते हैं।

हरिहरपुर से मार्कण्डेय महादेव जाने का मार्ग : दूसरे दिन प्रातः नित्य-कर्म से निवृत्त होकर दर्शन कर अपना-अपना सामान लेकर "हर हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गंगे" कीर्तन करते हुए यात्रा प्रारम्भ करें।

७१. संकटहरेश्वराय नमः। (धरहरा गाँव में)

संकटहरेश्वर महादेव जी का और धरहरा चौराहे पर रामजानकी जी का मंदिर है। भक्तगण दर्शन करके चलें।

धरहरा गाँव के पूर्व बगल में प्राथमिक विद्यालय के पास महामाया वैष्णवी देवी का अत्रीश्वर मंदिर है, दर्शनं करके चलें–

७२. अत्रिश्वराय नमः।

७३. वैष्णवी देव्यै नमः।

देवी जी के मंदिर से आगे बढ़ें और रेलवे क्रासिंग पार करके राजबाड़ी गाँव में यहाँ राजराजेश्वर का मंदिर तिराहा पर है।

(राजराजेश्वराय नमः)।

राजबाड़ी में जी.टी. रोड में पहुँचते ही सामने से पूर्व पगडण्डी रास्ते से मार्कण्डेय महादेव जाने वाले रास्ते से मार्कण्डेय महदेव घाट में राममंदिर के निकट पीपल के नीचे राम कुटिया में (जो गंगा के किनारे स्थित है) यात्रियों के विश्राम हेतु वहीं पर प्राचीन पड़ाव है। दूसरा रास्ता राजबाड़ी गाँव में रेलवे लाइन पार करके प्राचीन हवाई जहाज अड्डा होते हुए कैथी महादेव घाट होते हुए।

"काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का ९वाँ पड़ाव गंगा एवं गोमती के संगम पर मारकण्डेश्वर महादेव धाम प्रयागराज तीर्थ में है। राम मन्दिर में गंगा के किनारे कैथी थाना चौबेपुर, जिला वाराणसी में पड़ता है। करपात्री नगर से मार्कण्डेय महादेव का मंदिर लगभग १५ किलोमीटर है।

७४. पराशरेश्वराय नमः। चिरंजिवी मार्कण्डेश्वराय नमः।

७५. सुमन्तेश्वराय नमः। (मार्कण्डेय घाट)

राम मंदिर एवं सुमन्तेश्वर का प्राचीन इतिहास

सन् १८३० ई. में छपी हुई 'काशी ढुण्ढे' नाम की पुस्तक के ४५वें पृष्ठ में इसकी चर्चा है। उस समय राममंदिर के महंत विशुद्धानन्द सरस्वती थे। उस समय यहाँ खपड़े की एक कुटिया थी। धर्मशाला एवं एक कुआँ था तथा सुमन्तेश्वर मन्दिर के नाम से १० बीघा जमीन भी थी। वर्तमान में श्री राम जानकी मंदिर में नित्य पूजा विधि विधान से करना चाहिए। यहाँ पुनः इन चीजों की व्यवस्था हो जाय और साधु-संन्यासी पुजारी द्वारा पूजा होने लगे तो गाँव के और मंदिर का विकास होगा।

नोट– विश्वप्रसिद्ध काशी के मार्कण्डेय मंदिर कैथी स्कन्द पुराण, पद्मपुराण के अनुसार यह पौराणिक मंदिर है। यहाँ मार्कण्डेय घाट पर माँ गंगा के किनारे हजारों व्यक्ति स्नान करने आते हैं।

सूचना– गंगा जी में उसी जगह पर लोग मुर्दा जला रहे हैं। दोनों में थोड़ी जगह (दो किलोमीटर) का अन्तर होना चाहिए। यह शास्त्र और कानून के विरुद्ध है। अतः प्रशासन को चाहिए कि श्मशान घाट को स्नान घाट से हटा दें और मार्कण्डेय घाट को पक्का बना दें।

मारकण्डेश्वर से जगन्नाथपुरी सकलडीहा जाने का मार्ग– प्रातः स्नान, संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर सूर्य नारायण को अर्घ्य देने के बाद दर्शन करके "हर-हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गंगे" कीर्तन करते हुए यात्रा प्रारम्भ करें।

सूचना– गाड़ी से चौरासी कोस परिक्रमा दो दिन की करने वाले यात्रियों को सूचित किया जाता है कि गाड़ी से यात्रा करने वाले

भक्त यात्रीगण गंगा और मार्कण्डेश्वर आदि का दर्शन करके गाड़ी में वैठकर कीर्तन करते हुए वरुवा घाट में गंगाजी की पुल पार करके वरुवा घाट से दो मार्ग है, देर होने की संभावना हो तो लच्छू बाबा के आश्रम लक्ष्मणगढ़ में जाना चाहिए। टाण्डा में किनाराम बाबा के आश्रम में जाते हैं। सकलडीहा जाने के लिए प्रस्थान करें। पैदल चलने वाले यात्री मार्कण्डेय महादेव में गाड़ी पहुँचते ही गाड़ी से पूजा और जलपान का सामान गाड़ी से उतारकर रख लें, चौरासी कोस के पैदल, दर्शन, पूजन, यात्रा करने वाले गाड़ी बरुवा घाट होते हुए टाण्डा बाजार के कीनाराम बाबाजी के आश्रम में गाड़ी रुकेगी। परिक्रमा यात्रा करने वाले यात्री मार्कण्डेय महादेव जी के दर्शन, पूजन और जलपान के पश्चात् नौका में गंगा जी को पार करके टाण्डा घाट, कीनाराम बाबा जी के आश्रम में जाकर १५ मिनट विश्राम कर परिक्रमा यात्रा प्रारम्भ करें।

सूचना– मारकण्डेय महादेवजी से दक्षिण गंगा जी के किनारे से बरुवा घाट तक सड़क बना दें। चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा करने वाले और गाँव की जनता को सुविधा होगी। ग्रामसभा प्रधान क्षेत्रीय विधायक मिलकर सड़क बना दें। पैदल यात्रा करने वाले यात्री मारकण्डेय महादेव घाट से नौका में बैठकर टाण्डा घाट कीनाराम आश्रम में १० मिनट विश्राम कर जलपान करके यात्रा प्रारम्भ करें।

गङ्गेश्वरस्य लिङ्गस्य काश्यां दृष्टिः सुदुर्लभा।
तिथौ दशहरायाञ्च यो गङ्गेशं समर्चयेत्।।
तस्य जन्मसहस्त्रस्य पापं संक्षीयते क्षणात्।।

(का०खं०, अ०-९१, श्लोक ५)

अर्थ– काशी में गङ्गेश्वर शिवलिङ्ग का दर्शन दुर्लभ माना गया है। जो व्यक्ति गङ्गा दशहरा के दिन गङ्गेश्वर शिवलिङ्ग का पूजन करता है, उसके हजारों जन्मों के पाप उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं।

७६. गंगेश्वराय नमः। (टाण्डा घाट के किनारे है)

यहाँ दर्शन कर एवं कीर्तन करते हुए टाण्डा के आगे से पूर्व बगल की सड़क से भगवान पुर गाँव में भवानी शंकर मंदिर में दर्शन कर चलें और फुलवरिया गाँव में ज्वरहरेश्वर का दर्शन करके आगे बढ़ें। लक्ष्मणगढ़ चौराहा होते हुए लच्छूबाबा धाम लक्ष्मणगढ़ मंदिर में दर्शनार्थी पहुँचें। यहाँ दर्शन व जलपान कर दस मिनट विश्राम करके चलें।

७७. लच्छूतीर्थाय नमः।

यहाँ पर कुँआ, चापाकल तथा धर्मशाला है।

७८. लक्ष्मी दुर्गा देव्यै नमः। (लक्ष्मणगढ़)

७९. ज्ञानविनायकायै नमः। (लक्ष्मणगढ़)

८०. लच्छूश्वराय नमः। (लक्ष्मणगढ़)

लक्ष्मणगढ़ के लक्षीश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्त के रोग, दुःख लक्ष्‍‍ू बाबा दूर करते हैं। धन, विद्या, सम्मान देते हैं और दर्शन करने वाले भक्त के मनोरथ पूर्ण होते हैं।

सन् १९७८ ई० गंगाजी का इतिहास : लक्षेश्वर बाबा को गंगा जी स्नान कराने के लिए गंगा जी बढ़-चढ़कर गाँव को डुबाती हुई बाबा के मंदिर में पहुँची। लक्षूबाबा को स्नान कराकर गंगा जी तत्काल बरुवा घाट वापस हो गयीं। स्थानीय लोग लक्षेश्वर बाबा को प्रतिदिन गंगा स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहनकर "ॐ नमः शिवाय" महामन्त्र का जप करते हुए गंगाजी से गंगाजल लेकर प्रतिदिन चढ़ाते हैं। ऐसा करने वाले भक्तों के मनोरथ पूर्ण होते हैं। और धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थ भक्त को देते हैं। लक्षेश्वर बाबा के भक्त सुरेश पाण्डे जी व्यवस्थापक एवं दीनानाथ यादव प्रधान जी आदि सभी भक्त

मिलकर मंदिर का जीर्णोद्धार करा रहे हैं और मंदिर के नाम से एक बीघा जमीन की व्यवस्था ऊसर भूमि ग्रामपंचायत दें।

लक्ष्मीधाम नाम रखने का कारण और इतिहास (सन् ११-२-२००७ई०) कार्तिक शुक्ल पंचमी तिथि के दिन दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी मार्कण्डेय महादेव से टाण्डा लक्ष्मणगढ़ होतें हुए सड़क से लच्छूबाबा के मंदिर की तरफ गेट के पास १२ बजे पहुँचे तो कुआँ के उत्तर बगल से दीवार के किनारे से एक लगभग ७ वर्ष का बालक लाल रंग का चादर ओढ़े हुए मंदिर के पश्चिम बगल से मंदिर के अन्दर गये। स्वामी जी भी उनके दर्शन करने हेतु आगे बढ़े परंतु उनका फिर दर्शन नहीं हुआ। उसी समय मंदिर में बैठकर स्वामी जी ने निश्चय किया कि यहाँ पर काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा में लक्ष्छू ब्रह्म धाम रखेंगे।

लक्ष्मणगढ़ से सकलडीहा जाने वाले मार्ग से चलें। मन्दिर के बगल से पूर्व गाँव-गाँव होते हुए नौदर गाँव में सन्तानेश्वर मन्दिर का दर्शन करके चलें। हिनौता, रमौली, बेलवानी, गाँव में ईशानेश्वर का मन्दिर है, दर्शन करके चले। बिसखरपुर महावीरेश्वर के दर्शन कर हनुमान मंदिर होते हुए परासी गाँव, नहर होते हुए मनोकामेश्वर का दर्शन एवं प्रभुपुर में परमेश्वर के दर्शन करके चलें नरैलापुर, गाँव होते हुए सकलडीहा जाने वाली सड़क से काशी की चौरासी कोस परिक्रमा के यात्री प्रतिवर्ष फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन से यात्रा प्रारम्भ करके दसवें दिन लक्ष्मणगढ़ होते हुए सकलडीहा पहुँचते हैं।

सूचना– पुरुषोत्तमास में केवल तेरह दिन का पक्ष पड़ता है। इसीलिए ११वें दिन का पड़ाव अनादि काल से निश्चित है। और बारहवाँ पड़ाव काशी विश्वनाथ जी के पास में है।

"काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का दसवाँ पड़ाव (जगन्नाथपुरी, सकलडीहा) में सिद्ध महेश्वर व महेश्वरी दुर्गा जी के मन्दिर में सकलडीहा, पोखरा, थाना-सकलडीहा, जिला-चन्दौली में पड़ता है। मार्कण्डेश्वर से सकलडीहा की दूरी लगभग २२ किलोमीटर है।

८१. महेश्वर तीर्थाय नमः। (विशाल पोखरा, कुआँ है।)

८२. महेश्वराय नमः। (सकलडीहा)

८३. माहेश्वरी दुर्गादेव्यै नमः। (सकलडीहा)

८४. उन्मत्त भैरवाय नमः। (सकलडीहा)

महाकालस्य तल्लिङ्ग यैदृष्टंकष्टिभिः क्वचित्।
न स्पृष्टास्ते महापापैर्न दृष्टास्ते यमोद्भटैः।।
(काशी खण्ड, अध्याय-७, श्लोक ९७)

अर्थ- जिसने कष्ट में पड़कर कभी भी महाकालेश्वर लिङ्ग का दर्शन किया है, उसे पाप नहीं छूते और उसको यमदूत नहीं देखते।

८५. महाकालेश्वराय नमः। (सकलडीहा)

माहेश्वरी दुर्गा देवी एवं महेश्वर के दर्शन पूजन करने वाले नर-नारियों को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है तथा उन्हें धन-संपत्ति की प्राप्ति होकर उनके दुःख, संकट एवं दरिद्रता का नाश होता है।

यात्री जगन्नाथपुरी में पहुँचकर धर्मशाला में जहाँ स्थान मिले वहाँ अपना सामान सुरक्षित रखकर मध्याह्न-स्नान संध्या करके मंदिरों में दर्शन करने के पश्चात् अपने-अपने आसन पर बैठकर जलपान तथा भोजन करें। इसके पश्चात् तीन बजे से कथा-प्रवचन-श्रवण करें। इसके बाद स्नान, संध्या आदि कार्य पूर्ववत् करना चाहिए। फिर परिक्रमा-माहात्म्य का कथा का श्रवण करके सत्संग करके भगवान

का स्मरण करते हुए रात्रि में विश्राम करें। चौरासी कोस आदि परिक्रमा करने वाले भक्तों से नम्र निवेदन है कि एकादशी आदि व्रत के दिन एक समय सेंधा नमक मिलाकर सब्जी गेहूँ की रोटी, पूड़ी, पराठा खाना चाहिए। क्योंकि पूर्वी बंगाल में गेहूँ की रोटी को फलाहार मानते हैं। (प्रमाण- मैं और आत्मानन्द सरस्वती गुरु जी के साथ पूर्व वंगाल ढाका शहर में सन् १९४५ई० में फाल्गुन कृष्ण एकादशी के दिन, दिन में १२ बजे संस्कृत विद्यालय में गये थे। विद्यालय के प्रधानाचार्य जी गेहूँ की पूड़ी और केले का सब्जी बनाकर फलाहार कराये, वे गेहूँ को फलाहार मानते हैं।)

जगन्नाथपुरी सकलडीहा के विकास के लिए पोखरा के चारों तरफ फल-फूल से सुसज्जित वृक्ष लगाना चाहिए। बैठने के लिए पत्थर की चौकियाँ भी बनवा देनी चाहिए। पोखरा की परिक्रमा करने के लिए मार्ग भी बनवाना आवश्यक है। मंदिर के लिए पुजारी, व्यवस्थापक प्रेमशंकर रस्तोगी प्रधान, लेखपाल जी आप सभी लोग मिलकर माहेश्वर के नाम से एक बीघा जमीन मंदिर के लिए व्यवस्थित करा देवें तो यह एक महान् कार्य होगा तथा आपकी गाँव में नाम एवं प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आपके घर के कुलदेवता, पितर आदि प्रसन्न होंगे।

इतिहास : ढाई हजार वर्ष पूर्व आदि शंकराचार्य का जन्म दक्षिण भारत में केरल प्रान्त के कालडी नामक ग्राम में हुआ था। अल्पायु में ही शंकराचार्य कई भाषाओं के ज्ञाता हो गये थे। शंकराचार्य मात्र पाँच वर्ष की आयु में गृह का त्याग कर पद-यात्रा करते हुए नर्मदा नदी के तट पर गये और वहाँ गोविन्द भगवत्पाद नामक गुरु के पास पूर्ण रूप से संन्यास ग्रहण कर लिया। ये भारत दिग्विजय के लिए निकले काशी पहुँचकर मणिकर्णिका घाट पर ब्रह्मसूत्र पर भाष्य करना एवं लिखना प्रारम्भ किये। पूरे भारत वर्ष

में सनातन धर्म का प्रचार किया और भारत वर्ष के बड़े-बड़े विद्वानों तथा राजाओं को शास्त्रार्थ में पराजित किया। तत्पश्चात् भारत वर्ष में उस समय फैले हुए बौद्ध धर्म में परिवर्तित हो चुके सनातनधर्मियों को पुनः सनातनधर्मी बनाये। उन्होंने देश के विभिन्न चार दिशाओं में चार पीठों में चार दण्डी संन्यासियों को शंकराचार्य वनाये जिसकी परम्परा आज भी चली आ रही है। इन्होंने सात अखाड़ों की भी स्थापना की, सात परमहंस संन्यासियों को इसका महन्त नियुक्त किया और इन सभी से कहा कि शान्तिपूर्वक सनातन धर्म का प्रचार करो।

"शंकर दिग्विजय" नामक ग्रंथ में सकलडीहा का वर्णन है, जो तेलगु भाषा में छपी हुई है, जिसके १०वें पृष्ठ में उल्लिखित है कि शंकराचार्य जब काशी आये थे तब विश्वनाथ जी के दर्शन के पश्चात् प्रयागराज में शंकराचार्य जी पहुँचे तभी प्रयागराज में इन्हें कुमारिल भट्ट जी के दर्शन हुए जो उस समय धान की भूसी में अपना शरीर जला रहे थे। उन्होंने शंकराचार्य को बताया कि तुम बिहार प्रान्त में मण्डन मिश्र से जाकर मिलो। मण्डन मिश्र आपके भारत शास्त्रार्थ दिग्विजय में और सनातन धर्म के प्रचार में सहायता करेंगे। बिहार जाते समय शंकराचार्य जी सकलडीहा के महेश्वर मन्दिर में दर्शन कर रात्रि में विश्राम किये थे।

नोट– इन सातों अखाड़े के साधु-सन्त विश्व में मठ, मंदिर, आश्रम बना करके हिन्दू धर्म का प्रचार करते हैं और सबसे ज्यादा साधु जूना अखाड़े में रहते हैं।

●

प्रयागराज अर्द्धकुम्भ स्नान, दर्शन मेला का इतिहास

सन् १४-०१-२००७ ई० को प्रयागराज में बिना निमंत्रण के स्नान, दर्शन करने के लिए दो करोड़ नर-नारी इलाहाबाद में पहुँचे। विश्व के इतिहास में दो करोड़ मनुष्य एक साथ एक जगह स्नान दर्शन हेतु एकत्रित नहीं होते हैं।

जगन्नाथपुरी सकलडीहा से अमरनाथधाम गौरी गाँव जाने का मार्ग- ग्यारहवें दिन नित्य कर्म से निवृत्त होकर कीर्तन करते हुए जयकारा करते हुए महेश्वर मंदिर का दर्शन करके दक्षिण सड़क पार करके खेत की पगडंडी के रास्ते से बथावर गाँव के नीलकण्ठेश्वर का दर्शन करके अलीनगर जाने वाली सड़क से या सड़क से बथावर गाँव बालिका इण्टर कॉलेज के पास वसुन्धरा दुर्गा देवी एवं दुर्गेश्वर का दर्शन करके चलें बन देवी सती माई जी का दर्शन करके चलें। आगे में कृतीवासेश्वर का दर्शन करके कुंचवन रेलवे फाटक संगति गाँव, कुकरही गाँव में है।

८६. भद्रेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः।

८७. भद्रेश्वराय नमः।

गोलोकं प्राप्नुयात्त स्मात्पुण्यान्नैवाऽत्र संशयः।
भद्रेश्वराद्यातुधान्यामुपशान्त शिवो मुने।।

अर्थ- भद्रेश्वर का दर्शन करने से मनुष्य निश्चय ही गोलोकवासी होता है। कारण, दर्शन का ही पुण्य फल हो जाता है। हे मुने! भद्रेश्वर से नैऋत्य कोण पर उपशान्त शिव विराजित हैं।

यहाँ भी दर्शन करके चलें। ताराजीवन पुर चौराहे में बुढ़ियामाई वृद्धेश्वरी जी के मंदिर है।

८८. वृद्धेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः (तारा जीवनपुर चौराहा गाँव

में) यह मंदिर बुढ़िया माई के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर हनुमानजी आदि की मूर्तियाँ हैं।

८९. वृद्धेस्वराय नमः वृद्धेश्वरी और भैरव गणेश जी हैं। बुढ़िया माई के मन्दिर के जीर्णोद्धार मन्दिर के भक्त वंशीधर तिवारी, प्रधान, विधायक आदि मिल कर वृद्धेश्वरी दुर्गा की जीर्णोद्धार करायेंगे।

यहाँ पर जलपान कर १५ मिनट विश्राम कर चलें। तारा जीवनपुर रेलवे फाटक पार करके नसीरपुर गाँव में काली जी एवं शंकर जी का मंदिर है।

९०. रुद्राणि दुर्गा देव्यै नमः (नसीरपुर गाँव में)

९१. विंध्येश्वराय नमः (नसीरपुर गाँव में)

दर्शन कर जलपान करके चलें। शेखर गाँव में इंडियन ऑयल कार्पोरेशन के पास से होते हुए अलीनगर तिराहा में रोगहरेश्वर का छोटा मंदिर है, रोगहरेश्वराय नमः, दर्शन कर आगे चलें। (डा. सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव और प्रधान सब मिलकर केदार मण्डल मन्दिर बनायें।) तिराहा के सामने छोटी गलीसे दक्षिण विश्वसुन्दरी सड़क जाने वाली गली से सड़क पार करके राजधानी जी.टी. रोड पार करके चकिया रोड मोड़ पर शैलेश्वर जी का छोटा मंदिर है।

इदं सतीश्वरं लिङ्ग तव नाम्ना भविष्यति।
यथा मनोरथस्तेऽत्र फलितो दक्षकन्यके।।
तथैतल्लिंगमारा ध्यान्यस्याऽपि हि फलिष्यति।
कुमारी प्राप्स्यति पतिं मनसोऽपि समुच्छ्रितम्।।

अर्थ– हे दक्ष सुते! यह लिङ्ग तुम्हारे नामानुसार सतीश्वर संज्ञक होगा जिसे तुम्हारा मनोरथ इससे सिद्ध हुआ है, वैसे ही इस लिंग की आराधना करने से कुमारी मन से भी उन्नत पति प्राप्त करेगी।

एतल्लिङ्गं समाराध्य कुमारोऽपि वराङ्गनाम्।

यस्य यस्य हि यः कामस्तस्य तस्य हि स ध्रुवम्।।
भविष्यति न संदेहः सतीश्वरसमर्चनात्।
सतीश्वरं समभ्यर्च्य यो यो यं शं समीहते।।

अर्थ– इस लिङ्ग की आराधना करने से कुमार को भी उत्तम पत्नी प्राप्त होगी। इस सतीश्वर लिंग के पूजन करने से जिस जिस की जो जो कामना होगी, उस–उस की निःसंदेह वही कामना पूर्ण होगी।

९२. शैलेश्वराय नमः। (चौराहे के पास में है।)

दर्शन–पूजन करके चलें। गोधना मोड़ से पश्चिम गोधना गाँव त्रिमुहानी में शैलेश्वरी देवी का मंदिर है।

९३. शैलेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः। (गोधना गाँव)

यहाँ पर हनुमान गणेश गणेशेश्वर भैरव के मूर्ति स्थापित होंगे।

गोधना गाँव से नागेश्वर के मंदिर में जाने वाली रास्ते से चलें। नागेश्वर गौरीगाँव महादेव जी के मन्दिर में अमरनाथ धाम है, वहीं ग्यारहवाँ पड़ाव है।

"काशी की चौरासी कोस परिक्रमा" का ग्यारहवाँ पड़ाव अमरनाथधाम, गौरी गाँव, थाना–अलीनगर, जिला चंदौली में पड़ता है। सकलडीहा से अमरनाथधाम तक की दूरी लगभग २३ किलोमीटर है।

९४. अमरनाथेश्वराय नमः।

(यहाँ मानसरोवर तीर्थायें)

९५. नागेश्वराय नमः। (गौरी गाँव)

९७. दुर्गा देव्यै नमः। (गौरी गाँव)

९८. हेरम्भविनायकाय नमः। (गौरी गाँव)

प्रमाण– स्कन्दपुराण के हिमावत् खण्ड में है।

राम जानकी मंदिर भैरव गणेश और हनुमान जी हैं।

दर्शन का प्रत्यक्ष फल– नागेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले नर-नारियों के जन्म-जन्मान्तर के पाप समाप्त हो जाते हैं और रोग, दुःख, दरिद्रता एवं संकट दूर होते हैं एवं धन, पुत्र, पौत्र तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

भक्त अपने मनोरथ की पूर्ति के लिए नागेश्वरजी से प्रार्थना करते हैं, भक्तों के सब कार्य पूर्ण होते हैं। यात्री गौरी गाँव पड़ाव में पहुँचते ही स्नान, संध्या करके पूर्ववत् सब कार्य करें। दर्शन-पूजन करके भोजन कर तीन बजे से कीर्तन, प्रवचन आदि से निवृत्त होकर जलपान करके काशी की वृहद् चौरासी कोस के देवी-देवताओं का ध्यान और स्मरण करके रात्रि में विश्राम करेंगे। (नोट प्रत्येक पड़ाव में सूर्य अस्त के पश्चात् कीर्तन, भजन, चौरासी कोस का महात्म्य की कथा श्रवण और सतसंग नौ बजे तक करें।)

नागेश्वर मन्दिर के विकास और सुन्दरीकरण कराने के लिए आश्रम एवं पोखरा, कुण्ड तथा मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु पुजारी शिवप्रसाद जी एवं प्रधान मन्दिर के प्रबन्धक भक्त एवं सांसद, विधायक के कोश के पैसे की व्यवस्था कर इंजीनियर से नक्शा बनवाकर जीर्णोद्धार कराने के लिए लागत रुपया लगाना चाहिए। फिर मंदिर के जमीन के चारों ओर ४ फुट की दीवार उठाएँ, जिससे कि मंदिर सुरक्षित रह सके। मंदिर के पुजारी जी, लेखपाल आप सभी लोग मिलकर नागेश्वर मंदिर के नाम से एक बीघा जमीन की व्यवस्था करवा दें। आपके पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र सब सुखी और धनी होंगे और कुल देवता, ईष्टदेवता तथा पितर सब प्रसन्न होकर आपके और परिवार को आशीर्वाद देंगे।

नोट : मन्दिर के नाम से जमीन दान देने वाले एवं मन्दिर बनाने

वाले मन्दिर का जीर्णोद्धार कराने वाले भक्त का नाम जब तक मन्दिर और गाँव के लोग रहेंगे तब तक नाम लेंगे और मन्दिर बनाने एवं जीर्णोद्धार करने वाला व्यक्ति मृत्यु होते ही सीधे शिव लोक में जाकर सुख भोगता है।

●

नागेश्वर मंदिर गौरी गाँव का प्राचीन इतिहास

सन् १८३० ई० में छपी हुई 'काशी ढूण्ढे' नामक पुस्तक के ७०वें पृष्ठ में नागेश्वर का वर्णन है, उसमें उल्लिखित है कि उस समय के महंत दण्डी स्वामी सिद्धेश्वरानन्द सरस्वती थे। उस समय में मन्दिर के नाम से १९ बीघा जमीन थी। आज दिनांक १८-०२-२००८ को रामजानकी एवं नागेश्वर मंदिर के नाम से १२ बीघा जमीन सुरक्षित है।

मन्दिर का इतिहास– कार्तिक शुक्ल नवमी तिथि तदनुसार सन् ३१-१०-२००६ ई० को १२ बजे दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी रामनगर होते हुए गौरीगाँव में नागेश्वर जी के मंदिर की तरफ जा रहे थे। फाटक के बाहर दूर से ही स्वामी जी को सफेद शिवलिंग का दर्शन हुआ, उसी समय एक वृद्ध ब्राह्मण आकर बोले– चौरासी कोस यात्रा का रास्ता बताइये। वे उनको रास्ता बताने लगे। १० मिनट के पश्चात् स्वामी जी मन्दिर में दर्शन करने गये। सफेद शिवलिंग के स्थान पर काले रंग के शिवलिंग का स्वामी जी को दर्शन हुआ। स्वमी जी ने उसी समय इस स्थान का नाम "अमरनाथधाम" रखे।

दूसरे दिन नित्य कर्म से निवृत्त होकर अमरनाथ धाम नागेश्वर मन्दिर से काशी विश्वनाथ जी के दर्शन करने के लिए मंदिरों का दर्शन एवं कीर्तन करते हुए यात्रा प्रारम्भ करें।

नोट-(काशी की बृहद चौरासी कोस यात्रा का प्राचीन मार्ग गौरी गाँव नागेश्वर मन्दिर ११वाँ पड़ाव से रतनबाग रामनगर जाने के रास्ते में चन्दौली जाने वाली बड़ी नहर पड़ती है उस नहर में पुल प्रधान, सांसद और विधायक जी बना दें।) नहर के पश्चिम बगल में दिनेश्वर का मन्दिर है। वर्तमान में दाहिनी तरफ से बाईपास से नहर एवं रेलवे लाइन पार करके चलें। कारखाना के बगल से रतनबाग होते हुए बालात्रिपुरसुन्दरी मंदिर में दर्शन करें।

सूचना- रतनबाग बालात्रिपुर सुन्दरी देवी जी के मंदिर चौरासी कोस यात्रा का केन्द्र बिन्दु है। आते और जाते दोनों समय दर्शन करना अनिवार्य है।

काशीराज श्री अनन्तनारायण सिंह जी से विनम्र अनुरोध है कि बाला त्रिपुर सुन्दरी मन्दिर एवं कुएँ के पास से उत्तर बगल को ऊसर भूमि और सड़क के दक्षिण बगल की एक बीघा जमीन में चार बिस्वा की धर्मशाला बनवा दें। विभूतीनारायणेश्वर का मन्दिर बना दें। यह धर्मशाला अपने आदरणीय पिता डॉ. विभूति नारायण सिंह जी महाराज के नाम को अमर करने के लिए बनवा दें। वहाँ के प्रधान, सांसद, विधायक सभी को मिलकर काशी की चौरासी कोस की यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए तथा गाँव में विवाह आदि उत्सव के लिए ४ बिस्वा जमीन पर एक धर्मशाला का निर्माण कराना चाहिए। काशी के धर्मात्मा महाराज विभूति नारायण सिंह जी के नाम से धर्मशाला बनवावें और धर्मशाला के अन्दर विभूतीश्वर का मंदिर बनवा दें। धर्मशाला के बाहर के जमीन में सुगन्धित फल और फूल का वृक्ष लगा दें, गाड़ी खड़ी करने के लिए सुविधा होगी और यज्ञ अनुष्ठान एवं पूजा-पाठ, विवाह आदि के लिए सुविधा होगी। विभूतीश्वर शिवलिङ्ग स्थापित करें।

९९. विभूतीश्वराय नमः। (रतनबाग)

रतनबाग से बाईपास के दक्षिण बगल में भरतेश्वर है। पुल के उत्तर बगल से पश्चिम गोला गली गोला गोकर्णेश्वर हैं दर्शन पूजन करते हुए मनसादेव्यै नमः देवी के दर्शन-पूजन करके जलपान कर विभूति नारायण सिंह महाराज का दरबार और किले का बाहर से दर्शन करके पुल पार करके सामने घाट गंगोत्री विहार कालोनी, रैदास पार्क अस्सी दशाश्वमेध होते हुए वृहस्पतीश्वराय नमः। वृहस्पतीश्वर एवं विश्वनाथगली में साक्षी विनायक जी का दर्शन-पूजन करके चलें।

१००. साक्षी विनायकाय नमः (विश्वनाथगली)

विश्वनाथ गली में साक्षी विनायक जी के विषय में स्कन्द पुराण में मान्यता है कि जो व्यक्ति इनकी श्रद्धापूर्वक पूजा करते हैं। उसे ये मृत्यु के समय श्री काशी विश्वनाथ जी से कहकर मुक्ति दिला देते हैं। इसलिए साक्षी विनायक का दर्शन करना अनिवार्य है। अतः काशीवास करने वाले नर-नारियों को सोमवार, चतुर्थी और प्रदोष के दिन प्रमुख हैं। किसी भी दिन, माह में एक दिन दर्शन-पूजन करें।

"काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का बारहवाँ पड़ाव काशी विश्वनाथ मंदिर एवं काशी में है।" गौरीगाँव से ज्ञानवापी की दूरी लगभग २२ किलोमीटर है।

चौरासी क्रोशेश्वर

काशी विश्वेश्वरं लिङ्गं ज्योतिर्लिङ्ग तदुच्यते।
तद्दृष्ट्वा परं ज्योतिराप्नोति मनुजोत्तमः।।

(नारद पुराण, अ०-६२, श्लोक ५१)

अर्थ- काशी का विश्वेश्वर शिवलिङ्ग ज्योतिर्लिङ्ग कहा जाता है और विश्वश्वर जी के दर्शन करने वाले श्रेष्ठ मनुष्य परम ज्योति का दर्शन प्राप्त करते हैं।

१०१. विश्वेश्वराय नमः - बाँस फाटक।

१०२. विश्वनाथ जी - अन्नपूर्णा गली में

दर्शन करने के पश्चात् ज्ञानवापी में नन्दी के पास व्यास गद्दी में बैठकर चौरासी कोस के मन्दिरों का नाम श्रवण करके संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को दक्षिणा देकरके शिव-शिव काशी महामंत्र का जप करते हुए यात्री अपने-अपने कुटिया, मठ, मन्दिर एवं घर, आश्रम को जाते हैं।

चौरासी कोस परिक्रमा पूर्ण हुई।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

इसके उपरान्त अपने स्थान पहुँचकर अगले दिन या तीसरे दिन यात्री अपने सपरिवारों के ग्रहों की शान्ति के लिए पूजा, पाठ, हवन कराते हैं। तीन घंटे का कीर्तन करें, अभिषेक दुर्गासप्तशती का पाठ एवं सुन्दरकाण्ड तथा हनुमान चालीसा के पाठ, श्री सत्यनारायण व्रत कथा श्रवण इनमें से एक करके सूक्ष्म रूप से हवन, तर्पण, मार्जन करके यथाशक्ति साधु और ब्राह्मण को भोजन करायें और स्वयं सपरिवार भोजन करें। उपर्युक्त बातें मनुस्मृति एवं निर्णय सिन्धु में उल्लिखित हैं।

काशीवासियों को काशी की वृहद् चौरासी कोस की परिक्रमा करके तीसरे दिन अविमुक्त यात्रा करना चाहिए। इसके पश्चात पञ्चक्रोशी यात्रा करनी चाहिए। चौरासी कोस की यात्रा करने से विश्व में जहाँ भी मृत्यु होगी विश्वनाथ जी बुलाकर दूसरे जन्म में मुक्त कर देते हैं।

सूचना

स्थानीय व्यवस्थापकों द्वारा–

(१) चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा के प्रत्येक पड़ाव में प्रतिवर्ष रामायण और अनेक यज्ञ होते हैं व सम्मेलन होता है।

(२) २४ घण्टा अखण्ड रामायण पाठ करते-कराते हैं।

(३) मंगलवार तथा शनिवार को सुन्दरकाण्ड का ध्वनि के साथ पाठ कराते हैं।

(४) प्रतिवर्ष एक बार रामायण यज्ञ आदि सम्मेलन कराते हैं।

(५) प्रतिवर्ष बिरहा रात्रि ६ बजे से १० बजे तक पड़ाव में होता है।

(६) प्रत्येक मन्दिर में सप्ताह में एक दिन या प्रतिदिन तीन बजे से पाँच बजे तक और रात्रि के समय में जब समय मिले कीर्तन और भजन का आयोजन होता है।

विवरण

काशी की बृहद् चौरासी कोस यात्रा का प्राचीन रास्ता शासन की आज्ञा से प्रधान बना रहे हैं। वर्तमान मार्ग से किलोमीटर अधिक होने का अनुमान है। चौरासी कोस के रास्ते में यात्री दिखाई पड़ते ही उसे रास्ता बता देना, बीमार, रोगी यात्री को पड़ाव में पहुँचा देना, चौरासी कोस के रास्ते में रहने वाले सज्जन सब भक्त यात्रियों का स्वागत करें और प्रत्येक गाँव-गाँव से यात्रा के लिए एवं काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करने के लिए भेजें। अधिक से अधिक चौरासी कोस की यात्रा करने के लिए भेजें।

सूचना– काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा वाराणसी, चन्दौली, मिर्जापुर तीन जिलों के अन्तर्गत है। अतः मठ, मन्दिर

आश्रम एवं कुटिया धार्मिक संस्थान जितने भी हैं, उन मन्दिरों आदि के पुजारी, व्यवस्थापक, महन्त सभी अपने-अपने मठ, मन्दिर से कम-से-कम दस भक्तों को प्रेरित करके चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा करने के लिए भेजें। परिक्रमा यात्रा में प्रेरणा करके भेजने वाले भक्त को दस प्रतिशत पुण्य मिलता है एवं यात्रा में भेजने वाले को गाँव में नाम और सम्मान होता है। काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा मार्ग के अन्तर्गत प्रत्येक सांसद, विधायक, प्रधान एवं ब्लाक प्रमुख, भक्त परिक्रमा करने के लिए प्रचार-प्रसार करें और अधिक से अधिक अपने क्षेत्र से यात्रियों को भेजें। क्योंकि चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा का पुस्तक बाजार में न मिलने से और प्रचार न होने से जो यात्रा अनादि काल से चल रही है, शिथिल पड़ गई। परिक्रमा करने से जन्म- जन्मान्तर के पाप क्षीण होते हैं एवं जीवन सुखमय होता है तथा कल्याण एवं सुख, शान्ति की प्राप्ति होती है।

नोट- समस्त प्रधानों से निवेदन किया जाता है कि चौरासी कोस यात्रा के मार्ग में सड़क के किनारे के गाँव में १२५ सभासद और प्रधान हैं। आपके क्षेत्र में सड़क के किनारे छोटे-बड़े कुआँ, कुण्ड, पोखरा, मन्दिर, धर्मशाला का जीर्णोद्धार एवं सुन्दर व्यवस्था और सुरक्षा थाना के अध्यक्ष से प्रधान जी मिलकर करें। पोखरा पाटने से रोके भावी क्षेत्र में पर्यटन विभाग पोखरा का जीर्णोद्धार करेंगे, जैसे पञ्चक्रोशी के मार्ग में (कंदवा) कर्दमेश्वर तीर्थ पोखरा और (भीमचण्डी) भीमचण्डी तीर्थ, पोखरा का पर्यटन विभाग ने जीर्णोद्धार किया है उसी प्रकार काशी की वृहद् चौरासी कोस यात्रा के मार्ग का पोखरा का भी जीर्णोद्धार करायें।

सूचना- काशी की वृहद् चौरासी कोस जनकल्याण अन्न क्षेत्र समिति सदस्य दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती चौरासी कोस की रास्ते के समस्त प्रधानों से निवेदन करते हैं (लगभग १२५ मार्ग में

प्रधान हैं) कि चौरासी कोस के सड़क के किनारे में जो मन्दिर पोखरा और धर्मशाला हैं। उनका अपने-अपने क्षेत्र में जीर्णोद्धार करायें और मन्दिर में पूजा आदि का व्यवस्था करें। मन्दिर में लाउडस्पीकर लगाकर आरती करें और कीर्तन, भजन प्रतिदिन और सप्ताह में प्रवचन का आयोजन करायें, शनिवार एवं मंगलवार के दिन सायं सुन्दरकाण्ड का पाठ करें और करायें। रामायण एवं कीर्तन उत्सव की तारीख लिखकर दिवाल में चिपका दें, वर्ष में एक दिन विशेष उत्सव मनाना चाहिए। और सभी प्रधान अपने-अपने क्षेत्र से फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन काशी के वृहद् चौरासी कोस की यात्रा करने के लिए अधिक से अधिक यात्रियों को भेजें और स्वयं करें। जनकल्याण समिति आपका स्वागत करती है।

काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा करने से जन्म-जन्मान्तर के पाप और रोग नष्ट होकर पुण्य का उदय होता है। गरीबी, दुःख, संकट, कलह तथा रोग नष्ट होते हैं। सुख-शान्ति, धन-सम्पत्ति एवं यश-प्रतिष्ठा, सम्मान प्राप्त होता है। शत्रु मित्र हो जाते हैं, गरीब धनी हो जाते हैं तथा रोगी निरोगी हो जाते हैं।

किसी भी यात्री को किसी प्रकार का कष्ट न हो। प्रत्येक पड़ाव के प्रधान एवं थानाध्यक्ष एक दिन पहले पड़ाव में जाकर व्यवस्था देखेंगे। दूसरे दिन यात्रियों की सुरक्षा के लिए दिन में १० बजे से दूसरे दिन ६ बजे तक पुलिसमैन की ड्यूटी लगा दें।

सूचना- प्रति वर्ष चौरीसी कोस यात्रा के देवी-देवताओं का दर्शन करने के लिए बांसफाटक के फूलमण्डी से प्रातः ६ बजे टाटा सूमो की गाड़ी जायेगी। बलुवाघाट एवं चुनारघाट और हरिहरपुर में पक्का पुल बन रहा है। सन् ११.०२.२०१२ई० के महाशिवरात्रि के दिन में मिनी बस गोलगड्डा से काशी की चौरासी कोस परिक्रमा के मार्ग में यात्रा करने वाले को लेकर चलेगी।

चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा करने वाले को काशी विश्वनाथ जी अपनी भक्ति देते हैं। मन, बुद्धि भक्तिमय हो जाता है। अपने-अपने ईष्टदेव के मन्त्र का नाम निरन्तर जप करने लगता है और भगवान के भजन में ही मग्न रहता है और धन-धान्य, सुख-शान्ति प्राप्त करता है, उसका दोनों लोक सुधर जाते हैं

नोट : श्री स्वामी जी का जन्मोत्सव समारोह माघ शुक्ल वसंत सरस्वती पंचमी को धर्मसंघ, राममंदिर के प्रांगण में दिन के १ बजे से २ बजे तक मनाया जाता है।

दण्डी स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती जी द्वारा संचालित काशी की पंचक्रोशी परिक्रमा कार्तिक कृष्ण द्वितीया तिथि को प्रतिवर्ष प्रातः ८ बजे ज्ञानवापी में संकल्प लेकर प्रस्थान करती है जो सन् १९७९ ई. से आज सन् २२-१०-२०१०ई० तक अनवरत अखण्ड चल रही है। धर्मसम्राट अनन्त श्री विभूषित स्वामी करपात्री जी की प्रेरणा एवं ईष्टदेव की आज्ञा से सन् १९७९ ई. महाशिवरात्रि के पावन पर्व से काशी की पंचक्रोशी अन्तर्गृही १२ ज्योतिर्लिंग यात्रा, छप्पन विनायक की यात्रा एवं १२ सूर्य यात्रा आदि यात्राएँ करते एवं कराते रहे हैं और काशी प्रदक्षिणा दर्शन जन कल्याण यात्रा समिति की स्थापना की जो रविवार को वर्तमान में अखण्ड चल रही है। दण्डी स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती जी की जनकल्याण अन्न क्षेत्र समिति द्वारा भी कुंभ में एवं प्रयागराज इलाहाबाद में प्रत्येक माघ के महीने में कल्पवासियों के लिए है।

काशी की पार्थिव पूजा पद्धति

ताम्बूल पत्रं समर्पयामि।

(पान और सुपारी चढ़ायें।)

दक्षिणा- ॐ यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्त याश्च दक्षिणाः।

तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

(द्रव्य-दक्षिणा समर्पित करें।)

आरती- ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳरजः पितुरप्रायि धामभिः।

दिवः सदाꣳ सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, कर्पूरार्तिक्यदीपं दर्शयामि। (कपूर की आरती करें।)

भगवान गङ्गाधर की आरती

ॐ जय गङ्गाधर जय हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा।।१।।हर०।।
कैलासे गिरिशिरे कल्पद्रुमविपिने।
गुजंति मधुकरपुंजे कुंजवने गहने।।
कोकिल्कूजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयिता कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता।।२।।हर०।।
तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता।।

क्रीडा रचयित भूषारजितं निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम्।।३।।हर०।।
बिबुधबधु बहु नृत्यत ह्रदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरूते सप्त स्वर सहिता।।
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते।
क्वण क्वणं ललिता वेणुं मधुरं नाटयते।।४।।हर०।।
रूण रूण चरणे रचयति नुपुर मुज्जवलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरूते तां धिक तां।।
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनांद लासकतां कुरूते।।५।।हर०।।
कर्पूरद्युतिगौरं पंचाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्।।
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्।
डमरूत्रिशूलपिनाककरधृतनृकपालम्।।६।।हर०।।
मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम्।।
सुन्दरसकलशरीरे कृतभास्माभरणम्।
इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्।।७।।हर०।।
शङ्खनिनादं कृत्व झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा व्दत्रृचां पठते।।
अति मृदुचरणसरोजं ह्रत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा।।८।।हर०।।
ध्यानं आरति समये ह्रदये अति कृत्वा।
रात्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा।
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरूते।
शिव सायुज्यं गच्छति भक्त्या यः श्रृणुते।।९।।हर०।।

आरती के बाद जल गिरा दे। देवता को फूल चढ़ाये। फिर दोनों हाथों से आरती लेकर हाथ धो ले।

प्रदक्षिणा–

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रूद्र रीरिषः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वर साम्बसदाशिवाय नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। (प्रदक्षिणा करें)।

पुष्पाञ्जलि–

ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो विरान् रूद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।।
ॐ तत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रूद्रः प्रचोदयात्।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।।

(मन्त्र-पुष्पांजलि समर्पण करे, तदनन्तर साष्टाङ्ग प्रणाम और पूजनकर्म शिवर्पण करें।)

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः।।
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री नर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः प्रार्थनापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि। अनया पूजया श्रीनर्मदेश्वर-साम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम। श्री साम्बसदाशिवार्पणमस्तु।

इसके बाद भगवान शङ्कर की विशेष उपासना की दृष्टि से पंचाक्षर मन्त्र का जाप, रूद्राभिषेक तथा बिल्वपत्र एवं कमलपुष्पों से सहस्त्रार्चन आदि किये जा सकते हैं। अन्त में संक्षेप में उत्तराङ्ग-पूजन कर आरती, पुष्पाञ्जलि एवं स्तुति करनी चाहिए। शिवरात्रि आदि पर्वों

में बिल्वपत्र आदि से शिवार्चन तथा रात्रि जागरण की विशेष महिमा है।

पार्थिव-पूजन पद्धति

पार्थिव-पूजन के लिए स्नान, संध्योपासन आदि नित्यकर्म से निवृत्त होकर शुभासन पर पूर्ण या उत्तर की ओर मुख करके बैठें। पूजा की सामग्री को सँभालकर रख दें। अच्छी मिट्टी भी रख लें। भस्म का त्रिपुण्ड्र लगाकर रूद्राक्ष की माला पहन लें। पवित्री धारण कर आचमन और प्राणायाम करें। इसके बाद विनियोगसहित 'ॐ अपवित्र' इस मन्त्र से अपना और पूजन सामग्री का सम्प्रोक्षण करें। रक्षादीप जला लें। विनियोग सहित 'ॐ पृथ्वि त्वया' इस मन्त्र से आसन को पवित्र कर लें। हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर स्वस्त्ययन तथा गणपति-स्मरण करें। इसके बाद दाहिने हाथ में अर्घ्यपात्र लेकर उसमें कुशत्रय, पुष्प, अक्षत, जल और द्रव्य रखकर निम्नलिखित संकल्प करें।

(क) सकाम संकल्प–ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, अद्य.... मम सर्वारिष्टनिरसनपूर्वकसर्वपापक्षयार्थं दीर्घायुरारोग्यधनधान्यपुत्र-पौत्रादिसमस्तसम्पत्प्रवृद्ध्यर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं पार्थिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये।

(ख) निष्काम संकल्प– ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः........ श्रीपरमात्मप्रीत्यर्थं पार्थिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये।

भूमि-प्रार्थना– इस प्रकार संकल्प करने के वाद निम्नलिखित मंत्र से भूमि की प्रार्थना करें–

ॐ सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम्।
ग्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे।।
ॐ ह्राँ पृथिव्यै नमः।

मिट्टी का ग्रहण–उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्त क त्वां च गृह्णामि प्रजया च धनेन च।।

'ॐ हराय नमः' यह मन्त्र पढ़कर मिट्टी लें। मिट्टी अच्छी तरह देखकर कंकड़ आदि निकाल दें। कम से कम १२ ग्राम मिट्टी हो। जल मिलाकर मिट्टी को गूँथ लें।

लिङ्ग-गठन– 'ॐ महेश्वराय नमः' कहकर लिङ्ग का गठन करें। यह अँगूठे से न छोटा हो और न बित्ते से बड़ा। मिट्टी की नन्हीं-सी गोली बनाकर लिङ्ग के ऊपर रखे। यह 'वज्र' कहलाता है। काँसा आदि के पात्र में बिल्वपत्र रखकर उस पर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर लिङ्ग की स्थापना करें।

प्रतिष्ठा–'ॐ शूलपाणये नमः, हे शिव इह प्रतिष्ठितो भव।' यह कहकर लिङ्ग की प्रतिष्ठा करें।

विनियोग– ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्री सदाशिवो देवता, ओङ्कारो बीजम्, नमः शक्तिः शिवाय इति कीलकम्, मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं न्यासे पार्थिवलिङ्गपूजने जपे च विनियोगः।

इस विनियोग से अपने और देवता को दूर्वा अथवा कुश से स्पर्श करते हुए तत्तद् अङ्गों में न्यास करें।

ऋष्यादिन्यास– ॐ वामदेवर्षये नमः, शिरसि।
ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे।
ॐ श्रीसदाशिवदेवतायै नमः, हृदि।
ॐ बीजाय नमः, गुह्ये।

प्राणप्रतिष्ठा-मन्त्र का विनियोग– प्रतिष्ठा के पूर्व जल ग्रहण कर निम्नरूप से विनियोग करें–

विनियोग–ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः-सामानिच्छन्दासि, क्रियामयवपुः, प्राणाख्या देवता आँ बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं देव (देवी)- प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

इतना कहकर जल भूमिपर छोड़ दे।

प्राणप्रतिष्ठा– हाथ से पुष्प लेकर मूर्ति पर स्पर्श करते हुए नीचे लिखे मन्त्र बोलें–

ॐ ब्रह्मविष्णुरूद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। ॐ ऋग्यजुः, सामच्छन्दोभ्यो नमः, मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः, हृदि। ॐ आँ बीजाय नमः, गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तयै नमः, पादयोः। ॐ क्रौं कीलकाय नमः, सर्वाङ्गेषु।

इस प्रकार न्यास करके पुनः पार्थिव लिङ्ग का स्पर्श करें–

ॐ आँ ह्री क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः।

ॐ आँ ह्री क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थितः।

ॐ आँ ह्री क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्

मनस्त्वक्चक्षुः– श्रोत्रघ्राणजिह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। तदनन्तर अक्षत से आवाहन करें।

ॐ भूः, पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। ॐ स्वः, पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।

ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्।
तावत्त्वम्प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।।

ॐ शक्तये नमः, पादयोः।
ॐ शिवाय कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे।
ॐ नं तत्पुरूषाय नमः, हृदये।
ॐ मं अघोराय नमः, पादयोः।
ॐ शिं सद्योजाताय नमः, गुह्ये।
ॐ वां वामदेवाय नमः, मूर्ध्नि।
ॐ यं ईशानाय नमः, मुखे।

करन्यास– ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास– ॐ हृदयाय नमः।
ॐ नं शिरसे स्वाहा।
ॐ मं शिखायै वषट्।
ॐ शिं कवचाय हुम्।
ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ यं अस्त्राय फट्।

इस प्रकार न्यास करने के पश्चात् भगवान साम्बसदाशिव का ध्यानपूर्वक पूजन करें–

ध्यान– ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारूचन्दावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पचंवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

आवाहन– ॐ पिनाकधृपे नमः, श्रीसाम्बसदाशिव पार्थिवेश्वर

इहागच्छ, इह प्रतिष्ठ, इह संनिहितो भव।

श्री भगवते साम्बसदाशिवपार्थिवेश्वराय नमः आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। (पुष्प चढ़ायें।)

आसन–ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ायें।)

पाद्य–ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढ़ायें।)

अर्घ्य– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (जल चढ़ायें।)

आचमन– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ायें।)

मधुपर्क– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि। (मधुपर्क निवेदित करे।)

स्नान– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। (जल स्नान करायें।)

पंचामृतस्नान– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, पंचामृस्नान समर्पयामि। (पंचामृत से स्नान करायें।)

शुद्धोदकस्नान– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, शुद्धोदकस्नान समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान करायें।)

आचमन– शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ायें।)

महाभिषेक– पार्थिवलिङ्ग पर महिम्नस्तोत्र (पृ० सं० २९३)। या वैदिक रुद्रसूक्त (पृ.सं० २३३–२६७) से जलधारा द्वारा अभिषेक भी कर सकते हैं। (पत्र-पुष्प से आच्छादित कर ही अभिषेक करना चाहिए, जिससें पार्थिवलिङ्ग की मिट्टी क्षरित न हो।)

गन्धोक-स्नान– ॐ नमः शिवाय, श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (गन्धोदक से स्नान करायें।)

शुद्धस्नान– आचमन– गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धस्नानं समर्पयामि। शुद्धस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान तथा आचमन करायें।)

वस्त्र– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र निवेदित करें।)

आचमन– वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ायें।)

यज्ञोपवीत–ॐ नमः शिवा, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत चढ़ायें।)

आचमन– यज्ञोपवीतान्ते आचमनीं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ायें।)

उपवस्त्र– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि। (उपवस्त्र चढ़ायें।)

आचमन– उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ायें।)

चन्दन– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, चन्दनं समर्पयामि। (चन्दन चढ़ायें।)

भस्म– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, भस्म समर्पयामि। (भस्म निवेदित करें।)

अक्षत– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ायें।)

पुष्पमाल– ॐ नमः शिवाय, श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। (फूल की माला चढ़ायें।)

बिल्वपत्र–ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (बिल्वपत्र चढ़ायें।)

दूर्वा– ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय

नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर चढ़ायें।)

नानपरिमलद्रव्य-ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, नानपरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (परिमलद्रव्य चढ़ायें।)

धूप- ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाघ्रपयामि। (धूप निवेदित करें।)

दीप- ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि।

(दीप दिखायें, हाथ धो लें।)

नैवेद्य- ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्य निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करें।)

पानीय और आचमन- मध्य पानीयमाचमनीयं च जलं समर्पयामि। (जल निवेदित करें।)

करोद्वर्तन-ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि। (चन्दन चढ़ायें।)

ऋतुफल- ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि। (ऋतुफल चढ़ायें।)

धत्तूरफल- ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, धत्तूरफलानि समर्पयामि। (धत्तूर के फल चढ़ायें।)

ताम्बूल-ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, मुखवासाथ एलालवंगपूगीफलयुतं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लवंग, सुपारी के साथ पान चढ़ायें।)

दक्षिणा- ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, दक्षिणां समर्पयामि। (दक्षिणा चढ़ायें।)

आरती- ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, आरार्तिक्यं समर्पयामि। (आरती करें, दल गिरा दें।)

मन्त्रपुष्पांजलि- ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदा-

शिवापार्थिवेश्वराय नमः, मन्त्रपुष्पांजलि समर्पयामि। (पुष्पाञ्जलि समर्पित करें।)

अष्टमूर्तियों की पूजा

अब गन्ध, अक्षत, फूल के द्वारा भगवान शङ्कर की आठों मूर्तियों की आठों दिशाओं में पूजा करें–

१. पूर्वदिशा में (पृथ्वीरूप में) –ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः।

२. ईशानकोण में (जल से रूप में)–ॐ भवाय जलमूर्तये नमः।

३. उत्तर दिशा में (अग्निरूप)– ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।

४. वायव्यकोण में (वायुरूप में)–ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।

५. पश्चिमदिशा में (आकाशरूप में)– ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः।

६. नैऋत्यकोण में (जयमान रूप में) – ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।

७. दक्षिणदिशा में (चन्द्ररूप में)– ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।

८. अग्निकोण में (सूर्यरूप में)– ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।

यह मन्त्र पढ़कर देवता के दक्षिण हाथ में जप का समर्पित करें।

प्रदक्षिणा– यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।।

क्षमा-प्रार्थना– आवहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां नैव हि जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत् पूजितं महादेव! परिपूर्ण तदस्तु मे।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

विसर्जन– गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वर।
मम पूजां गृहीत्वेमां पुनरागमनाय च।।

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।। (ऐसा कहकर विसर्जन करें।)

समर्पण– अनेन पार्थिवलिङ्गपूजनकर्मणा श्रीयज्ञस्वरूपः शिवः प्रीयताम्, न मम (पूजन कर्म समर्पण करें।)

(१) शिव की प्रदक्षिणा के लिए शास्त्र का आदेश है कि इनकी अर्धप्रदक्षिणा करनी चाहिए। आचारेन्दु में 'अर्ध' का अर्थ 'अर्ध सोमसूत्रान्तमित्यर्थः' 'सोमसूत्रतक' ऐसा कहा गया है। 'शिवं प्रदक्षिणीकुर्वन् सोमसूत्रं न लङ्घयेत्, इति वचनान्तरात्।'

अपवाद– तृण, काष्ठ, पत्ता, पत्थर, ईंट, आदि से ढँके सोमसूत्र का लङ्घन किया जाता है।

(२) दुर्गा जी की एक, सूर्य की सात, गणेश की तीन, विष्णु की चार और शिव की अर्ध प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

पार्थिव पूजा करने वाले भक्त के लिए पार्थिव पूजा का फल घर में सुख, शान्ति, धन-सम्पत्ति व समृद्धि के लिए है। उस व्यक्ति के परिवार के बालक संस्कारी एवं कुशाग्र बुद्धि वाले होंगे। परीक्षाओं में अधिकतम अंक प्राप्त करके अपने विद्याल, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, प्रदेश तथा देश में अपनी अलग पहचान कायम करते हैं। पार्थिव पूजन करने वाले व्यक्ति को भगवान शिव की अनन्य भक्ति प्राप्त होती है। शरीर निरोग होता है, सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। उन्हें लौकिक पारलौकिक एवं आध्यात्मिक सुख हस्तगत होता हैं।

●

१. गणेश जी की आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।
एकदन्त दयावन्त चार भुजाधारी।
मस्तक पर सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी।।
अन्धन को आँखें देते कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया।।
पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुन का भोग लगे सन्त करें सेवा।।
दीनन की लाज राखो शम्भु-सुतवारी।
कामना पूरी करो जग बलिहारी।।

श्री गणेश-वन्दना

वर्णानामर्थ-संघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ।।
गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारू भक्षणम्।
उपासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघनेश्वर-पादपंकजम्।।

२. शिवजी की आरती

जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै।।

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहैं।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहैं।।
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी।
चन्द मृगमद सोहे भोले शशिधारी।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे।।
कर मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूलधर्ता।
जन कर्ता जग भर्ता जग संहार कर्ता।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणावाक्षर में शोभित ये तीनों एका।।
त्रिगुणस्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे।।

३. गौरीजी की आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।।जय अम्बे०।।
माँग सिंदूर विराजत, टीकौ मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्र बदन नोको।।जय अम्बे०।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।।जय अम्बे०।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्परधारी।
सुर नर-मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी।।जय अम्बे०।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।।जय अम्बे०।।

शुम्भ निशुम्ब विदारे, महिषासुरघाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।।जय अम्बे०।।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीजहरे।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।जय अम्बे०।।
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिवपटरानी।।जय अम्बे०।।
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्यकरत भैंरु।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू।।जय अम्बे०।।
तुम हो जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता।।जय अम्बे०।।
भुजा चार अति शोभित, कर खप्परधारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी।।जय अम्बे०।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्रीमाल केतु में राजत, कोटि रत्न ज्योति।।जय अम्बे०।।
श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्दस्वामी, सुखसम्पत्ति पावे।।जय अम्बे०।।

गौरी-वन्दना

सर्वरूपमयीं देवीं सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम्।।
दुगे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतीमतीव शुभां ददासि।।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकारकरणाय सदार्दचित्ता।।
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

४. लक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु धाता।।ॐ जय०।।
ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला, तुम ही जगमाता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।ॐ जय०।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्ध धन पाता।।ॐ जय०।।
तू ही पाताल-वासन्ती, तू ही है सुखदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशित, भवनिधि को त्राता।।ॐ जय०।।
जिस घर तेरो, बासो, वाहि में गुण आता।
कर न सके सोई कर ले, मन नहिं धड़काता।।ॐ जय०।।
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न होय पाता।
खान-पान को वैभव, सब तुमसे आता।।ॐ जय०।।
शुभ गुण सुन्दर रक्तक्षीर, निधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुन बिन, कोई नहीं पाता।।ॐ जय०।।
आरति लक्ष्मीजी की, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।।ॐ जय०।।

श्री महालक्ष्मीजी की वन्दना

दीनार्तिभीतं भवतापपीड़ित, धनैर्विहीनं तव पार्श्वमागतम्।
कृपानिधित्वं मम लक्ष्मि सत्वरं, धनप्रदानाद्धननायकं कुरु।।
मां विलोक्य जननि हरिप्रिय, निर्धनं तव समीपमागतम्।
देहि में झटिति लक्ष्मी एकाग्रं, वस्त्रकांचनवरान्नमदद्भुतम्।।

५. हनुमानजी की आरती

आरति कीजै हनुमान लला की।दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कापैं। रोग-दोष भय निकट न झाँपै।।
अंजनिपुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र-सी खाई। जात पवन-सुत बार न लाई।।
लंका जाय असुर सब मारे। राजा राम के काज सँवारे।।
शक्तिवाण लग्यो लक्ष्मण को। आनि सजीवन प्राण उबारो।।
पैठि पताल तोरि यमकातर। अहिरावण के भुजा उखारे।।
वाईं भुजा से असुर संहारे। दाहिनी भुजा सुर सन्तन तारे।।
सुर-नर-मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमानजी उचारे।।
कंचन थार कपूर सुहाई। आरति करत अंजनी माई।।
जो हनुमान जी आरती गावै। सो बैकुंठ परम पद पावै।।

श्रीहनुमत्-वन्दना

अतुलित बलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवन कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।

सकलगुणानिधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृत्तराक्षसम्,
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्।
अंजनीनन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्,
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लंकाभयंकरम्।।

६. श्रीमद्भागवतजी की आरती

आरति अतिपावन पुरानकी, धर्म-भक्ति-विज्ञान-खानकी।।
।।टेक०।।

महापुराण भागवत निर्मल।
शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल।
परमानन्दसुधा-रसमय कल।
लीला-रति-रस-रसनिधानकी।।आरति०।।
कलिमल-मथनि त्रिताप-निवारिणि।
जन्ममृत्युभय भव-भयहारिणि।
सेवत सतत सकल सुखकारिणि।
सुमहौषधि हरि-चरित गानकी।।आरति०।।
विषय-विलास-विमोह-विनाशिनि।
विमल विराग विवेक विकाशिनि।
भगवत्-तत्त्व-रहस्य-प्रकाशिनि।
परम ज्योति परमात्मज्ञानकी।।आरति०।।

परमहंस-मुनि-मन-उल्लासिनि।
रसिक-हृदय रस-रास-विलासिनि।
भुक्ति-मुक्ति-रति-प्रेम-सुदासिनि।
कथा अकिंचन प्रिय सुजानकी।।आरति०।।

७. श्रीरामायनजी की आरती

आरति श्रीरामायनजी की कीरति कलित ललित सिय पी की।।
।।टेक।।

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद, बालमीक बिग्यान बिसारद।
सुक सनकादि सेष अरु सारद, बरनि पवनसुत कीरति नीकी।।
।।आरति०।।

गावत बेद पुरान अष्टदस, छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।
मुनि जन धन संतन को सरबस, सार अंस संमत सबही की।।
।।आरति०।।

गावत संतत संभु भवानी, अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी, कागभुसुंडि गरुड़ के ही की।।
।।आरति०।।

कलिमल-हरनि विषय रस फीकी, सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।
दलन रोग भव मूरि अमी की, तात मात सब बिधि तुलसी की।।
।।आरति०।।

श्री दुर्गाजी की आरती

जगजननी जय! जय!! जगजननी जय! जय!!
भयहारिणी, भवतारिणी, भवभामिनि जय जय।।टेक।।
तूं ही सत-चित्त सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर, पर-शिव सुर-भूपा।।१।। जग०
आदि अनादि अनामय अबिचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी।।२।। जग०
अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी।
कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर सँहारकारी।।३।। जग०
त्तूं विधि वधू, रमा, तूं उमा, महामाया।
मूल प्रकृति, विद्या तूं, तूं जननी जाया।।४।। जग०
राम, कृष्ण तूं, सीता, व्रजरानी राधा।
तूं वांछाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा।।५।। जग०
दश विद्या, नव दुर्गा, नाना शस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव-रूप-धरा।।६।। जग०
तूं परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तूं।
तूं ही कैलाश विहारिणि, ताण्डव-लासिनि तूं।।७।। जग०
सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तूं शोभाधारा।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी, धारा।।८।। जग०
तूं ही स्नेहसुधामयि, तूं अति गरलमना।
रत्नविभूषित तूं ही, तूं ही स्वर्ण तना।।९।। जग०
मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तूं वरदे।।१०।। जग०

शक्ति शक्तिधर तूं ही नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी।।११।। जग०
हम अति दीन दुखी माँ! विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।।१२।। जग०
निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै।।१३।। जग०

मुक्ति प्राप्त करने का साधन

चौरासी लाख योनियों में परिभ्रमण करता हुआ जीवात्मा भगवत्कृपा से मनुष्य-योनि को प्राप्त करता है। मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। यद्यपि मानव-शरीर अनित्य और मृत्युग्रस्त है तथापि इससे परम पुरुषार्थ की प्राप्ति हो सकती है। इसलिए यह अत्यन्त दुर्लभ मानव-शरीर पाकर मोक्षप्राप्ति के लिए प्रयत्न कर लेना चाहिए। मानव-जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति ही है; विषय-भोग नहीं। विषय-भोग तो सभी योनियों में प्राप्त है, जो कि मनुष्य के लिए सर्वथा त्याज्य है। समस्त योनियों में "मनुष्य-योनि" श्रेष्ठ कही गयी है। श्रेष्ठ होने का कारण यह कि इसी योनि के द्वारा 'मोक्ष' की प्राप्ति की जा सकती है, अन्य योनियों के द्वारा नहीं की जा सकती। मनुष्य के लिए मोक्ष की प्राप्ति बहुत ही श्रेष्ठ है, मोक्ष-प्राप्ति होने के अनन्तर मनुष्य सदा के लिए जन्म और मृत्यु के चक्कर से मुक्त हो जाता है। अतः मनुष्य को मोक्ष-प्राप्ति के लिए विशेष प्रयत्न करना चाहिए। दुःख का विषय है कि जिस मोक्ष-प्राप्ति से मनुष्य बारंबार जीवन-मरण के चक्कर से छूट जाता है, उस मोक्ष के लिए वह प्रयत्न ही नहीं करता। मोक्षप्राप्ति के लिए भगवन्नाम ही श्रेष्ठ सहज साधन है,

जिसके द्वारा मनुष्य मोक्षप्राप्ति कर सकता है। मुख की यथार्थ शोभा और अपना यथार्थ उपयोग भगवन्नाम का उच्चारण करने में ही है। जो मनुष्य अपने मुख से भगवन्नाम का उच्चारण नहीं करता, उसका मुख निरर्थक है।

इसलिए मनुष्य को अपने मुख को सार्थक करने के लिए सर्वदा भगवन्नाम का उच्चारण करना चाहिए। भगवान् ने जो मनुष्य को जिह्वा दी है, वह खासकर भगवन्नाम के लिए ही है। अतः जो मनुष्य भगवान् की दी हुई जिह्वा के द्वारा भगवन्नामोच्चारण करता है वह अवश्य ही मोक्ष की सीढ़ियों पर आरूढ़ हो सकता है। जो मनुष्य भगवान की दी हुई जिह्वा के द्वारा भगवन्नामोच्चारण नहीं करता, वह मोक्ष की सीढ़ियों पर आरूढ़ नहीं हो सकता। कहा भी है–

जिह्वां लब्ध्वापि यो विष्णुं कीर्तनीयं न कीर्तयेत्।
लब्ध्वापि मोक्षनिःश्रेणिं सनारोहति दुर्मतिः।।

अर्थ– जो मनुष्य जिह्वा प्राप्त करके कीर्तनीय भगवान् शिव एवं विष्णु का कीर्तन (उच्चारण) नहीं करता, वह कुत्सित बुद्धि वाला मनुष्य मोक्ष की सीढ़ियों को पाकर भी उस पर चढ़ने में असमर्थ रहता है। अतः मनुष्य को अपनी जिह्वा द्वारा भगवन्नामोच्चरण कर मोक्ष की सीढ़ियों पर आरूढ़ होना चाहिए। अलौकिक सुख भोग में ही आसक्त रहता है, ऐसे मनुष्य की तुलना उस व्यक्ति से की गयी है, जो अज्ञानतावश पुनः अकस्मात् नीचे गिर जाता है। ऐसे मनुष्य के लिए ही श्रीवेदव्यासजी ने कहा है–

तमारूढाच्युतं विदुः। (श्रीमद्भा०११/७/७४)

अर्थ– बुद्धिमान् मनुष्य को संसार-चक्र से छुटकारा पाने के लिए मोक्ष-प्राप्त्यर्थ सदा प्रयत्न करना चाहिए। मोक्षप्राप्ति के लिए भगवन्नाम से बढ़कर और कोई सुलभ साधन नहीं है। इसलिए मनुष्य

को मोक्षप्राप्ति के लिए सर्वदा भगवन्नाम का उच्चारण करते रहना चाहिए। भगवन्नाम का उच्चारम वही मनुष्य कर सकता है, जिसका भगवान् में श्रद्धा और विश्वास हो। श्रद्धा और विश्वास के बिना मनुष्य भगवन्नाम का उच्चारण नहीं कर सकता। अतः भगवन्नाम के उच्चारणार्थ मनुष्य को भगवान के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखना चाहिए। आज के युग में मनुष्य वैसे ही अल्प शक्ति, अल्पप्राण और श्रद्धाहीन हो गया है। वह कठिन प्रायश्चित कर सकेगा? ठीक-ठीक प्रायश्चित बतलाने वाले कठिनाई से मिलते हैं। बतलाने वाला मिल जाय तो उसके बताये हुए उपाय पर श्रद्धा होनी कठिन है और श्रद्धा हो भी गयी तो क्या आज उतने कष्ट उठा पाने की क्षमता सामान्य व्यक्ति में है? ऐसी दशा में आज का मनुष्य क्या करे? इस युग के लिए पाप-परिमार्जन का, सबके लिए सब पापों का परिमार्जन का सुगम साधन शास्त्र ने पहले ही सुनिश्चित कर दिया है-

सर्वेषामत्यधवनानिदमेव सुनिष्कृतम्।
नाम व्याहरणं विष्णोर्यतस्तद्विषयामति।।

(श्रीमद्भा० ६/२/१०)

अर्थ- सब प्रकार के पापों के कर्ता पापियों के लिए केवल यही समुचित प्रायश्चित है कि वे भगवान् शिव एवं नारायण के नाम का उच्चारण, जप, संकीर्तन करें, जिससे भगवान् में बुद्धि लगे। भगवन्नाम सब पापों का सुनिश्चित एवं सर्वसम्मत प्रायश्चित है। यह सर्वत्र, सब समय, सबके लिए सुगम है। अतः नाम का आश्रय लेन योग्य है।

मानस पूजा

देवपूजा के आराधना में संसाधनों की सुचितापूर्ण उपलब्धता निश्चित होनी चाहिए, सब कुछ भगवान का दिया है। भगवान को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। आराधना तो भक्त के भावानुसार

ही स्फुटित होती है। अतः ऋषियों ने देवार्पण हेतु दिव्य वस्तु को अपने आराध्य को समर्पित करने का मार्गदर्शन किया। याचक भक्त अपनी कल्पना से ही अपने ईश्वर को मुक्तामणि से मण्डित करता है। कल्पवृक्ष के फुल, पुष्प, हिमजल, नैवेद्यादि को समर्पण कर सम्पूर्ण आराधना की क्रियाशैली की कल्पना में मूर्त्तरूप प्रदान करता है। इसे पुराणों में मानस पूजा के नाम से कहा गया है। जिसकी संक्षिप्त विधि नीचे लिखे मंत्रों के माध्यम से समर्पण हेतु कही गई है।

१. ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।

हे प्रभो! मैं पृथ्वीरूप गंध (चन्दनादि) आपको समर्पित करता हूँ।

२. ॐ हं आकाशत्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।

हे प्रभो! मैं आकाशरूप पुष्प आपको समर्पित करता हूँ।

३. ॐ यं वास्वात्पकं धूपं परिकल्पयामि।

हे प्रभो! मैं वायुदेवरूपी धूप आपको समर्पित करता हूँ।

४. ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि।

हे प्रभो! मैं अग्निदेव के रूप में दीपक समर्पित करता हूँ।

५. ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्य निवेदयामि।

हे प्रभो! मैं अमृत के समान नैवेदय आपको भेंट करता हूँ।

६. ॐ सं सर्वोपचारं समर्पयामि।

हे प्रभो! मैं समस्त सांसारिक उपकरण आपकी आराधना हेतु समर्पित कर रहा हूँ।

यह मानस पूजा अपने इष्टदेव के प्रति सरस एवं सरल भाव से होनी चाहिए। भावना ही इसमें मुख्य है। यही सरस-सहज भाव हनुमान जी द्वारा हृदय फाड़ने पर श्रीराम पंचायतन के रूप में दर्शित

होते हैं। यह पूजा समस्त पंच देवों के प्रति समान रूप से की जा सकती है।

मानस पूजा मनुष्य को अन्तर्मुखी साधनों से सम्पन्न करती है। मनुष्य का ईश्वर के प्रति विश्वास सुदृढ़ होता है। जिसका प्रभाव उनके निजी जीवन में पूर्ण संकल्पों को स्थायित्व प्रदान करता है। उसका अपने ईष्ट के साथ एक ऐसा तादात्म्य बैठ जाता है कि उसका समग्र संसार हस्तामलक जैसा प्रतीत होता है।

मण्डूकमत्स्याः कृमयोऽपि काश्यां,
त्यक्त्वा शरीरं शिवमाप्नुवन्ति।।

(स्कन्दपुराणे, काशीखण्डे)

अर्थ– पृथ्वी के सभी तीर्थ मुक्तिक्षेत्र केवल काशी को प्राप्त कराते हैं, पृथ्वी काशी को पाकर प्राणी मुक्त हो जाते हैं अर्थात् अन्य करोड़ों तीर्थों से बड़ी यह काशीपुरी है। कीट, पतंग, मच्छर, वृक्ष, जलचर, थलचर आदि सभी प्राणी यहाँ अपना शरीर छोड़कर कल्याण मोक्ष पद को प्राप्त होते हैं। मत्स्य पुराण, लिङ्गपुराण और काशी खण्ड में भी ऐसा ही वर्णन है।

स्थिरा काश्यामिहैवैका प्रतिज्ञा हि मया कृता।
अत्रैव मृतमात्राणां तिरश्चामपि देहिनाम्।।
भक्तानामप्यभक्तानांपुण्यपापात्मनामपि।
मुक्तिं दास्यामि सर्वेषां भक्तानामेव सा बहिः।।

(पद्मपुराण त्रि. पृष्ठ २१३)

शिवजी कहते हैं कि मैंने यह दृढ़ प्रतिज्ञा की है कि काशी में मरने वाले सभी मनुष्य, पशु, कीट, पतंग आदि को, चाहे वे भक्त हों या पुण्यात्मा हों या पापी, सभी को अवश्य मुक्ति दूँगा। काशी से बाहर मरने वाले उन्हीं मनुष्यों को मुक्ति दूँगा जो मेरे अनन्य भक्त हैं।

तावत् पापानि जृम्भन्ते नानाजन्मार्जितान्यापि।
यावत् काशीं न हृत्संस्था पुनर्भावविघातिनी।।

(काशीखण्ड, अ. ५० श्लो. १२७)

अर्थ—अनेक जन्मों के अर्जित पाप तब तक गरजते हैं जब तक भवविनाशिनी काशी का दर्शन नहीं होता, काशी के दर्शन होते ही सभी पाप शान्त हो जाते हैं।

शिव मंदिर दर्शन महिमा

शिवार्चनं सदाकार्यं भुक्ति-मुक्तिप्रदं नृभिः।
प्रदक्षिणानमस्कारौ सर्वाभीष्टप्रदावुभौ।।
पूजा तैश्च सदा कार्या भोग मोक्षार्थिभिर्नरः।।

(सतनत्कुमार संहिता)

अर्थ- शिव जी की पूजा प्रयत्नपूर्वक सदा सब कार्य छोड़कर करनी चाहिए। संसार के भोग्य पदार्थों की प्राप्ति हेतु मुक्ति प्राप्ति के निमित्त शिवजी की पूजा करें। शिव मंदिरों में पूजा करने के पश्चात् नमस्कार करके परिक्रमा करने से शिव जी सब मनोरथ पूर्ण करते हैं।

चन्द्रायणसमप्रोक्तं शंभोनैवेद्य भक्षणम्।
ब्रह्महत्या सुचिर्भूत्वा निर्माल्यं यस्तु धारयेत्।।
भक्षयित्वा द्रुतं तस्यसर्वं पापं प्रणश्यति।।

(शिव पुराण)

अर्थ- शिवलिङ्ग और शिव मन्दिरों में चढ़ा हुआ नैवेद्य खाने वाले व्यक्ति को चन्द्रायण व्रत करने का फल के समान कहा गया है। चाहे जो कोई मनुष्य ब्रह्म हत्यारा ही क्यों नो, यदि वह पवित्र

होकर शिव निर्माल्य को शरीर में धारण करता और शिव नैवेद्य खाता है, तो तुरन्त उन नर-नारियों के सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

परोपकाराय सतां विभूतयः

वेदव्यासजी स्कन्द पुराण में लिखते हैं-

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयं।
परोपकारः पुण्याय: पापाय परपीडनम्।।

भगवान् वादरायण ने १८ पुराणों में मूल सूत्र के रूप में दो ही बातें कहीं- परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है और दूसरो को कष्ट देने से बढ़कर कोई पाप नहीं।

काशी-दर्शन का फल

काशीदर्शनमात्रेण निष्पापो जायते जनः।
एकेन रेणुना काश्याः शुद्धयन्ति मलिनो जनाः।।

अर्थ- काशी के दर्शन करने मात्र से मनुष्य निष्पाप हो जाता है क्योंकि काशी की मिट्टी के एक कण से मलिन बुद्धि वाले जन भी शुद्ध हो जाते हैं। काशी रहस्य, काशी माहात्म्य में भी यह प्रसङ्ग मिलता है।

तावत् पापानि जृम्भन्ते नानाजन्मार्जितान्यपि।
यावत् काशी न हृत्संस्था पुनभवविघातिनी।।
(काशीखण्ड, अ ५० श्लो० १२७)

अर्थ- अनेक जन्मों के अर्जित पाप तब तक गरजते हैं जब तक भवविनाशिनी काशी का दर्शन नहीं होता, काशी के दर्शन होते ही सभी पाप शान्त हो जाते हैं।

वाराणसीः करुणामय दिव्य-मूर्तिरुत्सृज्य यत्र तु तनुं तनुभृत्सुखेन।

—काशी खण्ड

इस संसार में वाराणसी साक्षात करुणामयी अलौकिक मूर्ति है क्योंकि यहाँ पर प्राणीमात्र सुखपूर्वक देह त्याग कर उसी समय विश्वेश्वर की ज्ञानरूप ज्योति में प्रवेश करके तद्रूप कैवल्य पद को धारण कर लेता है।

जातो मृतो बहुषु तीर्थवरेषु रे त्वं
जन्तोर्न जातु तव शान्तिरभून्निमज्ज्य।
वाराणसीसी निगदतीह मृतोऽमृतत्वं
प्राप्याऽधुना मम बलात्स्मरशासनस्य।।

मध्ये पुराण

वाराणसी यह कहा करती है कि रे प्राणियों तुम संसार में अनेक बार उत्पन्न हुए और बहुत से तीर्थों में नहाकर मृत्यु के अधीन हुए परन्तु कभी भी तुमको सुख शान्ति नहीं मिली। (अस्तु) यदि तुम मेरे बल से मृत हो सको तो अमृत्व लाभ करके महादेव हो जाओ।

वाराणसीं स्मरहर प्रिय राजधानीं
त्यक्त्वा कुतो व्रजसि मूढ़ दिगन्तरेषु।।
प्राप्याप्यजाद्यसुलभां स्थिरमोक्षलक्ष्मीं
लक्ष्मीं स्वभाव चपलां किमु कामयेथाः।।
विद्याधनानि सदनानि गजाश्वभृत्याः
स्त्रकचन्दनानि वनिताश्च नितान्तरम्याः।।

—स्कन्द पुराणे काशी खण्डे

स्वार्गोऽप्यगम्य इह नोद्यमभाजि पुंसि
वाराणसी त्वसुलभा शलभादिमुक्तिः।।

—पदम पुराण

रे मूढ़ (नर) भगवान स्मरहर की प्रियतमा राजधानी वाराणसी को छोड़कर किन दिग दिगन्तरों में घूम रहा है? ब्रह्मादि देवताओं से भी दुर्लभ स्थिर मोक्ष लक्ष्मी को पाकर भी चपल स्वभावा लक्ष्मी की कामना क्यों वृथा करता है। इस संसार में उद्यमशील मनुष्य को विद्या, धन, जन, भवन, गज, अश्व, सेवक, माल्य, चन्दन, नितान्त रमणीय रमणियाँ एवं स्वर्ग अलभ्य नहीं है, परन्तु कीट पतंगों को भी मुक्ति देने वाली केवल वाराणसी ही अलभ्य है।

वाराणस्याः परं स्थानं न भूतो न भविष्यति।
यत्र नारायणो देवो महादेवो दिवीश्वरः।।

–बापू पुराण

वाराणसी से बढ़कर कोई स्थान न हुआ न होगा। जहाँ नारायण और महादेव दोनों निवास करते हैं।

परमपावनी वाराणसी पुरी में निवास करने वाले प्राणियों के विषय में भगवान शंकर कहते हैं कि सृष्टि के आरम्भ काल से लेकर जीवन के जितने जन्म होते हैं उनमें मेरा भजन करने से थोड़ा-थोड़ा पुण्य इकट्ठा होता जाता है। यदि कोई वाराणसी में आकर बस गया और उसका शरीर यहीं छूटे तो समझना चाहिए कि यह सब मेरे भजन के प्रभाव से उत्पन्न होने वाले पुण्य का ही फल है। वाराणसी समग्र शरणागतों को आश्रय प्रदान करती है। वाराणसी में निवास करते समय यह सभी लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति कराती है तथा अन्तकाल में तारकोपदेश से मुक्ति दिलाती है।

माता पित्रा परित्यक्त ये त्यक्त निजबन्धुभिः।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।।

जरया परिभूता ये ये व्याधि विकलीकृताः।
येषा क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।।
पदे पदे समाक्रान्ता ये विपद्भिरहर्निशम्।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।।
पापराशिभिराक्रान्ता ये दारिद्र्य पराजिताः।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।।
संसारभयभीता ये ये बद्धाः कर्मबन्धनैः।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।।
श्रुति स्मृतिविहीना ये शौचाचार विवर्जिताः।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।।
ये च योगपरिभ्रष्टास्तपोदान-विवर्जिताः।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।।

—काशी रहस्य

जो माता-पिता और भाई-बन्धुओं से परित्यक्त है जिनका कोई आश्रय नहीं है उनके लिए वाराणसी आश्रय है। जो व्यक्ति जरा वृद्धावस्था से पीड़ित है तथा जो व्यक्ति रोग से विकल किये गये हैं जिनका कोई आश्रय नहीं है उनका एकमात्र आश्रय वाराणसी है। जो व्यक्ति पद-पद पर विपत्तियों से रातदिन (चिन्तामग्न) और दुःख-संकट से घिरे हुए हैं, आक्रान्त हैं, जिनका कोई सहारा नहीं है ऐसे दुःखी व्यक्तियों को वाराणसी ही धर्म, अर्थ काम, मोक्ष प्रदान करती है। जो श्रुति स्मृति से विहीन एवं शौचाचार से रहित है तथा जो योग से भ्रष्ट एवं तप, दान आदि से रहित हैं, जिनका कोई आश्रय नहीं है ऐसे व्यक्तियों का एकमात्र आश्रय वाराणसी ही है।

स्तुति-प्रकरण

श्रीसङ्कटनाशम् गणेशस्तोत्रम

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनयकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये।।१।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।।२।।
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्ण तथाष्टामम।।३।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।।४।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो।।५।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्।।६।।
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।।७।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।८।।

।। श्री नारदपुराणे सङ्कष्टनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्

हरिः ॐ ।। नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव

सर्वं खल्विदं ब्राह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव धातारम्। अवानूचा मव शिष्यम। अव पश्चात्तात। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तत्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वामानन्द-मयंस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्व जगदिदं त्वत्तासि तष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्व जगदिदं त्वयि प्रत्येति त्वं भूमिरापोडन लोइनिलां नभः। सर्वं जगदिदं वाक्यपदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधार-स्थितिऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रास्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्तं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वार्णदिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्।।१।। तारेण रूद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वस्पम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वार-श्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपति-देंवता। ॐ गम्। (गणपतये नमः।) एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुश-धारिणम्। अभयं वरदं हस्तैर्ब्रिभ्राणं मूषकध्वजम्।। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्ग रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।आविर्भूतं च सृष्टयादौ प्रकृतैः पुरुषात्परम्।।एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।। सर्वशिरो योऽधीते सब्रह्माभूयाय कल्पते। पञ्चमहापातकोपतातकात् प्रमु सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति प्रातरधीयानो रात्रि पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जतिनोऽपापो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय

न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यायित स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यग्रहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वां जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद।। ॐ भाद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः।।

।।इति श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्।।

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।
प्रालेयाचलवंशपावनकारी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षांदेहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी।।१।।

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
हेमाम्बराडम्बरी मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी।
काश्मीरागरूवासिताङ्गरुचिरे काशीपुराधीश्वरी।।भिक्षां देहि०।।२।।

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्माथनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी।
सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी।।भिक्षां देहि०।।३।।

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकारबीजाक्षरी।
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी।।भिक्षां देहि०।।४।।

दृश्यदृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी।
श्रीविश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी।।भिक्षां देहि०।।५।।

उर्वीसर्वजनेश्वरीभगवती मातान्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी।
सर्वानदकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी।।भिक्षां देहि०।।६।।

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी।
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी।।भिक्षां देहि०।।७।।

देवी सर्वविचित्ररत्नचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामं स्वादु पयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्ववरी।
भक्ताभीष्टकरीसदाशुभकरी काशीपुराधीध्वरी।।भिक्षां देहि०।।८।।

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुन्तलधरी चन्द्रांकवर्णेश्वरी।
मालापुस्तकपाशसाकुंशधरी काशीपुराधीश्वरी।। भिक्षां देहि०।।९।।

क्षत्रत्राणकरी महाऽभवकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरश्रींधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी।। भिक्षां देहि०।।१०।।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।११।।

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्।।१२।।

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्रजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ अन्नापूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

श्रीकनकधारास्तोत्रम्

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलभारणं तमालम्।
अङ्गीकृताशिलविभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः।।१।।
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशय सागर सम्भवायाः।।२।।
विश्वामरेन्द्रपदविभ्रदानदक्षमानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निर्षीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः।।३।।
आमीलिताक्षधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम्।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः।।४।।
वाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु से कमलालयायाः।।५।।
कालाम्वुदालिलालितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।।६।।
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थमीक्षणार्ध मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः।।७।।
दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मघर्मभपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः।।८।।
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृपीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः।।९।।
गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै।।१०।।
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यैसोऽस्तु शतपत्रनिकेतायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै।।११।।
नमोऽस्तु लीकनिभाननायै नामोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभुत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै।।१२।।
सम्पत्कराणिसकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदातानविभवानि सरोरूहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मानिशं कलयन्तु मान्ये।।१३।।
यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
संतनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीभजे।।१४।।

सरसिजनिलये सराजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभं।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।१५।।
दिग्घस्तिभिःकनककुम्भमुखवसृष्टस्वर्वाहिनी विमलचारूजलप्लुताङ्गिम।
प्रतर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिना थगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्।।१६।।
कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करूणापुरतङ्गितैरपाङ्गै।
अवलोकय मामकिञ्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः।।१७।।
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिनरमूभिरन्वहं त्रयीमयां त्रिभुवनामातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरूतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते मुवि बुधभाविताशयाः।।१८।।
।। श्रीभगवत्पादशंकरविरचितं कनकधरास्तोत्रं सम्पूर्णम।।

नोटः- इसके श्रद्धा-विश्वासपूर्वक अनुष्ठान से ऋणमुक्ति और लक्ष्मी-प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि आचार्य श्रीशंकर ने इसका पाठ करके स्वर्णवर्षा करायी थी।

२३-श्रीभगवतीस्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे, जय पापविनाशिनि नहुफलदे।
जय शुम्भनिशुम्भकपालधरे, प्रणामामि तु देवि नरार्तिहरे।।१।।
जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावकभूषितवक्त्रवरे।
जय भैवरदेहनिलीनपरे, जप अन्धकदैत्यविशोषकरे।।२।।
जय महिषविमर्दिनि शूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे।
जय देवि पितामहविष्णुनते, जय भास्करशक्रशिरोऽवनते।।३।
जय षण्मुखसायुधईशनुते, जय सागरगामिनि शम्भुनुते।
जय दुःखदरिद्रविनाशकरे, जय पुत्रकलत्रविवृद्धिकरे।।४।।
जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिनि दुःखहरे।
जय व्याधिविनाशिनि मोक्ष करे, जय वाञ्छितदायिनि सिद्धिवरे।।५।।

एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा।।६।।

इति व्यासकृतं श्रीभगवतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

कृष्णाष्टकम्

श्रीयाश्लिष्टो विष्णुः स्थिरचरवपुर्वेदविषयो
धियां साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताब्जनयनः।
गदी शङ्खीचक्री विमलवनमाली स्थिररुचिः
शरण्यो लाकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः।।१।।

यतः सर्वं जातं वियदनिलमुख्यं जगदिदं
स्थितौ निःशेषं योऽवति निजसुखांशेन मधुहा।
लये सर्वं स्वस्मिन् हरति कलया यस्तु स विभुः।।
।।शरण्यो।।२।।

असुनायम्यादौ यमनियममुख्यैः सुकरणै -
र्निरुध्येदं चित्तं हृदि विमलमानीय सकलम्।
यमीड्यं पश्यन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ।।
।।शरण्यो।।३।।

पृथिव्यां तिष्ठन् यो यमयति मही वेद न धरा
यमित्यादौ वेदो वदति जगतामीशममलम्।
नियन्तारं ध्येयं मुनिसुरनृणा मोक्षदमसौ।।
।।शरण्यो।।४।।

महेन्द्रादिर्देवो जपति दितिजान्यस्य बलतो
न कस्य स्वातन्त्र्यं क्वचिदपि कृतौ यत्कृतिमृते।
कवित्वादेर्गर्वं परिहरति योऽसौ विजयिनः।।
।।शरण्यो।।५।।

विना यस्य ध्यानं व्रजति पशुतां सूकरमुखां
विना यस्य ज्ञानं जनिमृतिभयं याति जनता।
विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभुः।।
।।शरण्यो।।६।।

नरातङ्कोत्तङ्कः शरणशरणो भ्रान्तिहरणो
घनश्यामः कामो व्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसखः।
स्वयम्भूर्भूतानां जनक उचिताचारसुखदः।।
।।शरण्यो।।७।।

यदा धर्मग्लानिर्भवति जगतां क्षोभकरणी
तदा लोकस्वामी प्रकटितवपुः सेतुधृगजः।
सतां धाता स्वच्छो निगमगणगीतो व्रजपतिः।।
।।शरण्यो।।८।।

इति हरिरखिलात्माराधितः शङ्करेण
श्रुतिविशदगुणोऽसौ मातृमोक्षार्थमाद्यः।
यतिवरनिकटे श्रीयुक्त आविर्बभूव
स्वगुणवृत उदारः शङ्खचक्राब्जहस्तः।।९।।
।।श्रीमच्छंकराचार्यकृतं कृष्णाष्टकं सम्पूर्णम्।।

द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महकालमोङ्कारममलेश्वरम्।।१।।
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारूकावने।।२।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये।।३।।

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति।।४।।

मधुरांष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।१।।
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलित मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।२।।
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादो मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।३।।
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।४।।
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।५।।
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।६।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्
दुष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।७।।
गोपा मधुरा गावो मधुरं यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।८।।

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।

ललितापञ्चकम्

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दं
विम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं
मन्दस्मितं मृगमदोज्जवलभालदेशम्।।१।।

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं
रक्ताङ्गुलीयलसदङ्गुलिपल्लवाढ्याम्।
मणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानां
पुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीदधानाम्।।२।।

प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्।
पद्मासनादिसुरनायकपूजनीयं
पद्माङ्कुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम् ।।३।।

प्रातः स्तुवे पराशिवांललितां भवानीं
त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम्।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभुतां
विद्येश्वरीं निगमवाङ्मनसातिदुराम्।।४।।

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति।
श्रीशम्भवीति जगतां जननी परेति
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति।।५।।

यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
विद्यां श्रियं विमलसौख्यमनन्तकीर्तिम्।।६।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं ललितापञ्चकं सम्पूर्णम्।

श्रीसत्यनारायणाष्टकम्

आदिदेवं जगत्कारणं श्रीधरं लोकनाथं विभुं व्यापकं शङ्करम्।
सर्वभक्तेष्टदं मुक्तिदं माधवं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे।।१।।
सर्वदा लोककल्याणपारायणं देवगोविप्ररक्षार्थसद्विग्रहम्
दीनहीनात्मभक्ताश्रयं सुन्दरं सत्यं।।२।।
दक्षिणे यस्य गङ्गा शुभा शोभते राजते सा रमा यस्य वामे सदा।
यः प्रसन्नाननो भाति भव्यश्च तं सत्य०।।३।।
सङ्कटे सङ्गरे यं जनः सर्वदा स्वात्मभीनाशनाय स्मरेतु पीड़ितः।
पूर्णकृत्यो भवेद् यत्प्रसादाच्च तं सत्यं।।४।।
वाञ्छितं दुर्लभं यो ददाति प्रभु साधवे स्वात्मभक्ताय भक्तिप्रिय।
सर्वभूताश्रयं तं हि विश्वम्भरं सत्यं०।।५।।
ब्राह्मणः साधुवैश्यश्च तङ्गंध्वजो येऽभवन् विश्रुता यस्य भक्त्यामराः
लीलया यस्य विश्वं ततं तं विभुं सत्य।।६।।
येन चाब्रह्मबालतृणं धार्यते सृज्यते पाल्यते सर्वमेतज्जगत्।
भक्तभावप्रियं श्रीदयासागरं सत्य०।।७।।
सर्वकामप्रदं सर्वदा सत्प्रियं वन्दिनं देववृन्दैर्मुनीन्द्रार्चितम्।
सर्वकामप्रदं सर्वदा सत्प्रिय वन्दिनं देववृन्दैनीन्द्रार्चितम्।
पुत्रपौत्रादिसर्वेष्टदं शाश्वतं सत्यं।।८।।
अष्टकं सत्यदेवस्य भक्त्या नरः भावयुक्तो मुदा यस्त्रिसन्ध्यं पठेत्।
तस्य नश्यान्ति पापानी तेनाग्निना इन्धनानीव शुष्काणि सर्वाणि वै।।९।।
श्रीसत्यनाराणाष्टकं सम्पूर्णम्।।

श्री कालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनङ्घ्रिपङ्कजं व्यालयज्ञसुत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।१।।
भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
कालकालमम्बुजाक्षमशूलमक्षरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।२।।

शुलटकङ्पाशदण्डपाणिमादिकारणं श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।
भीमविक्रमं प्रभुविचित्रताण्डवप्रियं काशिकापुरराधिनाथकालभैरवं भजे।।३।।
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारूविग्रहं भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमाकिङ्कणीमसत्कटिं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।४।।
धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णशेपपाशशोभिताङ्गमण्डलं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।५।।
रत्नपादुकाप्रभभिरामपादयुग्मकं नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञजनम्।
मृत्युदर्पनाशनं करालद्रंष्ट्रमोक्षणं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।६।।
अट्टाहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं दृषिपातनष्टपापजालमुग्रशसनम्।
अष्ठसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।७।।
भूतसंघनायकंविशालकीर्तिदायकं काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।८।।
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यर्धनम्।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसंनिधिं ध्रुवम।९।।
।।श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्।।

श्रीनवग्रहसतोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।१।।
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभुषणम्।।२।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गल प्रणमाम्यहम्।।३।।
प्रियगूङ्कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बधुम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणामाम्यहम्।।४।।
देवानां च ऋषीणां च गुरूं काञचनसंनिभम्।
बुद्धिभुतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।५।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।६।।
नीलाञ्जानसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्वरम्।।७।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।८।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं ते केतुं प्रणमाम्यहम्।।९।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेतु सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।१०।।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।११।।

।। महर्षिव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम ।।

६३- श्रीसूर्यमण्डलाष्टकम्

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुते जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरञ्चिनारायणशङ्करात्मने।।१।।
यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्।
दारिद्र्यदुःखक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।२।।
यन्मण्डलंदेवगणैः सुपूजितंविप्रैःस्तुतं भावनमुक्तिकोविदम् ।
तं देवदेवं प्रणमामि सूर्यं पूनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।३।।
यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्।
समस्ततेजोमयदिव्यरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।४।।
यन्मण्डलं गुढमतिप्रबोधं धर्मस्य वृद्धिं कुरूते जनानाम्।
यत्सर्वपापक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।५।।

यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं यदृग्यजु:सामसु संप्रगीतम्।
प्रकाशितं येन च भूभुर्वः स्वः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।६।।
यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारणसिद्धसंघाः।
यद्योगिनो योगजुषां च संघाः पूनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।७।।
यन्मण्डलं सर्वजनेषु पुजितं ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।८।।
यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धमुत्पत्तिरक्षाप्रलयप्रगल्भम्।
यस्मिञ्जगत्संहरतेऽखिलञ्च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।९।।
यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोरात्मा परं धाम विशुद्धतत्त्वम्।
शुक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।१०।।
यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारणसिद्धसंघाः।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।११।।
यन्मण्डलं वेदविदोपगीतं यद्योगिनां योगपथानुगम्यम्।
तत्सर्ववेदं प्रणमासि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।१२।।

मंगलाष्टमिदं पुण्यं यः पठेत्सततं नरः।
सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्यलोके महीयते।।१३।।

इति श्रीमदादित्यहृदये मण्डलाष्टकं सम्पूर्णम्।

●

श्रीगङ्गाष्टकम्

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारवलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्में शरीरव्ययः।।१।।
त्वत्तीरे तरूकोटरान्तर्गतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः।

नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टघण्टारण-
त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भुपतिः ।।२।।
उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः।
न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भुमिपालः।।३।।
काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं
स्त्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम्।
दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः।।४।।
अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
र्मदनमथनमौलेर्मालतीपुष्पमाला
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु।।५।।
एतत्तालतमालसालसरलव्यालोलवल्लीलता-
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दुकुन्दोज्ज्वलम्।
गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधुतुङ्गस्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जल निर्मलम्।।६।।
गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ।।७।।
पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचरि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि।।८।।
गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः

प्रक्षाल्य गात्रकलिकल्मषपङ्कमाशु
मोक्षं लभेत्पतति नैव नरो भवाब्धौ।।९।।
।।श्रीमहर्षिवाल्मीकिविरचितं गङ्गाष्टक सम्पूर्णम्।।

गणेशपचंरत्नम्

मुदा करात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकं
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरञ्जकम्
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्।।१।।
नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम्।।२।।
समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुजरं
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम्।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं
नमस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम्।।३।।
अकिंचनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं
पुरारिपुर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्।
प्रपचंनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणं
कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम्।।४।।
नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मज
मचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम्।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां
तमेकदन्तमेव वं विचिन्तयामि संततम्।।५।।

महागणेशपचंरत्नमादरेण योऽन्वहं
प्रागायति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्।।६।।

।।श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं गणेशपंचरत्नस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

गुर्वष्टकम् स्तोत्रम्

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं
यशश्चारूचित्रं धनं मेरूतुल्यम्।
गुरोरंघ्रिपद्मं मनश्चेन्न लग्नं ततः कि
ततः कि ततः कि ततः किम्।।१।।
कलत्रं धनं पुत्र-पौत्रादि-सर्व
गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम्।
गुरोरंघ्रिपद्मं मनश्चेन्न लग्नं ततः कि
ततः कि ततः कि ततः किम्।।२।।
षढङ्गदिवेदो मुखे शस्त्राविद्या
कवित्वादि गद्यं सुपद्य करोति।
गुरोरंघ्रिपद्यंम मनश्चेन्न लग्नंततः कि
ततः कि ततः कि ततः किम्।।३।।
विदेशेष मान्यः स्वदेशेषु धन्यः
सदाचारवृतेषु भक्तो न चाऽन्यः।
ततः कि ततः कि ततः किम्।।४।।
क्षममण्डले भूपभूपालवृन्दैः
सदासेवितयस्य पादारविन्दम्।

गुरोरंघ्रिपद्मंमेमनश्चेन्न लग्नं ततः कि
ततः कि ततः कि ततः किम।५।।
यशो मे गतं दिक्षुदानप्रतापा
ज्जगद्वस्तुसर्वंकरे यत् प्रासादात्।
गुरोरंघ्रिपद्मंम मनश्चेन्न लग्नं ततः कि
ततः कि ततः कि ततः किम्।।६।।
न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ
न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम।
गुरोरंघ्रिपद्मंम मनश्चेन्न लग्नं तत; कि
ततः कि ततः कि ततः किम्।।७।।
अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये
द देहे मनो यर्तते मे त्वनर्घ्ये।
गुरोरंघ्रिपद्मंम मनश्चेन्न लग्नं ततः किम्।।८।।
अनर्घ्याणि रत्नानि भुक्तानि सम्यक्
समालिङ्गता कामिनी यामिनीषु।
गुरोरष्टक यः पठेत् पुण्यदेही
तत; कि ततः कि ततः किम्।।९।।
यतीर्भुवतिर्ब्रह्मचारी च गेही
गुरोरष्टक यः पठेत् पुण्यदेही।
लभेत वाञ्छितार्थ पदं ब्रह्मसंज्ञं
गुरारूक्तावाक्यो मनो यस्य लग्नम्।।१०।।

इति श्रीमच्छकराचार्यविरचितं गुर्वष्टकं सम्पूर्णम्।

●

गौरीशाष्टकम्

भज गौरीशं भजं गौरीशं गौरीशं भज मन्दमते। (ध्रुवपदम्)
जलभवदुस्तरजलधिसुतरणं ध्येयं चित्ते शिवहरचरणम्।।
अन्योपायं न हि न हि सत्यं गेयं शङ्कर शङ्कर नित्यम्।भज०।।१।।
दारापत्यं क्षेत्रं वित्तं देहं गेहं सर्वमनित्यम्।
इति परिभावय सर्वमसारं गर्भविकृत्या स्वप्नविचारम्।भज०।।२।।
मलवैचित्र्ये पुनरावृत्तिः पुनरपि जननीजठरोत्पत्तिः।
पुनरप्याशाकुलितं जठरं किं नहि मुञ्चसि कथयेश्चित्तम्।भज०।।३।।
मायाकल्पितमैन्द्रं जालं न हि तत्सत्यं दृष्टिविकारम्।
ज्ञाते तत्त्वे सर्वमसारं मा कुरु मा कुरु विषयविचारम् भज०।।४।।
रज्जौ सर्पभ्रमणारोपस्तद्वद्ब्रह्मणि जगदारोपः।
मिथ्यामायामोहविकारं मनसि विचारय बारम्बारम्। भज०।।५।।
अध्वरकोटीगङ्गागमनं कुरुते योगं चेन्द्रियदमनम्।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन न भवति मुक्तो जन्मशतेन। भज०।।६।।
सोऽहं हंसो ब्रह्मैवाहं शुद्धानन्दस्तत्त्वपरोऽहम्।
अद्वैतोऽहं सङ्गविहीने चेन्द्रिय आत्मनि निखिले लीने। भज०।।७।।

शङ्करकिङ्कर मा कूरू चिन्तां
चिन्तामणिना पिरचितमेतत्।
यः सद्भक्त्या पठति हि नित्यं
ब्रह्मणि लीनो भवति हि सत्यम्। भज०।।८।।

इति श्रीचिन्तामणिविरचितं गौरीशाष्टकं सम्पूर्णम्।

काशीपञ्चकम्

मनोवृत्तिः परमापशान्ति सा तीर्थवर्या मणिकर्णिका च।
ज्ञानप्रवाहा विमलादिगङ्गा काशीकाऽहं निजबोधरूपा।।१।।

यस्यामिदं कल्पितमिन्द्रजालं
चराचरं भाति मानोविलासम्।
सच्चित्सुखैका परमात्मरूपा
सा काशिकाऽहं निजबोधरूपा।।२।।

कोशेषु पञ्चस्वधिराजमाना
बुद्धिर्भवानी प्रदिदेगेहम्।
साक्षी शिवः सर्वगतोऽन्तरात्मा
सा काशिकाऽहं निजबोधारूपा।।३।।

काश्यां हि काशते काशी
काशी सर्वप्रकाशिका।
सा काशी विदिता येन
तेन प्राप्ता हि काशिका।।४।।

काशी क्षेत्रं शरीर त्रिभुवनजननी व्यापिनी ज्ञानगङ्गा
भक्तिः श्रद्धा गयेयं निजगुरूचरणध्यानयोगः प्रयागः।
विश्वेशोऽयं तुरीय सकलजनमनः साक्षिभुतोऽन्तरात्मा
देहे सर्वं मदीये यदि वसति पुनस्तीर्थमन्यम्किमस्ति।।५।।

(इति आदिशंकराचार्य कृतं काशीपञ्चकम्)

श्रीशिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभुषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दाम्।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धुपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्।।१।।
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रूचिकर कर्पुरखण्डोज्जवलं
ताम्बुलं मनसा मया विरचितं भक्तया प्रभो स्वीकुरू।।२।।
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टङ्गं प्रणातिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं त्व विभो पुजा गृहाण प्रभो।।३।।
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचरा प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते पिषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयो प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वांगिरो
यद्यत्कर्म करामि तत्तदखिलं शम्भो तवराधनम्।।४।।
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करूणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।५।।

।।इति श्रीमच्छकङराचार्यविरचिता शिवमानसपूजा समाप्त।।

श्री विन्ध्येश्वरीस्तोत्रम्

निशुम्भमर्दिनी प्रचण्डमुण्डखण्डनीम्।।
तने रणेप्रकाशिनी भजामि विन्ध्यवासिनीम्।।१।।
त्रिशूलमुण्डधारिणी धराविघातहारिणीम्।
गृहे गृहे निवासिनी भजामि निन्ध्यवासिनीम्।।२।।
दरिद्रदुःखहारिणी सतां विभूतिकारिणीम्।
वियोगशोकहारिणी भजमि विन्धयवासिनीम्।।३।।
लसत्सुलोललोचनीं सदा सदा सरप्रदाम्।
कपालशुलधारिणी भजामि विन्ध्यवासिनीम्।।४।।
करे मुदा गदाधारी शिवां शिवप्रदायिनीम्।
वरां वरनानां शुभां भजामि विन्ध्यवासिनीम्।।५।।
ऋषीन्द्रजैमिनिप्रदां त्रिधास्यरूपधारिणीम्।
जले स्थले निवासिनी भजामि विन्ध्यवासिनीम्।।६।।
विशिष्टसृष्टिकारिणी विशालरूपधारिणीम्।
महोदरे विशलिनी भजामि विन्ध्यवासिनीम्।।७।।
पुरन्दरादिसेवितां मुरादिवंशखण्डनीम्।
विशुद्धशुद्धकारिणी भजामि विन्ध्यवासिनीम्।। ८।।

महालक्ष्म्यष्टकम्

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।१।।
नमस्ते गरूडारूढे कोलासुरभयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।२।।

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।३।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।४।।
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।५।।
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे।
महपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।६।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।७।।
श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।८।।
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा।।९।।
एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः।।१०।।
त्रिकाल यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा।।११।।

इतीन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम्

श्रीहनुमत्स्तोत्रम्

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

हनुमानञजनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः
रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः।
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशकः।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा।।
द्वदशैतानि नामानि प्रतरूत्थाय यः पठेत्।
नाशुभं जायते तस्य सर्वसम्पत्प्रजायते।।

चाक्षुषेपनिषदं (चाक्षुषी विद्या)

विनियोग--ऊँ अस्याश्चक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छनदः सूर्यो देवता चक्षुरागनिवृत्तये विनियोगः।

ऊँ चक्षुः, चक्षुः तेजः स्थिारों भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शन। यथा अहम अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरू कुरू। यानि मम पूर्वजन्मापार्जितानि चक्षुः पतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय।

ऊँ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ऊँ नमः करूणकरायामृताय। ऊँ नमः सूर्याय। ऊँ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मां सगदमय। तमसो मा ज्यातिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान शुचिरप्रतिरूपः।

य इमां चक्षुष्मतीविद्यां ब्राहम्णो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राहम्णान् सम्यग् ग्रहायित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ऊँ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहावाहिनी स्वाहा।

।।श्रीकृष्णायजुर्वेदीया चाक्षुषी विद्या सम्पूर्णा।।

काशी से बाहर (सामान) जाने का विधान

जो व्यक्ति काशीवास कर रहे हों तथा किसी कारण वश काशी के बाहर जाना तो उनके लिए यह विधान है-

काशीवासियों को जहाँ तक हो सके काशी से बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि बहुत जरूरी हो तो निम्नांकित साधनों द्वारा जाकर तत्काल कार्य करके काशी आ जाना चाहिए। काशी से बाहर जाने के एक दिन पहले काशी की आज्ञा यात्रा करके आज्ञा लेकर बाहर जाने सब कार्य सिद्ध होते हैं।

प्रातः गंगा स्नान कर संध्या-तर्पण करने के पश्चात् अविमुक्तेश्वर ढुण्ढिराज साक्षी विनायक एवं अन्नपूर्णा और काशीविश्वनाथ भगवान का दर्शन पूजन कर आज्ञा लेने के पश्चात् नीचे लिखी सामग्री (चढ़ा हुआ प्रसाद) लेकर जाना चाहिए।

१. ढुण्ढिराज जी को चढ़ी हुई दूर्वा।
२. अन्नपूर्णा जी को चढ़ा हुआ सिन्दूर।
३. विश्वनाथ जी को चढ़ा हुआ बिल्वपत्र।
४. कालभैरव को चढ़ा हुआ भस्म जल।
५. जो अन्नपूर्णा जी में महाविष्णु जी हैं, उनको चढ़ा हुआ तुलसी दल साथ में लेकर जायँ और कार्य करके शीघ्र काशी आ जाना चाहिए। काशीवास करने वाले से देवता और पितर सब प्रसन्न होते हैं। पुत्र-पौत्र वं भक्तों को मोक्षदायिनी काशी में लाकर काशीवास करें करायें। काशी यात्रा करें। कहते हैं कि काशी कल्पवृक्ष है। इस लोक में धन, सम्पत्ति, सुख तथा शान्ति देती है। परलोक में कैवल्य मोक्ष प्राप्त कराती है। काशी तीनों लोकों से नारी है। काशी में तैंतीस कोटि देवता निवास करते हैं।

जीवन-परिचय

कर्मयोगी जीवन-मुक्त सन्त

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी का

पद्माकरं दिनकरो विकचं करोति।
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति
सन्तः स्वयं परिहितेषु कृताभियोगाः।।

– भर्तृहरि (नीति शतक, ७४)

अपनी मातृभूमि भारतवर्ष एक पुरातन राष्ट्र है। आदिकाल से ही इस भूमि पर एक सुसंस्कृत समाज रहता आया है। यहाँ की राष्ट्रीयता की विशेषता है: 'आध्यात्मिकता'।

"एक ही आध्यात्मिक ध्वनि से स्पन्दित होने वाला यह भारत राष्ट्र है"– ऐसा स्वामी विवेकानन्द (१८६३-१९०२) का स्पष्ट कथन है। भारतवर्ष एक धर्मप्राण राष्ट्र है। अपने ऋषि-मुनियों के विचार और आचार के कारण इसे एक विचित्र पुण्यभूमि माना गया है। ऐसे कई महापुरूषों का जन्म इस भारतभूमि में हुआ है। इसी कारण भारत को 'बहुरत्न प्रसवी भारत' कहते हैं। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक उच्चकोटि के चिन्तक महानुभावो के समान चिन्तन के कारण भारतवर्ष में भावनात्मक एकता प्रस्थापित हुई है। सम्पूर्ण भारत की धर्म-संस्कृति समान होकर भारत एक राष्ट्र बना। राजनैतिक दृष्टि से अन्यान्य प्रदेशों में अलग-अलग प्रकार की शासन व्यवस्था के होते हुए भी भारत सदियों से एक सांस्कृतिक एकता को जाग्रत एवं अक्षुण्ण रखने का श्रेय साधु-सन्तों, सन्यासियों आदि

आध्यात्मिक सत्पुरूषों को है। इन्हीं आध्यात्मिक सत्पुरूषों की मालिका में एक पुष्प हैं– अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मनिष्ठ काशीस्थ सिद्ध सन्त दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज।

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी बीसवीं शताब्दी के सुविख्यात सन्त धर्मसम्राट् दण्डी स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती स्वामी करपात्री जी महाराज (१९०२-१९८२) के कृपापात्र शिष्य हैं और आपने सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में युगांतकारी योगदान किया है। विशेषकर समस्त सनातन धर्मशास्त्रो का मंथनकर काशी जी के प्रामाणिक इतिहास और माहात्म्य को ढूँढ़ निकालने में आपके योगदान को सदैव याद रखा जाएगा।

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी का जन्म सन् १९३२ ई० में माघ शुक्ल बसन्त पंचमी, सरस्वती जन्मोत्सव के दिन प्रातः ७ बजे काशी के मणिकर्णिका घाट पर हुआ। ११ वें दिन रामप्रसाद कुल गुरु जिन्होंने नाम करण किया। शिवनारायण उपाध्याय नाम पड़ा। शिवनारायण जी के पिता जी अयोध्या हनुमानगढ़ी के रहने वाले थे। पिता जी का नाम भोला नाथ एवं माता जी का नाम उमादेवी था।

९ वर्ष की अवस्था में रामलीला में राम बनकर पाठ करते थे। सन् १९४० ई० में संस्कृत पाठशाला में संस्कृत पढ़ने के लिए प्रवेश किये। १० वर्ष की अवस्था में इनके पिताजी मर्णिकर्णिका घाट के पास ब्रह्मलीन हो गये, ११ वें दिन गौ, मकान, जमीन व सोना चाँदी आदि दान किये। शिवनारायन जी जब ११ वर्ष की अवस्था में आये तो कुश्ती के अखाड़ा में प्रवेश किये। कुश्ती, लाठी बन्दूक चलाना, गंगा में तैरना आदि शिक्षा प्राप्त किये।

सन् १९४८ ई० में अयोध्या के लक्ष्मण किला में अनन्त विभूषित करपात्री जी महाराज ने ब्रह्मचारी दीक्षा शिव नारायन जी को दिये। वहाँ इनका नाम शिव चैतन्य पड़ा। सन् १९४९ ई० में करपात्री जी महाराज ने योगानन्द जी को हरिद्वार में पत्र लिखकर (योगा) अष्टांग

योग की शिक्षा के लिए सन् १९४९ ई० में योगा आश्रम में गये। ६ माह में अष्टाङ्ग योग की शिक्षा प्राप्त करके घर आये।

सन् १९४८ ई० के आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया तिथि के दिन कुल गुरू एवं माता जी आदि को साथ लेकर काशी, गया आदि तीर्थ यात्रा में गये। २५ दिन में साधु-सन्त और तीर्थ में स्नान तर्पण, पिण्डदान करके सन् १९५० ई० के फाल्गुन पक्ष द्वितीया तिथि के दिन में उपसानेश्वर के मन्दिर में शिव नारायन जी की माता उमा देवी कीर्तन सबके साथ कर रही थी। कीर्तन करते हुए उसी जगह बेहोश होकर मृत हो गई। माता जी का देहान्त होने के पश्चात ११-१२ वे दिन गौं, मकान, जमीन व सोना चांदी आदि ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान दिये। शिवनारायन को बैराग्य हुआ।

वार्षिक श्राद्ध बर्सी करने के पश्चात् शिव चैतन्य जी को तीव्र बैराग्य उत्पन्न हुआ। अपना जमीन अपने कर्मचारियों को और गरीब वर्ग एवं अपने कुल पुरोहित आदि को (जमीन, मकान आदि) दान करके सन् १९५१ ई० बैशाख शुक्ल पक्ष अक्षय तृतीया तिथि के दिन अयोध्या में सर्व त्याग यज्ञ करके चल-अचल सब सम्पत्ति दान किये। और अपना वस्त्र सहित दान देकर मार्किन कपड़ा कटी वस्त्र लंगोटी और एक अचला को साथ में लेकर (सर्व त्याग यज्ञ करके) नंगे पाँव अयोध्या में गौ ब्राह्मण को आगे करके नागेश्वर के मन्दिर में दर्शन करने चले। हितैशी आंसू बहा रहे थे। नागेश्वर के दर्शन पूजन करके आज्ञा लेकर उत्तराखण्ड चले गये। गोरखपुर, नौतनवां, शिवपुर, नारायण गढ़ होते हुए देऊ घाट में राजगुरू देव बाबा के योगा आश्रम में पहुँचे। देव बाबा के चरणों में साष्टांग दण्डवत् किये देवबाबा बोले मैं बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहा था। सत्संग कथा के पश्चात् देवबाबा जी बोले कृष्ण गन्डकी नदी में स्नान करके पूरे शरीर में भस्म लगा करके आवो शिव चैतन्य ब्रह्मचारी। स्नान करके भस्म सब शरीर

में लगाकर गुरु जी के पास में गये। गुरु जी तख्त (चौकी) में बैठे थे नजदीक में बुला कर मूत्र इन्द्रियों को दाहिने हाथ से मसल कर बोले आप विश्व में जा कर कहीं भी रह करके भजन करें ब्रह्मात्मा साक्षात्कार करो। काम-वासना तुम्हें नहीं सतायेगी और अनेक उपदेश दिये।

योगा आश्रम छूमैना में रहकर जप, अनुष्ठान, पुरश्चरण एवं ईश्वर की प्राप्ति के लिए शिक्षा प्राप्त किये। उपासना, साधना और अराधना की शिक्षा प्राप्त किये। गुरु जी बोले मैं जहाँ पर रहकर तपस्या किया हूँ आप वहीं सिद्ध गुफाओं में जाकर गायत्री पुरश्चरण करो। राज गुरू जी को प्रणाम करके गुरू जी के आज्ञा पाकर देऊघाट से सिद्ध गुफा की ओर चले। गन्डकि नदी के किनारे से मुक्ति नाथ जी के दर्शन करके धौला गिरी पर्वत के नीचे सिद्ध गुफा में जा रहे थे। मनुष्यों के बलिदान देने वाले दो कपाली मिले, उन्होंने कहा हम सिद्ध गुफा में पहुँचा देंगे कहते हुए एक आगे और दूसरा पीछे होकर चले। रास्ते में एक गुफा में ले गये मन्दिर के दर्शन करवाने के नाम से वहाँ पहुँचने पर माला पहिनाये और भस्म लगाये उसी क्षण एक व्यक्ति ने गर्दन को काटने के लिए तलवार उठाया, उसी समय स्वामी जी के कालभैरव की आवाज लगाते ही उसके हाथ से तलवार व आरी जमीन पर गिर गया। अन्य तीन व्यक्तियों ने स्वामी जी से क्षमा माँगना प्रारम्भ किया। उसके पश्चात् एक वृद्ध व्यक्ति ने गुफा में पहुँचाया। जो कपाली बलिदान दे रहे थे वही बह्मचारी जी का सेवक बने। उस दिन से गुफा से मनुष्यों का बलिदान देना बन्द हो गया।

गुफा में पहुँचते ही एक चमत्कार हुआ, नेपाल और चीन की सीमा में धौलागिरी पर्वत के नीचे वन देवी देवता की आवाज हिन्दी में सुनाई पड़ी। शिव चैतन्य ब्रह्मचारी जी हमारा घर यहीं पर है, हम आपकी रक्षा, सुरक्षा और व्यवस्था करेंगे।

आवाज सुनते ही गुफा के बाहर एक पत्थर को सजाकर वन देवी व वन देवता का मन्दिर बनाकर आवाह्न किये। बाद में अग्नि जलाकर उस रात्रि को जप, कीर्तन करते हुए जागरण किये। सन् ९१५३ ई० बैशाख शुक्ल पक्ष अक्षय तृतीया के दिन प्रातः ब्रह्मगायत्री पुरश्चरण प्रारम्भ किये। प्रतिदिन ५ हजार ब्रह्म गायत्री महामन्त्र का जप करने लगे। ११ बजे प्रतिदिन जप पुरा करके तर्पण, मार्जन, हवन, कर और जंगल में कन्द मूल फल और फलहार बनाने के लिए बिच्छू घास के कमल पत्ते, चिउटा से तोड़ कर पतिला में डाल करके नेपाली भाषा में सिस्नों (बिच्छू घास) को कहते हैं। पकाने के पश्चात वह विच्छू घास हलुवा जैसा बनता है वही खाकर बह्मचारी जी ८ वर्ष तक जंगल में रहे। बिच्छू घास से बना हुआ हलुवा का प्रसाद पाते थे।

गुफा के सामने के पहाड़ में ४ रीच रहते थे जो गर्जते थे और जंगल के पास में चीर के पेड़ में और गुफा में रहते थे परन्तु यह लोग रक्षा करते थे। कोई भी जानवर, बंदर गुफा के पास आते देखकर काऊँ-काऊँ आवाज करते थे परन्तु कभी भी अहित नहीं किये।

ब्रह्मगायत्री के पुरश्चरण शुरू करने के सातवे दिन १० बजे चोर लाठी लेकर गुफा में आये। ब्रह्मचारी जी जप कर रहे थे। सामान पैसा कहा रखे हो देखो कहते हुए चारो तरफ देखकर चोर चले गये। शिव चैतन्य ब्रह्मचारी जी जप पूरा करके गायत्री माता से प्रार्थना किये कि ऐसे चोर आयेंगे तो मां ब्रह्मगायत्री पुरश्चरण में विघ्न होगा। माँ कृपा करो कहते हुए प्रार्थना किये। दूसरे दिन प्रातः काले दो सांप गुफा में जाकर परिक्रमा करके बाहर रास्ते में रहने लगे। बिच्छू घास पत्ते तोड़ने और कन्द मूल तोड़ने जाते थे। उस समय वह नाग (साप) आगे आगे चलते थे और नाग देवता ब्रह्मचारी जी की रक्षा करते थे।

चार ब्रह्मगायत्री पुरश्चरण पूर्ण कर हवन करते ही रात्रि को उस दिन इष्ट देव बोले आप काठमाण्डू में पशुपति नाथ जी के दर्शन करके शिवपुरी में जाकर रामछड़ाक्षरी मंत्र का पुरश्चरण करो। इष्ट देव के आज्ञा पाते ही स्नान संध्या पूजा करके सिद्ध गुफा और बन देवी, बन देवता से आज्ञा लेकर धोलागिरी पर्वत से चले पड़े। पोखरा होते हुए बूढ़ी गंडकी नदी के किनारे पहुँचे। यहाँ पर एक चमत्कार हुआ नदी के किनारे पहुँचते ही अंधेरा हो गया था, ब्रह्मचारी जी नदी के टीला के ऊपर चढ़कर जोर से आवाज लगाये कि हम पशुपति नाथ जी का दर्शन करने जा रहे हैं और तीर्थ यात्री हैं, रात्रि हो गयी है और आँख से रास्ता दिखाई नहीं पड़ता जोर से बोले तब नदी पार से आवाज आया नेपाली भाषा में आप वहीं रूकें हम आपको लेने आ रहे हैं सुनाई पड़ा। कहते हैं कि तभी एक मशाल दिखायी पड़ा। वह मशाल नदी के किनारे आकर दूर से ही बोला कि हमारे पीछे-पीछे आइये कहकर आगे-आगे प्रकाश लेकर चल रहा था पीछे-पीछे शिव चैतन्य ब्रह्मचारी जी चल रहे थे। नदी पार करके मशाल गाँव के पास में गया। गाँव के पास में पहुँचते ही वह मशालधारी प्रकाश सहित आम के पेड़ के ऊपर चढ़ गया। पेंड़ के ऊपर मशाल को जाते हुए केदार नाथ पाण्डे जी ने देखा वह ब्रह्मचारी जी को लेने के लिए आ गये। पाण्डे जी बोले यह भूत-प्रेत मार देता है आपको गाँव में पहुँचा दिया यह आश्चर्य है। आप हमारे यहाँ चलिए। उनके गोशाला में रात्रि में रहकर दूसरे प्रातः, स्नान, संध्या, तर्पण करके ब्रह्मचारी जी काठमांडू पशुपति नाथ जी के दर्शन करने पहुँचे। पशुपति नाथ जी के दर्शन करके बांसू की गुफा में रहकर साधु सन्त और तीर्थ मन्दिर के दर्शन करते हुए १५ दिन रहकर बासू की गुफा से बागमति के सिर पर गोमुख के ऊपर शिवपुरी में जाकर कुटिया में मन्त्र का सन् १९७०ई० में ज्येष्ठ शुक्ल दशमी तिथि गंगा दशहरा के दिन राम छड़ाक्षरी मन्त्रका पुरश्चरण जप अनुष्ठान करने लगे। पुरश्चरण पूर्ण

करके सन् १९७१ ई० के आश्विन शुक्ल पक्ष विजय दशमी के दिन प्रातः मन्दिर वनदेवी एवं वनदेव से आज्ञा लेकर कुटिया को प्रणाम करके इष्टदेव की आज्ञानुसार तीर्थ मन्दिर सन्त महात्माओं के दर्शन करते हुए काठमाण्डू से गोरखपुर के गीता वाटिका में सन्त राधा स्वामी और हनुमान प्रसाद जिनके सान्निध्य में १५ दिन रह करके सत्संग प्राप्त करके हरिद्वार के कनखल में आनन्द मणि आश्रम में आनन्द मणि देवी के सान्निध्य में रहकर सत्संग एवं भक्ति प्राप्त करके बद्री नारायन, विष्णु भगवान का दर्शन करके भृगु गुफा में जाकर सन् १९७१ ई० के मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष भैरवाष्टमी तिथि के दिन प्रातः ९ बजे 'नमो भगवते वासुदेवाय'। विष्णु महामन्त्र का पुरश्चरण प्रारम्भ किये और पुरश्चरण पूर्ण करके सन् १९७२ ई० को भारत और नेपाल के तीर्थ यात्रा प्रारम्भ किये। आषाढ़ मास शुक्ल पक्ष पूर्णिमा के दिन प्रातः ९ बजे पुरश्चरण पूर्ण करके गौरीकुण्ड होते हुए केदार नाथ जी दर्शन करके बगल के कुटिया में सन् १९७४ के बैशाख शुक्ल पक्ष अक्षय तृतीया के दिन प्रातः ८ बजे नमः शिवाय महामन्त्र का पुरश्चरण प्रारम्भ किये। पुरश्चरण पूर्ण करके केदारनाथ से गौरी कुंड होते हुए बद्री नारायन जी का पुनः दर्शन करके भृग गुफा पहुँचे।

भृगु गुफा में रहकर पुनः विष्णु महामन्त्र का जप सन् १९७६ ई० के आषाढ़ शुक्ल पक्ष गुरू पूर्णिमा के दिन पुरश्चरण प्रारम्भ किये जिस दिन पुरश्चरण पूर्ण हुआ उसी दिन रात्रि के स्वप्न में काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करके काल भैरव के दर्शन कर रहे थे वही पर इष्ट देव बैठे हुए थे। आप कहाँ हैं कशी आकर काशी वास करिये, सुनते ही स्वप्न से जगे। प्रातः बद्री नरायन भगवान का दर्शन कर आज्ञा लेकर सन् १९७९ ई० के माघ शुक्ल द्वितीया तिथि के दिन स्नान संध्या तर्पण करके महेश्वर मन्दिर के बगल में बैठकर ॐ नमः शिवाय महामंत्र का जप कर रहे थे। रात्रि ११ बजे एक ५ वर्ष की कन्या मालपुआ, खीर पत्तल में ब्रह्मचारी जी के आगे रखकर

संस्कृत भाषा में बोली प्रसाद खाओ ज्ञान होगा कहकर अदृश्य हो गयी। प्रसाद पाते ही वेदान्त का ज्ञान होने लगा और वे आनन्द में डूब गये। दूसरे दिन प्रातः स्नान संध्या तर्पण कर हवन कर रहे थे उसी समय एक जटाधारी महात्मा आ गये। ब्रह्मचारी जी आपको काशी का दर्शन कराऊंगा चलो कहते ही साथ में चल दिये। नौका में गंगा जी के बीचो-बीच पहुँचने के पश्चात महात्मा जी बोले कि पश्चिम की तरफ मुँह करके काशी का दर्शन करो। पश्चिम की तरफ देखा प्रकाश में सोना जैसा प्रकाश ५ मिनट तक दर्शन हुआ। उसके पश्चात् दर्शन कराने वाले जटाधारी महात्मा अदृश्य हो गये। दर्शन के पश्चात् काशी विश्वनाथ जी के दर्शन करके दण्डी स्वामी, श्री हरिहरानन्द सरस्वती करपात्री जी के दर्शन करने के लिए केदार घाट के करपात्री मठ में गये। करपात्री जी महाराज को साष्टांग दण्डवत करते ही गुरु जी बोले आज ही संन्यास लेने का मुहूर्त्त है। राम चैतन्य ब्रह्मचारी जी से श्री जोखन राम अग्निहोत्री जी को बुलाकर लाने को कहे और दर्शन, पूजन करके ज्ञानवापी संन्यास यज्ञ प्रारम्भ हुआ। जोखन राम एवं बलराम पाण्डे विद्वान् के द्वारा संन्यास महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

सन् १९७९ ई० की माघ शुक्ल पक्ष बसन्त पंचमी तिथि के दिन ११ बजे संन्यास की दीक्षा प्राप्त हुई। अनन्त श्री विभूषित धर्म सम्राट हरिहरानन्द सरस्वती जी संन्यास दिये। दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती नाम पड़ा।

जीवन परिचय, गुरुकृपा और शक्तिपात-

सन् १९८१ ई० में फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन प्रातः ९ बजे स्वामी श्री हरिहरानन्द सरस्वती (करपात्रीजी महाराज) जी की पूजा करके रुद्राभिषेक करने के पश्चात् दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी उन्हें साष्टाङ्ग दण्डवत् किये। इसके बाद करपात्री जी महाराज उनकी ओर देखकर बोले- आज से जीवन पर्यन्त काशीवास

करो, काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा, अन्तर्गृही आदि यात्रा करो। आजीवन काशी-गौरव एवं काशी की महिमा, काशी माहात्म्य और काशी दर्शन लिखो। स्वामी शिवानन्द सरस्वती बोले– मैं अनपढ़ हूँ, हस्ताक्षर करने नहीं आता है। करपात्री जी महाराज बोले– आपको सब विद्या आ जायेगी, कहते हुए नजदीक में बुलाकर अपना दाहिना हाथ स्वामीजी के सिर पर रखे। स्वामी जी पर उसी क्षण गुरुजी ने शक्तिपात करा दी। उसी समय से स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी को वेद, वेदान्त एवं धर्मशास्त्र के मन्त्र और श्लोक देखते ही उनके अर्थ समझ में आने लगे। शिव प्रसाद उपाध्याय जी (कुलपति) बोले कि मैंने वेद और धर्मशास्त्र में शक्तिपात का वर्णन पढ़ा और सुना था, पर आज यह चमत्कार प्रत्यक्ष देखने को मिला, क्योंकि मैं वहीं पर बगल में बैठ कर देख रहा था।

सन् १९७९ ई० के महाशिवरात्रि के दिन एक बजे केदार घाट में बैठक करके काशी प्रदक्षिणा दर्शन, पूजन यात्रा नामक समिति बनायी और स्वयं अध्यक्ष बने। उस दिन केदारेश्वर के दर्शन करके केदारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा प्रारम्भ किये। 'हरहर महादेव शम्भो, काशी विश्वनाथ गंगे' कीर्तन करते हुए। प्रत्येक मन्दिर का दर्शन-पूजन करते हुए चलें। अनेक अधिकारीगण और काशी के विद्वान् केदारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा कर रहे थे। दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी सन् १९७९ ई० से २५-१०-२०१० तक अन्तर्गृही पञ्चक्रोशी आदि यात्रा यात्रियों को कराते हैं और स्वयं करते हैं। गुरु जी की आज्ञा से काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करते हैं और काशी के अन्तर्गृही, पञ्चक्रोशी आदि यात्रा यात्रियों को कराते हैं। ८० वर्ष की अवस्था में भी यात्रा दर्शनार्थियों को कराते हैं और स्वयं करते हैं। गुरु जी की आज्ञा से काशीवास करते हुए दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी इष्ट देव की आज्ञा से तत्कालीन जिलाधीश नितिन रमेश गोकर्ण जी से अनुमति लेकर काशी की वृहत् चौरासी कोश की यात्रा

और दि० १५-०२-२०१० ई० को काशी के बांस फाटक फूल मण्डी, ज्ञानवापी, विश्वनाथ आदि विशेश्वर मन्दिर से प्रातः ९ बजे काशी की चौरासी कोश परिक्रमा यात्रा दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी अपने दण्डी स्वामी, ब्रह्मचारी, विद्यार्थी और भक्तों को साथ में लेकर प्रत्येक पड़ाव में रुकते हुए प्रतिवर्ष १२वें दिन काशी विश्वनाथ जी का दर्शन कर यात्रा पूर्ण किए।

सन् १९७९ से आज २५-१०-२०१० तक काशी की चौरासी कोश परिक्रमा यात्रा एवं माघ में प्रयागराज स्नान दर्शन मेला क्षेत्र में पण्डाल लगता है और काशी में पञ्चक्रोशी अन्तर्गृही आदि काशी की सम्पूर्ण यात्रा परिक्रमा दर्शन, पूजन यात्रा अखण्ड चल रही है।

इस तरह दण्डी स्वामी शिवानन्द जी महाराज के द्वारा अनेक चमत्कारिक कार्य किये गये हैं। आज भी अनेक चमत्कारिक कार्य कर रहे हैं।

–शिवप्रसाद उपाध्याय (कुलपति)

भिक्षुकाः नहि याचन्ते बोधयन्ति दिने-दिने।
दातव्यमिति दातव्यं अदत्तेमादृशी गतिः।।

अर्थ– कोई भिक्षुक आपके पास माँगने आता है तो आप को बोध कराता है माँगता नहीं, यदि आप उसको नहीं देते तो कहता है कि देखो, हम नहीं दिये हैं इसलिए मैं माँग रहा हूँ। यदि आप नहीं देंगे तो आप की भी यही गति होगी। ये कहकर चला जाता है।

●

अनन्त श्रीविभूषित अभिनव शङ्कर ब्रह्मलीन सिद्धसन्त धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज की पुस्तकें

१. वेदार्थ परिजात
२. गोपी गीत
३. भ्रमर गीत
४. पूंजीवाद
५. विचार-पीयूष
६. रामायण मीमांशा
७. श्री राधा सुधा
८. भक्ति-सुधा
९. शंका-सुधा
१०. बदलती दुनिया
११. तिथ्यादी-निर्णय
१२. कुम्भ निर्णय
१३. वेदान्त-प्रश्नोत्तरी
१४. प्रवचन-पीयूष
१५. दश-नामापराध
१६. भक्ति रसार्णव
१७. मार्क्सवाद और रामराज्य
१८. राहुल जी की भ्रान्ति
१९. मार्क्स और ईश्वर
२०. रास और प्रयोजन
२१. अभिनव करपात्री
२२. श्री करपात्री संस्मरण
२३. करपात्री एक अध्ययन
२४. श्री विद्या रतनाकर
२५. श्री विद्या वरिवस्या
२६. वेदस्वरूप विमर्श
२७. वेद प्रमाण्य मीमांशा
२८. सर्व सिद्धान्त समन्वय
९. नास्ति-अस्तिवाद
३०. प्रवचन संग्रह
३१. गीता के हुकुमनामा
३२. आदर्श विचार
३३. वेद का स्वरूप और प्रामाण्य
३४. अहमर्थ और परमार्थ सागर
३५. संकीर्तन मीमांशा और वर्णाश्रम
३६. धर्म-संघर्ष और शान्ति
३७. समाजवाद और रामराज्य
३८. क्या संभोग से समाधि?
३९. अभिनव शंकर स्वामी करपात्री
४०. विश्वराष्ट्र और संस्कृति
४१. विदेश यात्रा और शास्त्रीय पक्ष
४२. रामायण महाभारत काल-मीमांशा
४३. गीता जयन्ती और मीज्मो-क्रान्ति
४४. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू धर्म
४५. वेदान्त रससागर और विभीषण शरणागति
४६. सनातन संविधान एवं राजनीति में अधिकार
४७. शुक्ल युजर्वेद संस्कृति हिन्दी टीका
४८. करपात्र चिन्तन

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी के करकमलों द्वारा रचित पुस्तकों के नाम निम्न हैं-

हिमालय प्रेस में छपी पुस्तकों का नाम- १. काशी की महिमा, २. काशी मोक्ष निर्णय, ३. काशी का इतिहास, ४. वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा, ५. पञ्चक्रोशी यात्रा, ६. काशी दर्शन, ७. काश्यां मरणान्मुक्ति, ८. सिद्ध सन्तों का चमत्कार, ९. काशी में सिद्ध शिवलिङ्गों का चमत्कार, १०. काशी में सोमवार से रविवार तक के वार यात्रा, ११. काशी का लघु माहात्म्य, १२. काशी की वार्षिक यात्रा, १३. राम नाम की महिमा, १४. एक दिव्य जीवन दर्शन, १५. काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा माहात्म्य, १६. काशी में प्रत्येक तिथि के दिन एक वर्ष तक नेम से दर्शन यात्रा महात्म्य, १७. धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के यज्ञ का चमत्कार और जीवन दर्शन, १८. संन्यास ग्रहण पद्धति - यह सभी पुस्तक हिमालय प्रेस में छपे हैं, काशी माहात्म्य-श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रकाशित हुआ है। १९. काशी गौरव, २०. वाराणसी माहात्म्य, २१. काशी दिव्य दर्शन, २२. काशी का माहात्म्य, २३. कामधेनु कलि काशी पञ्चक्रोशी माहात्म्य, २४. लोलार्क कुण्ड दर्शन स्नान महिमा, २५. काशी खण्डोक्त काशी दर्शन, २६. काशी की चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा दर्शन पूजन माहात्म्य-काबरा आफसेट्स, २७. काशी वैभव २८. काशी दर्शन, -काबरा आफसेट्स, रवीन्द्रपुरी कालोनी है।

शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें- २९. काशी रहस्य भाषा टीका हिन्दी, ३०. शिवरहस्य हिन्दी भाषा टीका, ३१. स्वामी शिवानन्द सरस्वती का जीवन दर्शन।

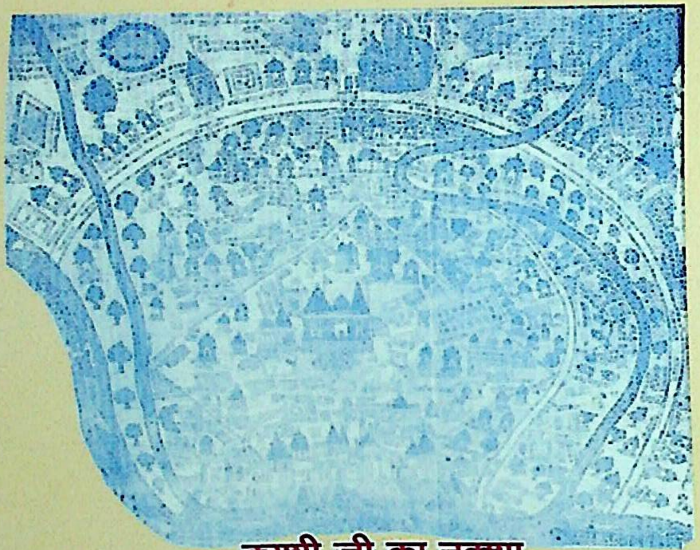
दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी की रचित पुस्तकों का प्राप्ति स्थान-

१. धर्म संघ, दुर्गाकुण्ड २. करपात्री धाम मठ, केदारघाट, ३. काशी विश्वेश्वर (व्यक्तिगत) मन्दिर, मीरघाट, चौखम्बा संस्कृत भवन, एवं संकटा प्रसाद, कचौड़ीगली, चौक आदि में प्राप्त होंगे।

शान्त्याशीर्वादः

ॐ सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यंकरवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषवहै।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु

•



काशी जी का नक्शा
एवं पञ्चक्रोशी यात्रा

सङ्कटनाशनगणेशस्तोत्रम्

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ॥
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये ॥१॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ॥
तृतीय कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ॥
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ॥
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम ॥४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ॥
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो ॥५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६॥
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ॥
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥७॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ॥
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८॥

इति श्रीनारदपुराणे सङ्कटनाशनगणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्